भजन पुष्पांजलि

गुरू के उपकारों की कलियाँ चुन-चुन सुन्दर हार बनाए।
निज की सारी भक्ति संजोकर गुरू के चरणों में पहनाए।।

भजन क्रम

अ

१.	अनमोल तेरा जीवन	१
२.	अजब हैरान हूँ भगवन	२
३.	अमर आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ	३
४.	अपना रूप पहचान रे मन	४
५.	अन्दर सत गुरां दा डेरा	५
६.	अन्दर के पट खोल बावरे	६
७.	अलख धाम की है तू धारा	७
८.	अर्जुन से बोले इक राज मोहन मदन	८
९.	अब सौंप दिया इस जीवन का	१०
१०.	अपने पिया की मैं तो बनी रे	११
११.	अरे सतयुग आया कलियुग में	१२
१२.	अरे लोभी तुम तो फंस गये माया जाल में	१४
१३.	अपनी कृपा जो आप करे	१५
१४.	अजीब दास्तां है ये	१७
१५.	अपनी हस्ती जो तेरे कदमों में	१८
१६.	अभी तो जगाया	१९
१७.	अरे अब क्या आई दिवाली	२०
१८.	अरे दुनिया वालों	२१
१९.	अन्त समय में हे जगदीश मुझको	२२
२०.	अंग संग हमारे राम है	२३
२१.	अब किसी महफिल में	२४

आ

२२. आतम का दीदार कर मन २५
२३. आस्था ही नहीं फल कहाँ से मिले २६
२४. आके मेरी सखियों २७
२५. आत्मा में सदा रहता परमात्मा २८
२६. आनंद स्रोत वह रहा ३०
२७. आतम के साज पर ३१
२८. आया जो तेरे दर पे ३२
२९. आता है इस जहां में ३३
३०. आया था किस काम को ३४
३१. आतस रस के पीने वाले ३५
३२. आवाज देके प्रभु न बुलाओ ३६
३३. आप क्या मिले मुझे ३७
३४. आज खुले भाग्य हमारे ३८
३५. आ चल के तुझे मैं लेके चलूँ ३९
३६. आखों में तेरा ध्यान ४०
३७. आया अवतार आया ४१
३८. आसरा इस जहाँ का ४२
३९. आया है-३ पतित पावन भगवान ४३

इ

४०. इतरा न जिन्दगी पर ४४
४१. इन्साफ का मंदिर है ४५
४२. इक बार भजन कर ले ४६
४३. इस मैं-मेरी नूँ मार ४७
४४. इक ज्ञान का नग्मा है ४८

४५. इस दुनिया में कोई नहीं ४९
४६. इस जीवन में मिला ५१
४७. इस देही का होता नाश है ५२
४८. इतना गुरू से प्यार बढ़े कि ५३
४९. इस माटी में सुन मेहरबान ५४
५०. ईश्वर की भक्ति को ५५
५१. इस दुनिया में कोई नहीं ५६
५२. इस भव सागर में केवल ५७
५३. इश्क तेरा ही रहे ५८

उ

५४. उमर का पंछी उड़ता जाता ५९
५५. उपर गगन विशाल ६०
५६. उलझा मत दिल बहारों में ६१
५७. उसने मन को जीता है ६२
५८. उसी रंग में रहना रे ६३
५९. उनको जग में डर काहे का ६४

ए

६०. एक राम के दो रूप मिले ६५
६१. ऐ मेरे प्यारे गुरु ६६
६२. ऐसी करी गुरूदेव दया ६७
६३. एक घड़ी आधी घड़ी ६८
६४. एक बार भजन कर ले मुक्ति ७०
६५. ऐ गुरू ऐ गुरू ७१
६६. ऐ दादा यही मांगे हम ७२

क्रम सं.		पृष्ठ सं.
६७.	ऐसी निगाह बना दे	७३
६८.	एक झोली में फूल भरे हैं	७४
	ओ	
६९.	ओ मेरे सतगुरू	७५
७०.	ओ मस्तों की महफिल में आके	७६
७१.	ओम् है जीवन हमारा	७७
७२.	ॐ ही शक्ति ॐ अमृत है	७८
७३.	ओ मन्दिर जाने वाले	७९
७४.	ओ मनवा सतगुरू के घर	८०
७५.	ओ मनवा छिप-छिप कर	८१
७६.	ओ सतगुरू प्यारे ने	८२
७७.	ओ कैसे न छलके प्यार	८३
७८.	और नहीं कुछ तुमसे कहना	८४
	क	
७९.	कबीरा बिगड़ गयो रे-२	८५
८०.	क्यों जी कहते हो	८६
८१.	कई जन्मों से बुला रहा है	८७
८२.	किया मैंने संतो से व्यापार	८८
८३.	कितने ऊँचे भाग्य हमारे	८९
८४.	किसी नाल राग नहीं	९०
८५.	किसी के काम जो आवे	९१
८६.	किये जा राम का सुमिरण	९२
८७.	कड़वे बोल न बोल जी	९३
८८.	कुछ गिनती की स्वांसे हैं	९४

क्रम सं.		पृष्ठ सं.
८९.	कुछ ऐसी करनी कर प्यारे	९५
९०.	कुछ भी न माँगू मैं भगवान	९६
९१.	कुछ न बिगड़ेगा तेरा	९८
९२.	कुछ ऐसे सद्‌गुरू होते हैं	९९
९३.	कर अपना कल्याण	१००
९४.	कोई जब राह न पाए	१०१
९५.	कौन कहता है कि	१०२
९६.	कलयुग विच तेरा अवतार	१०३
९७.	कहें किससे सुनायें	१०४
९८.	कबीरा तेरी कोठरी	१०५
९९.	करो न शिकायत	१०६
१००.	कर बंदे विश्वास रे	१०७
१०१.	कन्हैया को एक रोज रोकर पुकारा	१०८
१०२.	क्यों दिल को फंसाये तू	१०९
१०३.	कर्ता के हाथ हजार	११०
१०४.	कैसे झूमें न हम दिलोजान से	१११
	ख	
१०५.	खोना कभी नहीं खोना	११२
१०६.	खुद को जो मिटाया तूने	११३
१०७.	खुश-खुश बैठे हो जरूर कोई	११४
१०८.	खुशी दो जहाँ की मिलेगी यहीं से	११५
	ग	
१०९.	गाये जा गाये जा गुरु शुक्रना गाये जा	११६
११०.	गुरू तेरा दामन ना छोड़ेंगे हम	११७
१११.	गुरूदेव मेरा दाता हमको	११८

क्रम सं.		पृष्ठ सं.
११२.	गुरू ऐसो जिया में समाय गयो रे	११६
११३.	गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णु	१२०
११४.	गुरू मांगेगा हिसाब मन तो बताइये	१२१
११५.	गुरू ने अपना बना के मुझको	१२२
११६.	गुरू तो मेरा प्यारा प्यारा	१२३
११७.	गुरू का साथ है इतना प्यारा	१२४
११८.	गुरू बिना चैन कहाँ रे	१२५
	गुरू ब्रह्मज्ञान वाले तीर मार	१२६
७३.	भजन मैं सतगुरू का भजन	१२७
७४.	ओ मन तेरी कुर्बानी कैसे भुलाएं	१२९
७५.	ओ लगन	१३०
	बोल मन गुरू बोल रे	१३१
१२४.	गाता भगवान ने हम भक्तों का	१३२
१२५.	गुरू की प्रीत ही कुछ ऐसी है	१३३
१२६.	गुरू के प्रेम बिना दुनिया में	१३४
१२७.	गुरू के उपकारों की कलियां	१३५
१२८.	गुरू से मैंने पाया क्या-क्या	१३६
१२९.	गीता भगवन् की प्रेम कहानी	१३७
१३०.	गुरू के पास आना	१३८
१३१.	गुरू चरणां विच बैठ	१३९
१३२.	गुरू मेरी पूजा, गुरू गोविन्दा	१४१
१३३.	गुरू वचनों को रखना संभाल के	१४२
१३४.	गुरू तेरा प्यार है ऐसे	१४३
१३५.	गुरू के समान नहीं दूसरा जहान में	१४४
१३६.	गुरूदेव के सद्ज्ञान ने	१४५
१३७.	गुरू चरणों में गुरूमुख बनके	१४६

क्रम सं.		पृष्ठ सं.
१३८.	गुरूदेव से निराला कोई	१४७
१३९.	गीता भगवन् तेरे वचनों पे चलकर	१४८
१४०.	गुरू की किरपा जिसपे हो जाये	१४९
	घ	
१४१.	घूंघट के पट खोल रे	१५०
१४२.	घट में बसे भगवान	१५१
१४३.	घर आए मेरे सतगुरू जी	१५२
	च	१०४
		१०५
१४४.	चदरिया झीनी रे झीनी	
१४५.	चाहे सुख दे चाहे दुख दे	
१४६.	चरणों में तेरे रहकर भगवान	
१४७.	चिन्ताएं छोड़ो सारी	१५७
१४८.	चाहे हार हो चाहे जीत हो	१५८
	छ	
१४९.	छोड़कर संसार जब तू जायेगा	१५९
१५०.	छूकर मेरे मन को किया तूने	१६०
	ज	
१५१.	जाग रे मुसाफिर तू	१६१
१५२.	जीवन में आई बहार गुरू	१६२
१५३.	जिसने गुरू वचनों को निभाया	१६३
१५४.	जो सुख देता है वो सुख देता है	१६४
१५५.	जिसके हृदय में हरि सुमरण होगा	१६५
१५६.	जब-जब भी तुझे पुकारा	१६६

१५७. जीवन की डोर अब तो १६७
१५८. जीवन की घड़िया वृथा न खो १६८
१५९. जो सिदक नहीं है पूरा दिल में १६९
१६०. जो भी समझाओगे हमें बतलाओगे १७०
१६१. जो दीसे सो तू नाही १७१
१६२. जो तू है सो मैं हूँ १७२
१६३. जो सब को पाना चाहे १७३
१६४. जो मिलना है भगवान से १७४
१६५. जो नर दुःख में दुःख नहीं माने १७५
१६६. जो भी न आया बिक गया १७६
१६७. जो रहम की न होती भगवान १७७
१६८. जात हमारी आत्मा परमेश्वर १७८
१६९. जरा जीव विचारों मन में १७९
१७०. जहाँ तक जाती दृष्टि है १८०
१७१. जब अपने ही घर में खुदाई है १८१
१७२. जग है सराय-२, कोई आए कोई जाए १८२
१७३. जब से हम सतगुरू तुम्हारे हो गये १८३
१७४. जीवन ये आनन्द भरा है १८४
१७५. जरा तो इतना बता दो भगवान १८५
१७६. जब मन मीठा होए जग मीठा होए १८६
१७७. जहाँ रब ले जाये चलता चल १८७
१७८. जर्रे-जर्रे में है झाँकी भगवान की १८९
१७९. जिसके देव ऋषि मुनि गुण १९१
१८०. जहाँ ले चलोगे वहीं मैं चलूंगा १९२

झ

१८१. झीनी रे झीनी ते राम नाम १९३
१८२. झूम-झूम के न्नचो आज १९४

त

१८३. तू प्यार का सागर है १९५
१८४. तू-तू ना रहे, मैं-मैं ना रहूँ १९६
१८५. तू सैलानी मुसाफिर करने आए हो सफर १९७
१८६. तू अपने घर में जरूर आ जा १९८
१८७. तू जहाँ-जहाँ भी होगा १९९
१८८. तेरी महफिल के दीवाने २००
१८९. तेरे ज्ञान के ये ढंग प्यारे २०१
१९०. तेरा दर्श पाने को जी चाहता है २०२
१९१. तेरे नाम का आसरा मिल गया है २०३
१९२. तेरे चरणां विच रहा मैं २०४
१९३. तमाशा तुझ में होता है २०५
१९४. तू सैलानी मैं सैलानी २०६
१९५. तू ही सागर तू ही किनारा २०७
१९६. तेरे जैसा कौन है सतगुरू २०८
१९७. तेरे नाम की लौ कुछ ऐसी लगी २०९
१९८. तेरे फूलों से भी प्यार २१०
१९९. तुम्हें पा के हमने जहां पा लिया है २११
२००. तू प्यार करे या ठुकराए २१२
२०१. तुझ बिन कोई दूजा नाहीं २१३
२०२. तेरा ये दर न भूले २१४
२०३. तेरी अमर कहानी तेरी आत्मा ही जाने २१५

२०४.	तेरी शरण में जो आ गया	२१६
२०५.	तू सत हो जा गुरू प्यार मिले	२१७
२०६.	तुम्हीं ने दिया मुझको प्रेम खजाना	२१८
२०७.	तेरी चौखट पे आना मेरा काम था	२१९
२०८.	तुझको कैसे पाऊँ रे प्रियतम	२२०
२०९.	तू जो चाहे परम पद पाना	२२१
२१०.	तुमने मुझको प्यार किया है जितना	२२२
२११.	तुम्हारी भी जय-जय	२२३
२१२.	तेरे दर ते आ मईयां	२२४
२१३.	तेरी गोद में हैं तेरे चरणों में हैं	२२५
२१४.	तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार रे	२२६
२१५.	तेरा-तेरा-तेरा यहाँ कुछ भी नहीं है	२२७
२१६.	तू है हमारा और हम तेरे	२२८
२१७.	तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना	२२९
२१८.	तुम शरणाई आया ठाकुर	२३०
२१९.	तोरा मन दर्पण कहलाए रे	२३१
२२०.	तुझमें ओम्, मुझमें ओम	२३२
२२१.	तू तो बेमिसाल है सतगुरू	२३३
२२२.	तेरा नाम गुरू जो ध्याए रे	२३४
२२३.	तेरी शरण में जो आ गया	२३५
२२४.	तेरी इको ही झलक मेरे लेंखां हो मरज	२३६
२२५.	तेरे पूजन को भगवान बना	२३७
२२६.	तू ही मेरी जिन्दगी तू ही आधार है	२३८
२२७.	तेरी आयु यूं ही बीत जायेगी	२३९
२२८.	तेरे हाथ में है जीवन बचाना	२४०
२२९.	तेरा प्यार खींच कर लाया	२४१

२३०.	तेरे दर से जिसे मुहब्बत है	२४२
२३१.	तेरा भाणा मीठा लागे	२४३
२३२.	तुझे हाथों से न देते हुए देखा	२४४

थ

२३३.	था मुरझाया जीवन गुरू ने खिलाया	२४५

द

२३४.	देखी ज्योति निराकार की	२४६
२३५.	देख तेरे सतसंग की महिमा	२४७
२३६.	दादा के ज्ञान में जो शक्ति है	२४८
२३७.	दिल एक मंदिर है	२४९
२३८.	दुनिया के आगे बन्दे	२५०
२३९.	दस्तूरे मुहब्बत बस है यही	२५१
२४०.	देखा दुनिया का झूठा झमेला	२५२
२४१.	दिल में बैठा राम रमैया	२५३
२४२.	दे मस्त फकीरी वो मुझको	२५४
२४३.	दिल में दिलबर मिल गया	२५५
२४४.	देखो सन्तो दिन सुहाना आ गया	२५६
२४५.	दिल से करो जो भक्ति	२५७
२४६.	दुनिया का मजा ले लो	२५८
२४७.	दादा गुरू भगवान का उपकार	२५९
२४८.	दादा के सत् ज्ञान ने दीवाना कर दिया	२६१
२४९.	दादा तेरा नाम अमर फिर क्यों	२६२
२५०.	दुनिया दो दिन दा है मेला	२६३
२५१.	दिया मेरी मंजिल को गुरू ने इशारा	२६४
२५२.	दो दिन की मिली जिन्दगी बन्दे	२६५

२५३. दरबार में मेरे सतगुरू के २६६
२५४. दादा तेरा शुकराना तेरे जैसा प्यार कहां २६७

ध

२५५. धरती जिसकी शय्या है २६८

न

२५६. नदिया न पिये कभी अपना जल २६९
२५७. ना मैं मन ही रहा २७०
२५८. ना कर अब तू मेरा मेरा २७१
२५९. नहीं लेना किसी और का सहारा २७२
२६०. नारायण जिसके हृदय में सो कुछ कर्म करे २७३
२६१. नर तन जो मिला प्यारे २७४
२६२. निराकार रूप बन के गुरू रूप आया २७५
२६३. नर तन है इतना प्यारा २७६
२६४. नींद निशानी मौत की उठ २७७
२६५. नींद से अब जाग बन्दे २७८
२६६. निर्गुण रंगी चदरिया रे कोई २७९
२६७. नजरों से पिला दे सतगुरू २८०

प

२६८. पल-पल बीत रहा है जीवन २८१
२६९. पल-पल संत तुझे समझाए २८२
२७०. पायो जी मैंने राम रतन धन पायो २८३
२७१. प्यारे प्यारे सतगुरू दिल में बस गये जी २८४
२७२. पूरा सतगुरू मिला दिया सर को झुका २८५
२७३. पूरण मांहि रहना साधो २८६

२७४. प्यार तेरा अमृत फल जैसा २८७
२७५. प्यासा कोई मुसाफिर भूले से २८८
२७६. प्रगट हो गया जग विच राम २८९
२७७. प्रभु आये गुरू रूप में २९०
२७८. प्रभु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है २९१
२७९. प्रेम प्याला गुरू दिया रे २९२
२८०. प्रेम बिना ज्ञान कहां २९३
२८१. प्रेम सुराही सो पिये २९५
२८२. प्यारे सतगुरू ने बंसी छेड़ी ज्ञान की २९६
२८३. पी लेना गुरू नाम का प्याला २९७
२८४. पीती-पीती-पीती अंज मैं पीती ऐ २९८
२८५. प्यारे गीता भगवान ने हमको समझाया है ३००
२८६. पलकें ही पलकें बिछायेंगे ३०१
२८७. प्रभु अपने दीवानों पे ३०२

फ

२८८. फ्रिक से वो ही खाली होता है ३०३

ब

२८९. बनवारी रे जीने का सहारा ३०५
२९०. बहुत दिया देने वाले ने तुझको ३०६
२९१. बहुत याद करते हैं तुमको गुरू ३०७
२९२. बने चाहे दुश्मन ये मन भी हमारा ३०८
२९३. बड़े भाग्य तेरे जो नर तन पाया ३०९
२९४. बंगला अजब बना दरवेश जिसमें ३१०
२९५. बंदगी कर ले प्रभु की वरना ३११

२९६. ब्रह्मज्ञान प्रभु का मिला सच्चा धन ३१२
२९७. ब्रह्मज्ञान में शक्ति बड़ी ३१३
२९८. ब्रह्मज्ञान की सीड़ियों पे कोई-कोई ३१४
२९९. ब्रह्मज्ञान के साबुन से जो ३१५
३००. बृजलाला के नंदलाला राधा के सांवरिया ३१७
३०१. By God मुझे मिल गया God है ३१८
३०२. बन्दगी कर ले प्रभु की वरना ३१९
३०३. बन्धु अनमोल बड़ी ३२०
३०४. बहुत प्यार करते हो माया से तुम ३२१

भ

३०५. भीतर है सखा तेरा सखा ३२२
३०६. भरोसा जिसको भगवान में है ३२३
३०७. भजन बिना बाँवरे तैने ३२४
३०८. भगवान मेरे मन को तो भी भगवान बना दे ३२५
३०९. भगत भगवान के संकट से डर ३२६
३१०. भक्तों की याद पर आता जरूर हूँ ३२७
३११. भाग्यशाली हमको बनाया ३२८
३१२. भगवान तेरी उल्फत में एक प्यार भी है ३२९
३१३. भाव का भूखा हूँ मैं ३३०
३१४. भोर भई उठ जाग ३३१

म

३१५. मन में तरंग जान लो ३३२
३१६. मन मस्त हुआ फिर क्या बोले ३३३
३१७. मन की आंखे खोल बाबा ३३४
३१८. मन लागो मेरी यार फकीरी में ३३५

३१९. मस्ताना जोगी आया है ३३६
३२०. मस्तों की महफिल में आकर ३३८
३२१. महलों में नहीं, कुटिया में नहीं ३३९
३२२. मजा है जो फकीरी में ३४१
३२३. माही कहे कुम्हारे से तू क्यों ३४२
३२४. मिल गया-मिल गया ३४३
३२५. मिले सतगुरू जी दिल बहार हो गया ३४५
३२६. मिलती है बड़े भाग्य से सतसंग की ये घड़ी ३४६
३२७. मन के सुख सागर में ३४७
३२८. मन अपना ही कृष्ण मुरारी बन गया ३४८
३२९. मेरी रसना में प्रभु तेरा ३४९
३३०. मेरी अखियां विच शाम मेरा आन बसिया ३५०
३३१. मैं आप ब्रह्मानंद ३५१
३३२. मैं कुछ भी नहीं पर सब कुछ हूँ ३५२
३३३. मैं दुनिया के तापों से बच गयो रे ३५४
३३४. मेरे सतगुरू ने मुझे राजा बना दिया ३५५
३३५. मेरे सतगुरू मुझे अपनी पसंदी का बना लो जी ३५६
३३६. मेरे सतगुरू मैं तेरे द्वार आई ३५७
३३७. मेरे साकिया बता दे ३५८
३३८. मेरे मालिक की दुकान पर ३५९
३३९. मेरे दादा की मुरली क्या है ३६१
३४०. मेरा सतगुरू प्यारा गीत है ३६२
३४१. मेरा प्रीतम वसंदा कोल लो कोल ३६३
३४२. मेरा सत्चित् आनन्द रूप ३६४
३४३. मेहरबान-मेहरबान सतगुरू मेरा मेहरबान ३६५
३४४. मेरी जिन्दगी में क्या था ३६६

३४५. मैं नहीं मेरा नहीं ३६७
३४६. मैं उन सन्तों का दास ३६८
३४७. मैं छुप छुप प्यार करूँ ३६९
३४८. मैं हूँ आनन्द का ही स्वरूप ३७०
३४९. मैं सदके वारी सतगुरू ३७१
३५०. मैंने ऐसा सतगुरू पाया ३७२
३५१. मैंनू गुरा दे द्वारे तो हटाए ३७३
३५२. मानुष जनम अमोल माटी में ३७४
३५३. मुझे गरज न और सहारों की ३७५
३५४. मानव सोचो जग के सुख का ३७६
३५५. मुझे मेरे जीने की चाहत न होती ३७७
३५६. मुझे मेरी मस्ती कहाँ ले के आई ३७८
३५७. मुझे है काम ईश्वर से ३७९
३५८. मुझको खजाना नाम का है ३८०
३५९. मेरे सद्गुरू तू पीरों का पीर है ३८१
३६०. मेरे सतगुरू प्यारे ने मेरा जन्म ३८२
३६१. मेरे सतगुरू प्यारे की महिमा ३८४
३६२. मोकूं कहां ढूंढे रे बंदे ३८५
३६३. मैं दुनिया के तापों से बच गयो रे ३८६
३६४. मैं देखूं जिस ओर प्रभु जी ३८७
३६५. मिल के खुशी मनायें हम ३८८
३६६. मेला प्रेम का लगता रहे बार बार ३८९
३६७. मिलजुल के प्यार से रहना ३९०

य

३६८. ये जो कण-कण में ३९१
३६९. ये गर्व भरा मस्तक मेरा ३९२
३७०. यह मति कहाँ से पाई रे साधो ३९३
३७१. ये सत्संग वाला प्याला कोई ३९४
३७२. ये भेद सनम मुझे आज मिला ३९५
३७३. ये जग अदला बदली है ३९६
३७४. ये तन मन जीवन सुलग उठे ३९७
३७५. ये दिल है अमानत सतगुरू दी ३९८
३७६. ये दर न भूले, तेरा ये दर न भूले ३९९
३७७. ये भेद क्या है अजब अनोखा ४००
३७८. ये जग दीवानों की बस्ती ४०२
३७९. ये मोहब्बत की बातें है ऊधो ४०३
३८०. ये महफिल प्रेमियों की है ४०४
३८१. यूं ही तो बीती जाये सारी ४०५
३८२. ये तन मन जीवन सुलग उठे ४०७
३८३. यहां करने उद्धार भगवान आए हैं ४०८
३८४. ये रथ मेरा मैं राजा हूं ४०९
३८५. ये झूठे मोह के फन्दे ४१०

र

३८६. रब नहीं वसंदा दूर, अखियां खोल जरा ४११
३८७. राम नाम की नैया लेकर सतगुरू करे पुकार ४१२
३८८. राम रस बरसे रे मनुवा ४१३
३८९. राम तजूं मैं गुरू को न बिसारूँ ४१४
३९०. राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है ४१५

३९१. रमता राम रमो मोहे जिया ४१६
३९२. रिमझिम बरसे अमृत धारा ४१७
३९३. रहमतां करदा ए जी ४१८
३९४. रोते रोते आये हमें हंसना सिखाया ४१९
३९५. रंग वाले देर क्या है ४२०

ल

३९६. लगन सतगुरू से लगा बैठे ४२१
३९७. लखाया मुझमें ही गुरू ने मेरा प्यारा राम ४२२
३९८. लीला लगी है राम भजन ४२३
३९९. लाखों बाग हैं देखे मैंने ४२४
४००. लूट ले जिसको जी चाहे ४२५
४०१. लाली मेरे लाल की ४२६
४०२. लोभी तुम तो फंस गये माया जाल में ४२७

व

४०३. वचन गुरू के बोल मेरे मन ४२८
४०४. वाह-वाह तेरी कारीगरी भगवान ४२९
४०५. वैसे तो नशे अनेक हैं पर ये नशा कुछ और है ४३०
४०६. वेदों के मीठे वाक्य हैं ४३१
४०७. वो जुबां कहाँ से लाऊँ जिससे करूं मैं शुक्रिया ४३२

श

४०८. शान्ति सरोवर में नहाया करो ४३३
४०९. श्याम तुम होगे शमां ४३४

स

४१०. सतगुरू पूरे देव मिले ४३५
४११. सतगुरू तुझसे लगन मेरी लागी रहे ४३६
४१२. सतगुरू बिन जो हरि मिल जाए ४३७
४१३. सतगुरू मिले मेरे सारे दुःख बिसरे ४३८
४१४. सतगुरू पिया मेरी रंग दे चुनरिया ४३९
४१५. सतगुरू प्यारे ने यही समझाया ४४०
४१६. सतगुरू से करो प्रीत प्यारे ४४१
४१७. सतगुरू की मोहब्बत ने हमको ये सिखाया है ४४२
४१८. सतगुरू मिले तो मुझे मिल गई मुक्ति ४४३
४१९. सतगुरू-सतगुरू बोल के तो देख ४४४
४२०. सतसंग में हैं मजे-मजे ४४५
४२१. सतसंग में आने से ही मेरी दृष्टि ४४६
४२२. सत्ज्ञान की निर्मल गंगा ४४७
४२३. सच का सौदा करने वाले ४४८
४२४. सच मुझको मिल गया है ४४९
४२५. सच्चिदानन्द है तू ४५०
४२६. सब मतलब के हैं यार ४५१
४२७. सखियां रोज पूछे, प्रभु कैसे मिले ४५२
४२८. सफल हुआ है उसी का जीवन ४५३
४२९. सहारों का सहारा है सहारा है हमारा ४५४
४३०. साधो ये मुर्दों का गांव ४५५
४३१. साधो सो सतगुरू मोहे भाये ४५६
४३२. साधो भाई सहज समाधि भली ४५७
४३३. सतगुरू के चरणों में शीश जो झुकाओगे ४५८

४३४.	साधु चुप का है संसारा	४५६
४३५.	साथ जिसके सतगुरू हैं	४६०
४३६.	सांवरे से मिलने का सत्संग ही बहाना है	४६१
४३७.	सुमिरण कर ले मेरे मना	४६२
४३८.	सुख सागर में आयके मत जाओ रे	४६३
४३९.	स्वांस स्वांस मैं सिमरूं तुझको	४६४
४४०.	संत जगत में आते हैं	४६५
४४१.	संसार के जीवों में आशा न रखा करना	४६६
४४२.	सबसे सुन्दर सबसे प्यारा है तेरा दरबार	४६७
४४३.	सुन रे बन्दे तू क्यों सोचे	४६८
४४४.	सतगुरू तेरे हो गये हम	४६९
४४५.	सतगुरू तू बेमिसाल है तेरी क्या मिसाल दूँ	४७०
४४६.	सतगुरू प्यारे के प्यार का	४७१
४४७.	सतगुरू के चरणों में आ	४७२
४४८.	सोया मनवा जाग जरा परदेस में	४७३

ह

४४९.	हम तो तेरे दीवाने हैं	४७४
४५०.	है धन्य जगत में वो प्रेमी	४७६
४५१.	हमारे गुरू मिले ब्रह्मज्ञानी	४७७
४५२.	है प्रेम जगत में सार और कोई सार नहीं	४७८
४५३.	है खुदा का करम आज इंसान हम	४८१
४५४.	हजार शुक्राने हैं गुरू के	४८२
४५५.	हो जा खुशी से अपने भगवान के हवाले	४८३
४५६.	हर क्षण तेरा दीदार मिले इस पार मिले	४८४
४५७.	है कृपा तेरी मेरे सतगुरू	४८५

४५८.	हम लाए हैं ब्रह्माकार वृत्ति गुरू द्वार से	४८६
४५९.	हरदम है तू तैयार पाप कमाने के लिए	४८७
४६०.	हम अपनी झांकी देख चुके	४८८
४६१.	हर वक्त हंसी हर वक्त खुशी	४८९
४६२.	हम प्रेम नगर में रहते हैं	४९०
४६३.	हम अपनी धुन में गाते हैं	४९१
४६४.	परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्	४९२
४६५.	हमको मन की शक्ति देना मन विजय करें	४९३
४६६.	हरि से लागा रहो रे भाई	४९४
४६७.	हर एक राही को सत्संग की जरूरत है	४९५
४६८.	हस्ति भांति प्रिय में लौट आइए	४९६
४६९.	हरि ओम्, हरि ओम्, हरि ओम् कहिए	४९७
४७०.	हे गुरू, हे दयाल	४९८
४७१.	हमारा ऐसा है भगवान	४९९
४७२.	हुकुमे अन्दर सब कोई	५००
४७३.	है जिसमें घड़ी तेरी घड़ी तेरी ठीक है	५०१
४७४.	हर हाल में दादा का जो शुक्र मानते हैं	५०२
४७५.	ज्ञान गुरू का हृदय से न भूलो	५०३
४७६.	ज्ञान मिले गुरू के मुख से	५०४

अ

भजन - 1

अनमोल तेरा जीवन यूं ही गँवा रहा है।
किस ओर तेरी मंजिल किस ओर जा रहा है।।

सपनों की नींद में ही, ये रात ढल न जाये।
पल भर का क्या भरोसा, क्या जाने कल न जाये।।
गिनती की है ये स्वासें यूं ही लुटा रहा है...

जायेगा जब यहाँ से, कोई न साथ देगा।
इस हाथ जो दिया है, उस हाथ जा तू लेगा।।
कर्मों की है ये खेती, फल आज पा रहा है...

ममता के बंधनों ने क्यों आज तुझको घेरा।
सुख में सभी हैं साथी, दुख में कोई न तेरा।।
तेरा ही मोह तुझको, कब से रूला रहा है...

जब तक है भेद मन में भगवान से जुदा है।
देखे जो दिल का दर्पण, इस घर में ही खुदा है।।
सुख रूप होके भी तू, दुःख आज पा रहा है...

• • • • •

भजन – 2

अजब हैरान हूँ भगवन, तुम्हें कैसे रिझाऊँ मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी, जिसे सेवा में लाऊँ मैं।।

करूँ किस तरह आवाहन कि तुम मौजूद हो हर जगह
निरादर है बुलाने को अगर घंटी बजाऊँ मैं...

तुम्हीं मौजूद सूरत में, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में।
भला भगवान को भगवान पर कैसे चढ़ाऊँ मै...

लगाना भोग है तुमको, यह एक अपमान करना है
खिलाता है जो सृष्टि को उसे कैसे खिलाऊँ मैं...

तुम्हारी ज्योति से रोशन है, सूरज चांद और तारे
महा अंधेर है मुझको, अगर दीपक जलाऊँ मैं...

भुजाएँ हैं, न सीना है, न गर्दन है, न पेशानी
तू है निर्लेप नारायण कहाँ चन्दन लगाऊँ मैं...

बड़े नादान हैं वो जो बनाते, हैं तेरी सूरत
बनाता है जो सृष्टि को, उसे कैसे बनाऊँ मैं...

• • • • •

भजन – 3

अमर आत्मा सच्चिदानंद मैं हूँ
शिवोऽहम्, शिवोऽहम्, शिवोऽहम्

अखिल विश्व का जो परमात्मा है।
सभी प्राणियों का वही आत्मा है।।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ... शिवोऽहम्

जिसे शस्त्र काटे न अग्नि जलाये।
गलाए न पानी मृत्यु मिटाये।।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ... शिवोऽहम्

अजर और अमर जिसको वेदों ने गाया।
यही ज्ञान अर्जुन को हरि ने सुनाया।।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ... शिवोऽहम्

अमर आत्मा है मरणशील काया।
सभी प्राणियों के जो भीतर समाया।।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ... शिवोऽहम्

है तारों सितारों में आभास जिसका।
है चंदा ओ' सूरज में प्रका जिसका।।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ... शिवोऽहम्

जो व्यापक है कण–कण में है वास जिसका।
नहीं तीन कालों में है नाश जिसका।।
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ... शिवोऽहम्

• • • • •

भजन – 4

अपना रूप पहचान रे मन, दर्शन यही भगवान रे
पिण्ड ब्रह्माण्ड सब रास तुम्हारी,
काहे को करत गुमान, रे मन...
तीन लोक में तुम्हारा वासा,
काहे को फिरत उदास, रे मन...
जैसे सिंह अजा संग डोले,
आप न चीने भरम में भूले
जान रहियो अनजान, रे मन...
कस्तूरी बसे मृग के मांहीं,
वन–वन ढूँढ़े सूँघें जांहीं,
होई रहियो हैरान, रे मन ...
जिंनि प्रभु तुमको निश्चय कर जान्यो...
रमता राम सकल घट जानियो
सो साधु परवान, रे मन...
अब मेरी प्रीत गोबिन्द संग लागी
रूहल रैन भरम की भागी
आतम में मस्तान, रे मन...

• • • • •

भजन – 5

अन्दर सत गुरां दा डेरा, अन्दर जोत जगदी
अन्दर पूरे गुरां दा डेरा, अन्दर जोत जगदी
अन्दर जोत जगदी कि निर्मल जोत जगदी

जेड़ा जोत नूँ जगावे, पहले मन अपना समझावे
पीछे भेद गुरां दा पावे–अन्दर ज्योत...

अन्दर जोत दे लिशकारे, सूरज चमके कई हजारे
जिसदा अंत न पारावारे अन्दर...

नी तूं अन्दर पाले झात, जोती जगदी है दिन रात
अन्दर बैठे सतगुरू आप अन्दर...

तेरे अन्दर माल खजाना, ना जाई ढूढ़न देश बेगाना
अन्दर हुन तू पा ले झात अन्दर...

नीं तूं प्रभु–नाल कर लै प्यार, तेरा हो जाये बेड़ा पार
ये तो झूठा है संसार अन्दर...

• • • • •

भजन – 6

अन्दर के पट खोल बावरे
जय सतगुरू की बोल बावरे
रूक जाएगा इक दिन श्वांस खजाना
उड़ जाएगा पंछी छोड़ के दाना पाना
पल–पल है अनमोल बावरे। जय ...

व्यर्थ है कंचन काया तेरा रूप सलोना
यदि गंदा है अन्तर का हर कोना–कोना,
अपना हृदय टटोल बावरे

पोथी पढ़कर बना तू पंडित ज्ञानी
लेकिन फिर भी बोल न पाया मीठी वाणी
वाणी में रस घोल बावरे। जय ...

छोड़ अहम् को आजा अब तो सतगुरू द्वारे
तारण हारे सतगुरू ने अनगिन तारे
तरजा तू बिन मोल बावरे। जय ...

• • • • •

भजन – 7

अलख धाम की है तू धारा।
जपले ओम् ओम् प्यारा।।
पाँच तत्व का वेखण हारा।
तीन गुणों का साक्षी प्यारा।।
चेतन है चमकारा, जप ले ओम्...
जागो–जागो करो विचार।
अपने ज्ञान की करो संभाल।।
ऐसा अमोलक स्वाँस न जाए, जप...
सत् चित आनन्द तेरा रूप।
तूँ ही साक्षी ब्रह्म स्वरूप।।
तेरा तुझमें सांई प्यारा, जपले...
हरि ओम् हरि ओम् हरि ओम् बोल।
मन का मन्दिर मन में खोल।।
मन मन्दिर में है भगवान।
वो ही देखे जो श्रद्धावान, हरि ओम...
मन में तीर्थ गंगा जमना।
वे ही नहाए जो है सत्कर्मा।।
हरि ओम् हरि ओम् हरि ओम् बोल।
मन का मन्दिर मन में खोल...

ब्रह्म ज्ञान तेरे मन मन्दिर में।
वो ही पाए जो आए शरण में।।
हरि ओम् हरि ओम् हरि ओम् बोल,
मन का मन्दिर मन में खोल...

• • • • •

भजन – 8

अर्जुन से बोले इक रोज मोहन मदन
भक्त संकट में आए तो मैं क्या करूँ
सीधी मुक्ति की राहें चलाई मैंने
वो टेढ़ी राहों पे जाऐ तो मैं क्या करूँ...

सारी सृष्टि रची संग में माया रची
कर्म करने की बुद्धि और शक्ति मिली
मोह ममता में फंसकर तड़पता रहा
फिर मुझे भूल जाए तो मैं क्या करूँ

कर्म करना मनुष्यों का कर्तव्य है
उसमें तेरी सफलता मेरे हाथ है
कामयाबी मिले होवे कृपा मेरी
वो दिल में अभिमान लाए तो, मैं क्या करूँ...

अर्जुन! वेदों पुरानों में लिखा यही
हरना दुःखियों के दुःखड़े ये शिक्षा मेरी
रात दिन वेद गीता को पढ़ता रहा
फिर अमल में ना लाए तो, मैं क्या करूँ...

राम का नाम दुनिया में अनमोल है
ना जपे तो मनुष्य की बड़ी भूल है
पाप करते सारी जिन्दगी ढल गई
फिर वो आँसू बहाए तो मैं क्या करूँ...

कर्म निष्काम करोगे मुझे पाओगे
कर्ता जो बनोगे तो पछताओगे
ज्ञान मोक्ष का अर्जुन सुनाया मैंने
कोई माने ना माने तो मैं क्या करूँ...

• • • • •

भजन - 9

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में–२
है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में–२

मेरा निश्चय है बस एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं
अर्पण कर दूँ दुनिया भर का, सब भार तुम्हारे हाथों में–२

जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ जैसे जल में कमल का फूल खिले
मेरे गुण और दोष समर्पित हो, करतार तुम्हारे हाथों में–२

यदि मानुष का मुझे जन्म मिले तो तेरे चरणों का पुजारी बनूँ
इस पूजक के इक–इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में–२

जब जब संसार का कैदी बनँ, निष्काम भाव से कर्म करूँ
फिर अंत समय में प्राण तजूँ, साकार तुम्हारे हाथों में निराकार
तुम्हारे हाथों में

मुझमें तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूँ, तुम नारायण हो
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में–२

• • • • •

भजन - 10

अपने पिया की मैं तो बनी रे, जोगनिया
हंसी उड़ाए चाहे सारी दुनिया, मैं तो...

सांवरिया के संग में चुनरिया रंगाऊँगी।
चन्द्रमा का झुमका पहन पिया मैं आऊँगी।।
छम–छम बाजे मोरी ओ–३
छम–छम बाजे मोरी पैंजनिया। मैं तो...

तेरे लिये मैंने तो, शर्म लाज छोड़ी रे।
तेरे संग जोड़ी रे, जगत संग तोड़ी रे।।
तू है मोहन मेरा, आ–३ मैं तेरी मोहनिया, मैं...

• • • • •

भजन - 11

अरे सतयुग आया कलियुग में
मैंने सतगुरू पाया कलियुग में
मैंने सब कुछ पाया कलियुग में
भगवान् है पाया कलियुग में

चाहे कोई भी युग आए जाए
भगवान तो हरगिज दूर नहीं
हम आतम सुख में रहते हैं
किसी बात में हम मजबूर नहीं
धरती बन गई आसमान
मुझे पंछी बनाया कलियुग में

गीता का ज्ञान दिया मुझको
भगवान ने अपने ही मुख से
अंदर से मुक्त किया मुझको
मोह माया के हर सुख दुःख से
मेरा जनम ही पूरण हुआ
मुझे अर्जुन बनाया कलियुग में

हर युग में मुझको रूप मिला
माया में बनता रहा साकार
भगवान जो आए गुरू बनके
दिखलाया स्वरूप मेरा निराकार
मैं मरण से मुक्त हुआ
मुझे अमर बनाया कलियुग में
मैंने सबकुछ पाया

• • • • •

भजन - 12

अरे लोभी तुम तो फंस गये माया जाल में,
और खो दिया पाया था जो भी।

राम नाम अनमोल खजाना जो तुमने था पाया।
माया के चक्कर में आके अपना आप भुलाया।।

सच्चे धन को छोड़ दिया और झूठे को अपनाया।
माया से तो प्रीत करी और प्रभु का नाम भुलाया।।

धन दौलत के जोश में आकर कर बैठे मनमानी।
सत्य वचन अनमोल रतन की तुमन कदर न जानी।।

बीत गया जो भूल जा उसको अब तो सोच विचार।
सत्य वचन से सद्गुरू तेरा करेंगे बेड़ा पार।।

.....

भजन - 13

अपनी कृपा जो आप करे, सो सेवक गुरू की मत ले।

गुरू के द्वारे आना ही बहुत है,
बोल के न बोल पछताना ही बहुत है
पश्चाताप से विष घुल जाये
गुरू वाणी का अमृत ले
अपनी कृपा...

जे मैं आखां ते मैं जीवां,
जे मैं विसरां ते मर जावां
सतगुरू समझाते हैं हरदम,
इनकी नित्य इनायत ले

बाहर ज्ञान, ध्यान अश्नान,
भीतर व्यापे लोभी सुवान
मिथ्या सब संसार की माया
सच्ची ज्ञान की दौलत ले

अपने को जो जाने नीचा
सोई गनिये सबते ऊँचा
मैं मर कर खुद खुदा हो गया
खुद की रोज इबादत ले

भूल मारग जिस बतलाया
ऐसा गुरू वडभागी पाया
सीस चढ़े जब गुरू चरणों पर
फिर भगवान की कुदरत ले
ऊठत, बैठत, सोवत, जागत
जो जागत है सो प्रभु पावत
सोच तेरा क्या काम जरूरी
ज्ञान की असल जरूरत ले

• • • • •

भजन - 14

अजीब दास्तां है ये, कहाँ गुरू कहाँ थे हम।
यह मंजिल आई कौन–सी, न वो जुदा रहे न हम।

गुरू का प्यार पाके रे, नया जहाँ बसाया है।
कि दिल को साफ कर खुद को यहां बसाया है।।

ये रोशनी के आने से, अन्धेरा सारा ढल गया।
अन्दर की आग जो लगी, दिया ही जल के गल गया।

मुबारकें हमें कि हम तो नूर ही नूर हो गए।
गुरू के इतने पास हैं, कि खुद से दूर हो गए।।

• • • •

भजन - 15

अपनी हस्ती जो तेरे कदमों में झुका देते हैं।
तुमको हरतौर अदाओं से मना लेते हैं।।

बड़े होशियारं हैं ये भक्त तेरे क्या कहिये।
जब ये हँसते हैं तो तुमको भी हँसा देते हैं।
जब ये रोते हैं तो तुमको भी रूला देते हैं।

ऐसे आवाज में कहते हैं कि तुम आ जाओ
तुमको आने के लिए मजबूर बना लेते हैं।

कोई रंज या मुसीबत भी जो आ जाए उन पर
तेरी सौगात समझ के सर पे उठा लेते हैं।

• • • • •

भजन - 16

अभी तो जगाया फिर अभी सो गया रे।
जाग रे मुसाफिर तेरा वक्त हो गया रे।।

सभी परदेसियों की यही निशानी है।
आये और चले गए खत्म कहानी है।।
कोई गया हँसके, कोई रो गया रे,
अभी तो जगाया...
जाग रे मुसाफिर...

अपना सामान सब रख ले संभाल के।
कुछ खो बैठे कुछ खो देते हो जान के।
पीछे मत कहना मेरा माल खो गया रे,
अभी तो जगाया...
जाग रे मुसाफिर...

पीछे मत कहना मुझे किसी ने जगाया नहीं।
कोई भी मुसाफिर यहां टिक के रहा नहीं।
पागल मनवा देख तेरा साथी हो गया।
अभी तो जगाया...
जाग रे मुसाफिर...

• • • • •

भजन - 17

अरे अब क्या आई दिवाली, हम रोज दिवाली मनाते हैं
सतगुरू ने ज्योत जलाई, हम ज्योति से ज्योति जलाते हैं।

भगवान तो सब में ऐसे बसा, जैसे पानी बादल में,
बैठा वह मन में ऐसे है जैसे कालीख काजल में
जब वो ही समाया नैनों में, तो और नजारा क्या करना
अरे...

जब दिल में उतर आया है वह तो चेहरे को क्या देखे
जब सामने उसकी ओर बढ़े तो पीछे मुड़कर क्या देखे
चलती है दुनिया चलती रहे, बेमतलबों से क्या करना
अरे...

• • • • •

भजन - 18

अरे दुनिया वालों पड़े न भरम में
वो सतगुरू तुम्हारे करीब आ गया है
जिसे खोजते हो गुफाओं और वनों में
वह अब स्वयं धर शरीर आ गा है।

वही है जो त्रेता में राम कहाये
वही है जो द्वापर में गीता सुनाये
वही तत्व का ज्ञान तुम को सुनाकर
कराने तुम्हें भव से पार आ गया है।

घुमाया किया खूब माला करो में
दिखाता रहा मस्त हूँ दुनिया भर में
चलेगा तू जब न चले तेरी माया
बुढ़ापे का आलम करीब आ गया है।

जब इन्द्रियों में न बल ही रहेगा
अपाहिज बन सबके मुखड़े तकेगा
ये रो–रो के सोचेगा तू अपने मन में
अब क्या करूं सर पे काल आ गया है।

• • • • •

भजन - 19

अन्त समय में हे जगदीश मुझको
तेरा ही सुमिरन तेरा ही ध्यान हो
लवलीन हो चित्तवृत्ति ये मेरी
कि श्वासों में प्राण और अपान हो

योगी के सदृश मैं लगाऊँ समाधि
ओमकार अक्षर का वाच्यार्थ ज्ञान हो

न लोभ म मोह न ममता किसी में
न तन में हो पीड़ा कोई न कुछ दुःख का भान है।

अन्त समय में हे जगदीश मुझको
तेरा ही सुमिरन तेरा ही ध्यान हो।

• • • • •

भजन - 20

अंग संग हमारे राम है सुमिरन किया करे
इसके अनेक रूप है दर्शन किया करे–२
अंग संग ...

बस जाये दिल में राम ये है आरजू अगर
तो साफ दिल का हर घड़ी आंगन किया करे
... इसके

औरों की खामियाँ अगर आने लगे नजर
तब सामने औकात का दर्पण किया करे
... इसके

जिसमें जहां का हो भला दाता भी खुश रहे
ऐसे हर एक काम को फौरन किया करे
... इसके

खुशियाँ सिमट के आयेगी दामन में आपके
रोते हुए को पेश ये दामन किया करे
... इसके

जीवन में जो भी चाहिये औरों से आपको–२
प्रेमी जनों को आप भी अर्पण किया करे
... इसके

• • • • •

भजन - 21

अब किसी महफिल में जाने की हमें फुर्सत नहीं
अब किसी से दिल लगाने की हमें फुर्सत नहीं

एक था सिर झुक गया जो श्याम तेरे सामने
गैर के आगे झुकाने की हमें फुर्सत नहीं...

एक था दिल जिसमें आकर बस गया है सांवरा
गैर को दिल में बसाने की हमें फुर्सत नहीं...

हाल-ए-दिल अपना कहेंगे श्याम तेरे सामने
गैर के आगे सुनाने की हमें फुर्सत नहीं...

तोड़ के नाते सभी जोड़ा है नाता श्याम से
दुनिया से नाता निभाने की हमें फुर्सत नहीं...

श्याम रूठे तो मनाते ही रहेंगे सदा
दुनिया रूठे तो मनाने की हमें फुर्सत नहीं...

बेकदर दुनिया जो पूछेगी भला वो कौन है
साफ कह देंगे बताने की हमें फुर्सत नहीं...

• • • • • •

आ

भजन - 22

आतम का दीदार कर मन, आतम का दीदार।
नित अविनाशी आतम जानो,
पूरण ब्रह्म परमातम जानो।
झूठा जगत अनातम जानो, ये ही करो विचार।।

झूठे जग से करो किनारा,
सतगुरू संतों का बन प्यारा।
ज्ञान सुना कर आतम प्यारा, त्यागो तन अहंकार।।

पाँच कोश का पर्दा हटाके,
अन्दर देखो ध्यान लगा के।
अनुभव अकर्ता आतम जानो, सत्‌चित आनन्द सार।।

कहे प्रेमी गुरू शब्द विचारो,
लखना से निज रूप पहचानो।
द्वैत भरम को तुरत निवारो, पाओ मोझ द्वार।।

• • • • •

भजन – 23

आस्था ही नहीं फल कहाँ से मिले
रेत ही रेत है जल कहाँ से मिले

आजकल–२ जिन्दगी हो गई
कल हृदय में नहीं कल कहाँ से मिले।
आस्था ...

और आगे बढ़ो प्राण का मोल दो
घाट पर बैठ कर तल कहाँ से मिले।
आस्था ...

आप से दो घड़ी उम्र तो माँग लूँ
किन्तु बीता हुआ कल कहाँ से मिले।
आस्था ...

आत्मिक शक्ति दो सत्गुरू की शरण
विश्व में ऐ प्यारे, हल कहाँ से मिले।
आस्था ...

• • • • •

भजन – 24

आके मेरी सखियों मुझको मेहंदी लगा दो,
मेहंदी लगा दो मुझको–२
मुझे श्याम सुन्दर की दुल्हन बना दो।

सत्संग में आके मेरी बात चलाई,
सत्गुरू ने मेरी कर दी सगाई,
ओ मेरे प्रीतम मुझको अपना बना लो।
मुझे श्याम ...

वो ही पहनूँ चूड़ियाँ जो कबहूँ न टूटे,
वो ही वरूँ दुल्हा जो कबहूँ न छूटे,
अचल सुहाग की बिंदिया लगा दो।
मुझे श्याम ...

वो ही ओढ़ूँ चुनरी जो कबहूँ न छूटे,
प्रीत का धागा जो कबहूँ न टूटे,
आज मेरी मुतियन से मांग सजा दो।
मुझे श्याम ...

प्रीत की पायल पहन नाच–नाच गाऊँगी
नाच–२ गाये–गाये प्रीतम को रिझाऊँगी।
कोई मुझे प्रीतम की गली में पहुँचा दो।
मुझे श्याम ...

भक्ति का सुरमा मैं आँखों में लगाऊँगी
दुनिया से नाता तोड़ उसी की हो जाऊँगी
सत्गुरू बुला के मेरे फेरे लगा दो।
मुझे श्याम ...

• • • • •

भजन - 25

आत्मा में सदा रहता परमात्मा
कोई जाने न जाने तो मैं क्या करूँ
ज़र्रे ज़र्रे में साकार हैं वो प्रभु
कोई माने न माने तो मैं क्या करूँ

इक अहंकार का बीच परदा पड़ा
मोह का ये अंधेरा है चारों तरफ
बिन गुरू के कभी ज्ञान होता नहीं
कोई जाने न जाने तो...

हर गुल में हर लताओं में है उसकी झलक
है उसके सहारे ये पृथ्वी फलक
जड़ और चेतन में है उसकी कारीगरी
कोई जाने न जाने तो...

ज्ञान का तत्व मिलता है सत्संग से
सच्चा सुख प्राप्त होता है गुरूदेव से
कलि में सत्संग की महिमा है सबसे बड़ी
कोई जाने न जाने तो...

• • • • •

भजन - 26

आनंद स्रोत वह रहा पर तू उदास है,
अचरज ये जल में रहकर मछली को प्यास है।

फूलों में जो सुवास–मधु में मिठास है,
भगवान को तो विश्व के कण–कण में वास है।
अचरज ये...

कुछ तो समय निकाल आत्म शुद्धि के लिए,
मनुष जनम का उद्देश्य न केवल विलास है।
अचरज ये...

खुद ज्ञान चक्षु खोल के तू देख तो सही,
जिसको तू ढूंढ़ता वो सदा तेरे पास है।
अचरज ये...

आनंद स्रोत को न पा सकेगा तब तलक,
जब तलक तू मन व इंद्रियों का दास है।
अचरज ये...

• • • • •

भजन - 27

आतम के साज पर जो छेड़ी मुक्ति की ये तान
शरणागति के संत तूने कर दिया कमाल
बोलो सब मिल कर के, हरि ओम्, प्रेम से बोलो हरि ओम्

जग में नहीं है माया, मेरे मन में थी माया
इस माया को है कैसे तूने मार–भगाया
फिर मन ही मन में ब्रह्म का स्वरूप दिखाया
मैं कैसे करूँ शुक्रिया तेरा ओ बेमिसाल...
शरणागति...

ना देखा तूने छोटा और बड़ा भी न देखा
देखा जो देखा बस मैं अपना आप ही देखा
मैं वारी जाऊँ, देख तेरा रूप अनोखा
सब को गले लगाया, तेरा हृदय है विशाल...
शरणागति...

श्रद्धा का पात्र लेके तेरे दर पे जो आया
उस को है तूने ज्ञान का अमृत है पिलाया
चौरासी उसकी काट जीवन मुक्त बनाया
मिटा के देहाध्यास उसकी कायम की मिसाल...
शरणागति...

• • • • •

भजन - 28

आया जो तेरे दर पे भगवन् दीदार को–२
ये हो नहीं सकता कि वो भव से न पार हो–२

ठुकरा दिया जगत को जिसने तेरे लिए,
तेरा ही नाम जपता जो बारम्बार हो।

सपने में भी न भूले जिसको तेरा ख्याल,
दिल में लगन हो तेरी, तेरे से प्यार हो।

उस भाग्यशाली नर को, दुनिया से क्या गरज,
जिस दिल में लगी, तेरे वचनों की तार हो।

• • • • •

भजन - 29

आता है इस जहां में रहबर कभी–कभी।
मिलता है ऐसा बन्दा परवर कभी–कभी।

फैला के झोलियाँ खड़े थे कई तेरे द्वार।
खुलता है रहमतों का ये द्वार कभी–कभी।

खोजे पहाड़ हमने, देखा जमीन जहान।
मुश्किल से हाथ आता है हीरा कभी–कभी।

लाखों पुकारते हैं आ जा आ जा।
मीरा के लिए आता है गिरधर कभी–कभी।

जिस–जिस ने पुकारा है सच्चे दिल और जान से।
उसके लिए ही आता है भगवान कभी–कभी।

प्रेमी की इल्तजा से नारायण आ गया।
काबे में घूमता है कलंधर कभी–कभी।

• • • • •

भजन - 30

आया था किस काम को क्यों सोया चादर तान के।
सुर्ति सम्भाल अब गाफिला, तू अपना आप पहचान रे।।

मांगन मरन समान है, मत कोई मांगो भीख।
मांगन से मरना भला, ये सत्गुरू की सीख।।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे लंबी खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

माया मरी, न मन मरा, मर–मर गए शरीर।
आशा तृष्णा ना मरी, कह गए दास कबीर।।

पानी भरन पनहारियाँ, रंग बिरंगे घड़े।
भरिया उसका जानिए, जांका तोड़ चढ़े।।

माटी कहे कुम्हार को, तू क्या रोंदे मोहे।
इक दिन ऐसा आएगा, मैं रोंदूँगी तोहे।।

संत खड़ा बाज़ार में, मांगे सबकी खैर।
ना काहू से दोस्ती, न काहू से वैर।।

• • • • •

भजन - 31

आतस रस के पीने वाले रस तो पिला दे–२
ब्रह्मज्ञान से मस्त बनादे।

कौन हूँ मैं और कहाँ से आयी,
किसने, सारी सृष्टि रचायी
ये ही तो मेरा भरम मिटा दे।
भेद भरम मेरा रहे न कोई,
दुःख सुख जग वाला व्यापे न कोई
ऐसी कोई युक्ति बता दे।

ब्रह्म ही ब्रह्म हर जगह समायो
ब्रह्म बिना कुछ नजर न आयो
ऐसा शुद्ध रूप मोहे बना दे।
स्वप्न, सुषुप्ति से देखनहारा,
जाग्रत का तूने किया पसारा,
ऐसी अखंड वृत्ति बना दे।

सुनने से मेरा कुछ नहीं बनता,
पढ़ने से मेरा कुछ नहीं बनता
ब्रह्म ही ब्रह्म में गोता लगा दे।

• • • • •

भजन - 32

आवाज देके प्रभु न बुलाओ।
है नजदीक नजरों से परदा हटाओ।

है हर जर्रे–जर्रे में वो ही समाया।
मगर वो किसी के न दृष्टि में आया।
वो आनन्द दाता है आनन्द मनाओ।

नहीं वो किसी के है बंधन में आता।
नहीं जन्म पाता नहीं दुःख उठाता।
अगर मिलना चाहो तो गुरू शरण में आओ।...

है अपने ही अंदर कहाँ ढूँढ़ते हो।
जमीं पर है क्यों आसमाँ ढूँढ़ते हो।
यहीं पर मिलेगा कहीं दूर न जाओ।

आवाज देके प्रभु न बुलाओ।
है नजदीक नजरों से परदा हटाओ।

• • • • •

भजन - 33

आप क्या मिले मुझे सहारा मिला।
डूबती नैया को किनारा मिला।।

थी अधूरी जिंदगी ये आपके बिना।
जैसे हो चिराग कोई रोशनी बिना।।

भटकते थे दर बदर हम तेरी चाह में।
तू ही तू है हर घड़ी अब इस निगाह में।

हो गई निगहा जब से मेहरबान की।
मिल गई खुशी मुझे अब दो जहान की।।

प्रेमी बन गया है पत्थर थाम के कदम।
प्यार तेरा पाके अब हो गया अमर।।

• • • • •

भजन - 34

आज खुले भाग्य हमारे,
धन्य हुए हैं भाग्य हमारे।
अपने घर आए सतगुरू प्यारे...

घर में आए मन में आए,
रोम रोम में आके समाए।
जन्मों की प्यास बुझाए...

ज्ञान सिखाया विज्ञान सिखाया,
मनुष्य जन्म का सार बताया।
जीवन मुक्ति पाऐ...

भटक रहे थे सुख दुःख मांहि,
निर्गुण थे हम एक गुण नांहि।
सब गुण तुम से पाए...

तन, मन, धन सब हुआ है तेरा,
सब कुछ तेरा बस तू है मेरा।
प्रेम में बढ़ता जाए...
आज खुले है भाग्य हमारे...

• • • • •

भजन - 35

आ चल के तुझे मैं लेके चलूँ, इक ऐसे गगन के तले
जहाँ गम भी न हो, आसूँ भी न हो
बस गुरू का प्यार मिले, इक ऐसे...

जहाँ दूर नजर दौड़ाऊँ, हमें ब्रह्म ही ब्रह्म दिखाएँ।
यहाँ रंग बिरंगी सतसंगी आत्मा का संदेशा लाएँ।
जहाँ प्रेम मिले, जहाँ तृप्ति मिले,
और ज्ञान सुहाना मिले,

जहाँ गुरू की वाणी सुनकर, आशा का सबेरा जागे।
जहाँ गुरू की महिमा गाकर, घनघोर अंधेरा भागे।
चाहे खुशी मिले, चाहे गम भी मिले,
दोनों में समान रहें...

अपने मन के मंदिर में, जब गुरू को हमने बसाया।
अद्वैत का गहरा भेद ये, अब हमको समझ में आया।
श्रद्धा भी रहे, धीरज भी रहे,
अनमोल ये ज्ञान मिले...

• • • • •

भजन - 36

आखों में तेरा ध्यान, रहता है सुबहो शाम
मुझे तेरा नाम प्यारा है जो देता भव से किनारा है
भक्तों का प्राण सहारा है

नाम तेरा जो जपता प्राणी, भय न किसी से खाये
आलम कुल की शक्ति उसके आगे शीश झुकाये
वही सतगुरू का प्यारा है
रहता वो जग से न्यारा है भक्तों का प्राण आधारा है

मोह ममता की शक्ति उस पर असर नहीं कर सकती
वास है जिसके दिल में करती, तेरी निर्मल भक्ति
जीवन को उसने संवारा है, दिल से संसार बिसारा है
पकड़ लिया तेरा द्वारा है

प्रभु भक्तों को निज करूणा से छांव में अपनी बिठाए
आंखों में भर अपना तस्सवुर मोह व्याधि से छुड़ाये
किया उपकार ये भारी है सकल दोषों को निवारा है
धन्य–धन्य गुरू हमारा है

• • • • •

भजन - 37

आया अवतार आया
दादा के रूप में आया गुरू के रूप में आया

निष्काम प्यार गुरू ने दिया
और जीवन हमारा संवार दिया
ज्ञान की शमा लिये प्रेम पैगाम लेके
आया मसीहा आया मसीहा दादा...

आत्म ज्योति दिल में जलाकर
हृदय हमारा तो रोशन किया
सर्व दुखों की औषधि लिये
आया सतगुरू तो आया दादा...

एक तू जो मिला सारी दुनिया मिली
आज तुम सा जहां में कोई नहीं
खुदगर्ज दुनिया से इस हमदर्द पाया
आया सतगुरू तो आया आया सतगुरू तो आया...

• • • • •

भजन - 38

आसरा इस जहाँ का मिले न मिले
मुझको तेरा सहारा सदा चाहिये
चांद तारे फलक पर दिखे न दिखे
मुझको तेरा नजारा सदा चाहिये

जहाँ में खुशियां है कम और ज्यादा है गम
जहाँ देखो वही है भ्रम ही भ्रम
तेरी महफिल में शमां जले न जले
मेरे दिल में उजाला तेरा चाहिये

कभी वैराग है कभी अनुराग है
जहाँ बदलते हैं माली वहीं बाग हैं
मेरी चाहत की दुनिया बसे न बसे
मेरे दिल में बसेरा तेरा चाहिये

टेढ़ी मेढ़ी है राह और पथ है विशाल
हर कदम पर मुसीबत है अब तो संभाल
पांव मेरे थके ये चले न चले
मेरे दिल में इशारा तेरा चाहिये

• • • • •

भजन - 39

आया है–३ पतित पावन भगवान,
करता है–३ जग में जीवों का उद्धार।

जात–पात का भेद मिटाके ज्ञान अंजन सुनाया।
पापियों को पाक बना के अपना भेद बताया।।
करता है–३ जग में जीवों का उद्धार।

जीव भाव का भेद मिटा के आतम रूप दिखाया।
जनम–मरण का दुःख मिटा के जीवन मुक्त बनाया।
करता है–३ ज्ञान यज्ञ का भंडार।

कृष्ण जैसा ज्ञान सुना के मोह जाल से छुड़ाया।
कमजोरी सब दूर हटा के बिल्ली से शेर बनाया।।
ओ कैसे मैं गाऊँ प्रभु की महिमा है अपरंपार।

• • • • •

इ

भजन - 40

इतरा न जिन्दगी पर इसका है क्या भरोसा।
पानी का बुलबुला है, कब फूटे क्या भरोसा।।

करनी जो भलाई कर लो, वक्त पर तो।
इसको न टालो कर पर, कल का क्या भरोसा।।

हर श्वांस तू रट ले, मालिक का नाम ले तू।
जो श्वांस जाए वापिस आने का क्या भरोसा।।

पत्ता गिरा जमीं पर, बोला दर्द से यूं।
फिर से लगूँगा तुझपर, इसका क्या भरोसा।।

पड़ जाए जो मुसीबत कहना न दूसरों से।
हिम्मत से काम लेना, औरों का क्या भरोसा।।

माया है आनी जानी, टिकती नहीं कहीं पर।
राजा बने भिखारी, दौलत का क्या भरोसा।।

अनमोल तेरा जनम, करने को है सारा काम।
इन्सां के रूप में, मिलने का क्या भरोसा।।

• • • • •

भजन - 41

इन्साफ का मंदिर है ये भगवान का घर है।
कहना है जो कह दे तुझे किस बात का डर है।।

है खोट तेरे मन में जो भगवान से है दूर,
है पाँव तेरे फिर भी तू आने से है मजबूर।
हिम्मत है तो आजा ये भलाई की डगर है।।

दुःख देके जो दुःखिया से न इन्साफ करेगा,
भगवान भी उसको न कभी माफ करेगा।
ये सोच ले हर बात की दाता को खबर है।।

मायूस न हो हार के तकदीर की बाजी,
प्यार है वो गम जिसमें भगवान भी राजी।
दुःख दर्द मिले जिसमें वो ही प्यार अमर है।।

है पास तेरे जिसकी अमानत उसे दे दे,
निरधन भी है इन्सान मोहब्बत उसे दे दे।
जिस दर पे सभी एक हैं बंदे ये वो घर है।।

• • • • •

भजन - 42

इक बार भजन कर ले, मुक्ति का यतन कर ले
कट जाएगी चौरासी, हरि का सुमिरन कर ले।

चोला ये मानुष का हर बार नहीं मिलता
जो गिर गया डाली से, वह फूल नहीं खिलता

मौका है जीवन का, गुलजार चमन कर ले।
इन कानों से नर तू, सुन सन्तों की वाणी

मन को ठहरा कर के, बन जा पूरा ज्ञानी
जिव्हा न मुख में तू नाम रटन कर ले।

मस्तानों की टोली में, ले नाम लिखा अपना
फिर साफ नजर आए, दुनिया है एक सपना

धुल जाएगी सब स्याही, उजला तन मन कर ले।
सन्तों ने जो गाया है, मैं भी उस धुन पर

प्रेमी तुम भी गाना, धुन मेरी सुन सुनकर
या तो गुरू के आगे नीची गर्दन कर ले।

• • • • •

भजन - 43

इस मैं–मेरी नूँ मार मैं विच बड़ी जुदाई ऐ।
इस मैं नूँ कर लो दूर अंदर दी करो सफाई ऐ।।

इस मैं ने झगड़ा पाया सारे जग विच शोर मचाया।
मेरे हथ वी कुछ न आया इसने अन्नी मचाई ऐ।।

तू करदा मैं ना, मैं ना इस जग दे विच सुख है ना।
कुछ कर लो नेक कमाई, गुरां ने साँच बताई ऐ।।

तू छोड़ शरीर का चाही, बन जाए जगत दा सांई।
तू दर–दर भटकाई गुरां ने बात बताई ऐ।।

सब भाई बन्धु तेरे छॅड चले ने साथी तेरे।
चल देख गुरां दे डेरे गुरां ने संगत लाई ऐ।।
मैं तो जन्म–जन्म दी भटकी पूरे वचनों तो मैं अटकी
सतगुरू ने पूर्ण किया गुरां ने बात बताई ऐ।...

• • • • •

भजन - 44

इक ज्ञान का नग्मा है,
मौजों की रवानी है,
जिन्दगी और कुछ भी नहीं,
खुशियों की कहानी है।
सतगुरू ने बुलाया हमें
ब्रह्मज्ञान सुनाया हमें
ब्रह्मज्ञान सुनकर के अमर बनाया हमें
अमर ज्योत जगाकर के दी अमर निशानी
पाया जो कुछ तो है झूठ
खोया कुछ है तो झूठ
पाया खोया कुछ भी नहीं, ज्यों का त्यों भरपूर,
दिया ऐसा खजाना है, खुशियों का तराना है।
आत्मा तो है अजर अमर
जीना मरना है इस देह का धर्म
आओ प्रेमियों आओ मिलकर सुनो सच्ची ये खबर
ऐसा सतगुरू पाया है, जीवन मरण छुड़ाया है।
देह अध्यास को छोड़ा है
और आत्म पद पाया है
जीवन का सच्चा मतलब मुक्ति को पाना है,
ये मेरा निश्चय है, ये मेरी कहानी है।

• • • • •

भजन - 45

इस दुनिया में कोई नहीं जो सच्चा प्रेम सिखाये
सुख के साथी बहुत मिले पर दुःख में काम न आवे
दीन दुःखी का एक गुरू है सदा ही होत सहाय
जो भी प्रेम से ध्यावे गुरू को उसका सब दुःख जाय
सोई वडभागी जो पूरा गुरू पावे
तन मन धन की ममता मिटावे...
पूरा गुरू पावे आत्मा में जाए...
जिसके दिल में द्वैत नहीं है
ऊँच नीच का भाव नहीं है
सोई दर्शन पावे... सोई...
सुख दुख जो सम कर के जाने
प्रेम ही सबसे ऊँचा माने
धीरज दिल में धारे... सोई...
शैः सतगुरू के घर भरा भंडारा कोई पावण वाला पावे
गंगा जमुना भर भर वहंदी कोई नहावण वाला नहावे
ज्ञान प्याला अमृत का कोई पीवण वाला पीवे
काशी मथुरा ध्यान कायम कोई आवण वाला आवे
तेल फुलेल इतर धरेरे कोई लावण वाला लावे
दाना पाणी मेरे सतगुरू दा कोई खावण वाला खावे
सोई वडभागी...

बुरा न सुनता बुरा न कहता
बुरा न सोचता बुरा न देखता
प्रभु को सोई पावे
सोई वडभागी जो पूरा गुरू पावे...

• • • • •

भजन - 46

इस जीवन में मिला गुरू ऐसा रहवर है
जिसने बाँधा अजब प्रेम का बन्धन है
गुरू जीवन बनाये ये अपना भी मन है
आज गुरू से रोशन हमारा जीवन है।

दम से गुरू के मेरे चाँद सितारे चले – ऽऽ
एक इशारे से सागर में लहर उठे ...
भगवन और भक्तों का अजब ये संगम है
लाख–लाख शुक्राना गाती ये धड़कन है।

गुरू की छाया तले–ऽऽ हरेक जीवन पले–२
धड़कन बन के गुरू–ऽऽ हर एक दिल में बसे–२
गुरू का प्यार ही तो है पूँजी जीवन की
बन गया दिल ये तो अमानत सतगुरू की

गुरू की वाणी ने घायल ऐसा किया–२
जो भी आया शरण जीवन उसका बना–२
राज की बात बताएं कि हम तो खुशकिस्मत हैं
गुरू ने बनाया ये जीवन जन्नत है।

• • • • •

भजन - 47

इस देही का होता नाश है तू तो साक्षी स्वयं प्रकाश है

पञ्च भूतों का है विस्तारा तू तो है दृष्टा देखनहारा
यह जगत तेरी विलास है तू तो ...

जैसे गहनों में सोना है पाया, ऐसे कण-२ में वो है समाया
घट-घट में तेरा ही निवास है तू तो ...

उठ जग ये सपनों की माया, देख सपना है क्यों भरमाया
जागे सपने का होता नाश है तू तो ...

खाना पीना धर्म है प्राण है तू अपने को क्यों मानता
स्वामी बन के बना क्यों उदास है तू तो ...

भूल अपनी है आप मिटाये, मैं हूँ साथी ये निश्चय जमा तो
ज्ञान होने पे कर्मों का होता नाश है तू तो ...

• • • • •

भजन - 48

इतना गुरू से प्यार बढ़े कि दोतन इक प्राण हो जाएं
गुरू बिन और न कुछ सूझे, कि गुरू बिन और न कुछ भाये

सत्गुरू से आदि का नाता है रूहानी जो कहलाता है
सत्गुरू से जो प्रेम बढ़ाता है सत्गुरू ही उसको अपनाए
इतना ...

सत्गुरू हमारा दाता है सत्गुरू ही मुक्ति का द्वारा है
सत्गुरू से जो नेह लगाता है वो उसके रंग में रंग जाए

प्रेम ज्ञान के अवतारे जग में स्वयं दादा सत्गुरू जी प्रगटे
जिसने उनको पहचाना है उसका ही सफल जीवन होवे

बड़े भाग्य से अवसर आया है सत्गुरू नजरों में समाया है
घर बैठे प्रीतम पाया है फिर क्यों न महिमा हम गायें।

• • • • •

भजन – 49

इस माटी में सुन मेहरबान, जब तलक एक भी स्वांस हो।
तेरा प्रीत ना बिसराऊँ मैं, येही होठों पे अरदास हो।।

दुनिया का मेला है रंग भरा, कहीं खो ना जाऊँ मैं भीड़ में।
तेरी अंगुली ना छोड़ूँ कभी, तू हर जगह मेरे साथ हो।।

ऋतु आए भी, ऋतु जाए भी, पर विनती है मेरे साहिबा।
बरसात तेरे मेहर की, जीवन में बारह मास हो।।

सद्गुरू तेरे चरणों में, जन्नत से ज्यादा सुख–कहीं।
सिर भी झुका रहे हर घड़ी, अंदर से दिल भी दास हो।।

सतसंग है मेरा आईना, खुद को सँवारू मैं प्रीत से।
तेरे वचन मेरे लिए हुकुम हों, तेरे बोल मेरा लिबास हो।।

• • • • •

भजन – 50

ईश्वर की भक्ति को दिल से न जुदा करना।
जो वचन किया उनसे–वायदे को अदा करना...

जब मात गर्भ अंदर तूँ उल्टा लटका था
तब जान तेरे को भी जाने का खतरा था
जिसने जन्म दिया तुझको, दिल उसी पे फिदा करना,
जो वचन...

ये तृष्णा का कासा तेरा हरदम खाली है
तूँ झूठी आशा के द्वारे का सवाली है
जो सबका दाता है–दिल उसी पे फिदा करना,
जो वचन...

क्यों भूल गया प्रभु को सब झूठा धंधा है
ईश्वर के नाम बिना, ये बंदा गंदा है
निष्काम करो थोड़ा, ना पाप कभी करना,
जो वचन...

• • • • •

भजन - 51

इस दुनिया में कोई नहीं, जो दिल का दर्द मिटाए।
सुख के साथी बहुत मिले, पर दुःख में काम न आए।।
दीन दुःखी को एक गुरू है, सदा ही होत सहाय।
जो भी जाने गुरू है, उसका सब दुःख जाए।।

सो ही बड़भागी जो सद्गुरू पाए,
तन मन धन की ममता मिटाये-२
जिसके दिल में द्वेष नहीं है, ऊँच, नीच का भाव नहीं है
सो ही दर्शन पाए...

सुख-दुःख जो सम करके जाने
प्रेम ही सबसे ऊँचा माने,
धीरज दिल में धारे।
सद्गुरू ते घर भंडार, कोई पावण वाला पाए।
गंगा जमुना भर-भर बहती, कोई नावण वाला नाए।।
ज्ञान पियाला अमृत का, कोई पीवण वाला पिए।
दाना पाणी मेरे सद्गुरू का, कोई खावण वाला खाए।।

बुरा न सुनता, बुरा न कहता,
बुरा न देखता, बुरा न सोचता
प्रभु को सो ही भाये।

• • • • •

भजन - 52

इस भव सागर में केवल भगवान शरण सुख दाई।
धन्य है जीवन उसका, जिसने शरण गुरू की पाई।।

जकड़े जग के जंजालों में, भूले थे निज चिंतन
नहीं सूझता था, कितना मैला था मन का दर्पण
ज्ञान के निर्मल जल से, गुरू ने मन की मैल मिटाई...धन्य

काम क्रोध-मोह लोभ था इतना, अहंकार था मन में
राग द्वेष के कारण फिर-फिर आये जन्म मरण में
इन से छुटकारा पाया, सतगुरू ने युक्ति बताई...धन्य

ज्ञान मिला वरदान मिला, अब मिले हैं सतगुरू ज्ञानी
तृप्त हुये सुनकर, सतगुरू की सत्य सरल ये वाणी
मुक्त किया हमको कर्मो से, पल में मुक्ति दिलाई...

• • • • •

भजन - 53

इश्क तेरा ही रहे, प्यार तेरा ही रहे
साथ तेरा ही रहे, आपके प्यार में मैंने
तो खुदा देखा है

तुमने कर्मों से बचाया है हमें
तुमने माया से छुड़ाया है हमें
जिन्दगी में मुझे यही आस रहे...

भूल कर भी न तुझे भूल सकूं
ज्ञान से ही मिला इस दिल को सकूं
नींद में भी मुझे याद रहे...

जिंदगी तो है तेरे वचनों में
प्यार पाया है इसी महफिल में
मेरी हर श्वांस में यही आस रहे...

• • • • •

उ

भजन - 54

उमर का पंछी उड़ता जाता
क्यों प्राणी प्रभु नाम न गाता रे।

किसे पता है कल क्या होगा
पता नहीं किस पल क्या होगा
काल चक्र चलता मदमाता
क्यों प्राणी प्रभु नाम न गाता रे।

आज कहे कल नाम जपूँगा
कल आए फिर कल आज लूंगा
बीता कल फिर हाथ न आता
क्यों प्राणी प्रभु नाम न गाता रे।

• • • • •

भजन - 55

उपर गगन विशाल नीचे गहरा पाताल
बीच में धरती वाह मेरे मालिक तूने किया कमाल
अरे वाह मेरे मालिक क्या तेरी लीला तूने किया कमाल

एक फूँक से रच दिया तूने सूरज अगन का गोला
एक फूँक से रचा चन्द्रमा लाखों सितारों का टोला
तूने रच दिया पवन झकोरा ये बादल का उड़न खटोला
जिसे देख हमारा मन डोला ओ ऽऽऽऽऽ

तूने रचा एक अद्‌भुत प्राणी, जिसका नाम इन्सान
इसकी नन्हीं जान के भीतर खड़ा हुआ तूफान
इस जग में इन्सान के दिल को कौन सका पहचान
इसमें ही शैतान छिपा है, इसमें ही भगवान
बड़े गजब का है ये खिलौना इसकी नहीं मिसाल
देख देखकर करे अचम्भा नजर न आता एक भी खम्भा

• • • • •

भजन - 56

उलझा मत दिल बहारों में, बहारों का भरोसा क्या
सहारे टूट जाते हैं सहारों का भरोसा क्या

तमन्ना जो तेरी है फुहारें है जो सावन की
फुहारें सूख जाती हैं फुहारों का भरोसा क्या

दिलासे जो जहां के हैं सभी रंगीन नजारे हैं
नजारे रूठ जाते हैं नजारों का भरोसा क्या

तू इन रंगीन गुबारों पर अरे दिल क्यों फिदा होता
गुबारे फूट जाते हैं गुबारों का भरोसा क्या

तू अपनी अक्लमंदी पर, विचारों पर न इतराना
जो लहरों की तरह विचारों का भरोसा क्या

• • • • •

भजन - 57

उसने मन को जीता है, जो जीते जी मर जाता है।
वो ही मुक्ति पाता है, जो सतगुरू का बन जाता है।।

जगत के कर्मों के बंधन में कर्तापन का अभिमान है,
जीते जी मर जाने का एक साधन ही गुरू ज्ञान है।
देहाध्यास मिट जाता है, जो समदृष्टि हो जाता है।।
मोह–माया के बंधन में फँसकर,
अपने को जिसने नहीं जाना,
सत् और असत् को जाने बिना,
इस जगत को ही सत् है माना।
उपदेश पे गीता के चलकर, अर्जुन कृष्ण बन जाता है।।
भगवान की पूजा बस है यही,
अपने को जिसने जान लिया,
इस आत्म रस के प्याले से मस्ती का जिसने जाम पिया।
इस मस्ती में जो मस्त हुआ, वो मस्ताना बन जाता है।।
ये सारी दुनिया फानी है, हर चीज यहाँ बेगानी है,
ये जिस्म तेरा इक मंदिर है, जिसमें जागती ज्योत नूरानी है।
शमा पर परवाने की तरह,
जो जल–जल कर मरजाता है।।

• • • • •

भजन - 58

उसी रंग में रहना रे बंदे उसी रंग में रहना
जिस रंग में परमेश्वर राखे, उसी रंग में रहना...

वो चाहे तो तख्त बिठा दे, वो चाहे तो भीख मंगादे
मुँह से कुछ नहीं कहना, रे बंदे...

सुख में उसको भूल न जाना, दुःख आवे तो ना घबराना
खुशी–खुशी से सहना, रे बंदे...

भगवत को तू मीत बना ले, स्वांस–स्वांस को
उसका आतम गीत बना ले
ये ही जीवन का गहना, रे बंदे...

तुम हो आतम यह सच जानो,
अजर अमर अपने को मानो
ब्रह्म भाव में टिकना, रे बंदे...

वो जाने तुम क्या जानो, वो भला करे तुम ना मानो
भाणा मीठा मानो, रे बंदे...

कहत कबीर सुनो भाई साधो, साथ कुछ नहीं जाना
सब कुछ यहाँ ही छोड़ना, रे बंदे...

• • • • •

भजन - 59

उनको जग में डर काहे का
जिन्हें सहारा राम का
वो तर जाते भव सागर से
जिन्हें सहारा राम का

जीवन एक पतंग है, उड़ी गगन में जाये
डोर उसे संभाल दे तब वो बचने पाये
जिन्हें आधार ये हुये बस पार वे
नहीं भटके जग में वो बने रूप वो राम का...

वाल्मीकि ने राम को उल्टा ही बोला
डाकू से वो ऋषि बना बदल गया चोला
जिन्हें आधार ये हुय बस पार वे
नहीं भटके जग में वो बने रूप वो राम का...

एक शिला से राम ने चरण लिये थे लगाये
पाप मिटा कर पल में उसके भाग्य जगाये थे
जिन्हें आधार ये हुये बस पार वे
नहीं भटके जग में वो बने वो रूप राम का...

प्रेमी हृदय में नाम की ज्योत जला ले तू
डूब रही है नैया उसको पार लगा ले तू
जिन्हें आधार ये हुये बस पार वे
नहीं भटके जग में वो बने वो रूप राम का...

• • • • •

ए

भजन - 60

एक राम के दो दो रूप मिले
एक राम गुरू एक रामैया
जिसे देख के मन का कमल खिले
एक राम गुरू एक रामैया...एक...

एक सदियों से चुपचाप खड़ा
एक मीठे बोल सुनाता है
सतगुरू बिन उसकी कदर नहीं
सतगुरू बिन नजर न आता है...

अवतार मेरा एक दीपक है
सतगुरू मेरा एक ज्योति है
दोनों के बिना ना काम चले
दोनों की जरूरत होती है...

वो राम नजर तब आता है
जब नजर यहाँ से मिलती है
जो नजर के परदे खोल सके
इस दर वो दवाई मिलती है...

• • • • •

भजन - 61

ऐ मेरे प्यारे गुरू जन्मों से बिछड़े गुरू तुझ पे मैं कुरबान।
तू ही मेरी जिन्दगी तू ही मेरी बन्दगी तू ही मेरी जान।।

गुरू के आंचल से जो आयें उन हवाओं को सलाम
गुरू के मुख से निकली वाणी को मेरा शत–शत प्रणाम
कितनी प्यारी याद तेरी कितना प्यारा तेरा नाम...ज्ञान

मैंने माँगी तुझसे खुशियाँ तूने दिया आतम आनंद
मैं सना था रोग से तूने मुझे निरमल किया
द्वेष अब किससे करूँ सब जगह है तेरी याद

ज्ञान का दीपक सदा मन में मेरे जलता रहे
एक इच्छा न रहे ये भावना बढ़ती रहे
और तो कुछ भी नहीं बस रह गया है तेरा प्यार

.....

भजन - 62

ऐसी करी गुरूदेव दया, मेरा मोह का बंधन तोड़ दिया

दौड़ रहा था दिन रात सदा,
जग के सब कार्य विहारन में
सपने सम विश्व दिखाय,
मेरे चंचल चित्त को मोड़ दिया।...ऐसी

कोई शिव महेश गणेश रटे,
को पूजत पीर पैगम्बर को
सब पन्थ ग्रन्थ छुड़ाकर के,
एक आतम में मन जोड़ दिया।...ऐसी

कोई ढूँढ़त है मथुरा नगरी,
को जाय बनारस वास करे
जब व्यापक वस्तु पहचान लिया,
बस भरम का भान्डा फोड़ दिया।...ऐसी

क्या करूँ गुरूदेव की भेंटा,
न वस्तु दीखे तीनों लोकन में
ब्रह्मानंद समान न होई कभी,
धन मालिक लाख करोड़ दिया।...ऐसी

.....

भजन – 63

एक घड़ी आधी घड़ी आधी ते पण आध रे।
संतन सेती गोष्ठी, जो कीनो सो लाभ रे।।

कबीर मन पंछी भयो उड़–उड़ दह किस जाए।
जो जैसी संगत करे, सो तैसो फल पाए रे।।

कबीर माला काठ की, क्या दिखलावे राम।
हृदय नाम न चेतिए, ये जपनी क्या होए रे।।

कबीर मेरी सिमिरनी रसना ऊपर राम।
आदि जुगादि सगल भगत, तांको सुख बिसराम रे।।

कबीर वैद कहे हौं बड़ा, दारू मेरे वस।
ये तो बस गोपाल के, जब भांवे ले खस रे।।

कबीर वैद मुआ, रोगी मुआ, मुआ सकल संसार।
एक कबीरा न मुआ जिसे कोई न रोवन–हार रे।।

कबीर माया डोलनी, पवन झकोलन हार।
संतन माखन खाइया छाछ पिए संसार रे।।

कबीर कोड़ी–कोड़ी जोड़ते, जोड़े लाख करोड़।
चलती बार न कुछ चले, लई लंगोटी तौर, रे।।

कबीर कूकर राम का, मोतिया मेरो नाम।
गले हमारे जेवरी, जिति खींचे उत जाए रे।।

कबीर चोट सुहेली सील की, लगत लिहो उसास।
चोट सहारे शब्द की, तांहु गुरू मैं दास रे।।

कबीर गूँगा भया बाँवरा, बहरा हुआ है कान।
पाँव ही ते पिंगला भया, मारहि सतगुरू बाण।।

कबीर मैं क्यों चिन्ता करूँ, मम चिन्ते क्या होए।
मेरी चिन्ता हरि करे, मुझे न चिन्ता कोई रे।।

कबीर संगत साधु की, साहिब आवे याद।
लेखे में वो ही घड़ी, बाकी दिन बरबाद रे।।

कबीर कसौटी राम की, झूठा टिके न कोई।
राम कसौटी सो सहे, जो मर जीवा होए रे।।

• • • • •

भजन - 64

एक बार भजन कर ले मुक्ति का यतन कर ले।
कट जाएँगे दुःख सारे हरि का सिमरण कर ले।।

ये चोला मनुष्य तन का हर बार नहीं मिलता,
जो टूट गया डाली से वो फूल नहीं खिलता।
अब वक्त अरे पगले तू नाम भजन कर ले।।

वृथा न गँवा देना ये जीवन की घड़ियाँ,
अनमोल रत्न हैं स्वासों की ये लड़ियाँ।
जिव्हां न चले मुख से तू नाम रटन कर ले।।

कानों से अरे नर तू सुन संतो की वाणी,
हृदय को ठहरा करके बन जा पूर्ण ज्ञानी।
दो दिन की जिन्दगानी कुछ नेक काम कर ले।।

मस्तों की टोली में तू नाम लिखा अपना,
फिर साफ नजर आये दुनिया है इक सपना।
अब गुरू चरणों में तू जीवन को सफल कर ले।।

• • • • •

भजन - 65

ऐ गुरू ऐ गुरू मुझको तेरी कसम
तेरे वचनों पे खुद को मिटा जाएँगे
फूल क्या चीज है, तेरे कदमों पे हम
भेंट अपने सिरों की चढ़ा जाएँगे

सह चुक हैं सितम बहुत माया के हम
अब करेंगे हर इस वार का सामना
रूक सकेगा नहीं कहीं मेरा कदम
चाहे हो खूनी तलवार का सामना
सर पे बांधी कफन, ले लगाए अगन
मौत को भी गले से लगा जाएँगे

तेरी पूजा की थाली में लाए हैं हम
फूल हर रंग के और हर डाल के
कोई ज्ञानी यहाँ, कोई योगी यहाँ
कोई त्यागी यहाँ, कोई वैरागी यहाँ
नाम कुछ भी सही पर लगन एक है
ज्योति से ज्योति दिल की जगा जाएँगे

जब भी आँधी उठे तेरे जीवन में
ज्ञान वालों तुम आँसू बहाना नहीं
पर विषय भोग की आग में जब जलो
उस घड़ी तुम गुरू को भुलाना नहीं
ज्ञान ज्योति से मन का अंधेरा गया
हम कदम से कदम को बढ़ा जाएँगे

• • • • •

भजन – 66

ए दादा यही मांगे हम, करना सत्गुरू तू हम पे रहम
सत्संग में रहे, सत्संग में पले, सत्संग से न बहके कदम

तेरी संगत बिना जिन्दगी, बड़ी सूनी अन्धेरी पड़ी
मिले संगत का फल खिले दिल का कमल
देखें जीवन की बगिया हरी
बढ़ती जाए लगन दम व दम प्यार तुझसे कभी न हो कम
सत्संग ...

जग है काजल की ये कोठरी, जाने कितने दुःखों से भरी
उसमें वो ही बचे जो तेरे दर पे रहे
धूल चरणों की जिनको मिली
संग सन्तों का पाऊँ सनम करूँ सजदा, सवाँरु जनम
सत्संग ...

प्यार ही प्यार है हर जगह तू तो सागर ही है प्यार का
नहीं पुण्य पाप हो मनवा साफ हो
सत्य का ही हो हमको पता
प्यार से दूर होते हैं गम, हर परेशानी होती खतम।

• • • • •

भजन – 67

ऐसी निगाह बना दे तुझे हर जगह मैं पाऊँ
पल भर भी तू न बिसरे प्रभु गीत तेरे गाऊँ

तेरे नाम का ढिंढोरा सारे जग ने सुन लिया है
कोई खार ले गया है मैंने फूल चुन लिया है
इस बाग से बिछुड़ कर, बाहर कहीं न जाऊँ

जो बोल मुख से निकले, निकले तेरा तराना
मैं समझूं या तू समझे, समझे न ये जमाना
मुझे जग से क्या है लेना, प्रभु तुझको मैं निभाऊँ

तेरे प्रेम की नजर ने मेरी जिन्दगी को जीता
तेरे नाम का प्याला, रहूँ रात–दिन मैं पीता
तन–मन व धन है तेरा कही ये भूल न जाऊँ।

• • • • •

भजन – 68

एक झोली में फूल भरे हैं
एक झोली में कांटे रे, कोई कारण होगा
हां रें कोई कारण होगा
तेरे बस में कुछ भी नहीं,
ये तो बांटने वाला बांटे रे
कोई कारण होगा, हां अरे..
पहले बनती हैं तकदीरें,
फिर बनते हैं शरीर–२
ये सांई की कारीगरी है
तू है क्यूं गंभीर अरे कोई...
नाग भी डस ले तो मिल जाए
किसी को जीवन दान
चींटी से भी मिट सकता है
किसी का नाम निशान...
धन का बिस्तर मिल जाए पर
नींद को तरसे नैन
कांटो पर सोकर भी आए
किसी के मन को चैन, अरे...
सागर से भी बुझ ना पाए
कभी किसी की प्यास
कभी एक ही बूँद से हो जाती
है पूरी आस, अरे...

• • • • •

ओ

भजन – 69

ओ मेरे सतगुरू, दयाल सतगुरू क्या तूने मुझको नहीं दिया है।
अखुट खजाना देकर के कहते, कि मैंने कुछ भी नहीं दिया है।।

जहाँ ने था मुझको ठुकुराया, तुम्हीं ने मुझको गले लगाया।
विकास सहित इस देही को तुमने, अपने प्यार से भुला दिया है।।

मन ने मुझको माया में फँसाया, उसी से तुमने ब्रह्मज्ञान कराया।
जो राज्य करता था पहले मुझपर, उसी को नौकर बना दिया है।।

करूँ शुक्रिया किस जुबां से तेरा, तुम्हीं ने काटा आवागमन है मेरा।
ज्ञान की ज्योति जला के तुमने, अंधेरा सारा मिटा दिया है।।

स्वर्धम का पालन तुमने कराया, अशोक रहना मुझे सिखाया।
बेगमपुर की शहनशाही देकर, आनंद स्वरूप बना दिया।।

जन्म–जन्म के मेरे साथी, मैं ना समझा तेरी बाती।
तेरे मेरे का भेद मिटाके, अपने में मुझको मिला दिया है।।

• • • • •

भजन - 70

ओ मस्तों की महफिल में आके तो देखो
जरा खुदी को अपनी मिटाके तो देखो

भूलेंगे नशे माया के सारे,
जरा गीत प्रभु का गाके तो देखो।

बैठा हूँ दिल में तेरे ओ प्रेमी,
जरा सिर को अपने झुकाके तो देखो।

लहरें ही बन जाएँगी फिर किनारा,
तूफां से जरा टकराके तो देखो।

खुलेंगे भंडार आनन्द के फिर,
ओ सतगुरू को अपना बनाके तो देखो।

.....

भजन - 71

ओम् है जीवन हमारा, ओम् प्राण आधार है।
ओम् है कर्ता विधाता, ओम् पालन–हार है।।

ओम् है दुःख का विनाशक, ओम् सर्वानंद है।
ओम् है बल तेजधारी, ओम् करूणानंद है।।

ओम् सबका पूज्य है, हम ओम् का पूजन करें।
ओम् ही के जाप से हम, शुद्ध अपना मन करें।।

ओम् के गुरू मंत्र जपने से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन प्रति दिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन।।

ओम् के जप से हमारा, ज्ञान बढ़ता जाएगा।
ओम् का ये जाप हमें मुक्ति तक पहुँचाएगा।।

.....

भजन - 72

ॐ ही शक्ति ॐ अमृत है।
ॐ विधाता ॐ सत् चित् है
ॐ ही स्थिर है ॐ गुरू है
ॐ अमर है ॐ ही तू है
ॐ अक्षर बोल, मन में अमृत घोल, ॐ अक्षर बोल
मूंद ले आँखे बाहर तू, भीतर आँखे खोल
उठ माया के सपने से
मन में अमृत घोल ॐ अक्षर बोल...
काम क्रोध जन में माया से
भेद भाव जनमें काया से
करम न कर ये जान के तू
बीज न बो अभिमान के तू
कड़वे बोल न बोल ॐ अक्षर बोल...
तू ही नहीं तो तेरा सब कुछ क्या
तू ही नहीं तो सुख दुःख क्या
इन्द्रजाल है सब संसार
सत्य रूप तेरा प्यार ही प्यार
ज्ञान है ये अनमोल ॐ अक्षर बोल...
करता रहे रे जतन ऐसा
हो जाए मन रे मगन ऐसा
हो जा एक प्रभु के संग
होगी नहीं ये समाधि भंग, ब्रह्मानंद में डोल ॐ अक्षर बोल...

• • • • •

भजन - 73

ओ मंदिर जाने वाले बता कुछ तूने जीवन बदला है।
फेर-फेर माला के मनके अपना भी मन बदला है।।

क्या तूने प्रभु-प्रेम के रस से मन मंदिर उजियारा किया,
क्या तूने जीवन की डोरी प्रभु चरणों में सौंपी है।
क्या तूने अपनी खुशबू से जग का आंगन सींचा है।।

क्या तूने समझा कि तेरा राग प्रेम में बदला है,
क्या तुझे औरों का दुःख-सुख अपना दुःख-सुख लगता है।
कब दीनों का मित्र बना दीनों का लघुपन बदला है।।

निर्धन या धन वाला है, मालिक या मजदूर है,
किस्तम है कदमों में तेरे, या तू खुद मजबूर है।
क्या तूने संसार के धन से, राम रतन धन बदला है।।

अहंकार गया तेरा और राग द्वेष भी छूटा है,
प्यार किया सच्चे सांई से बाकी झगड़ा झूठा है।
बना फिरा निर्दोष कि तूने करम का साधन बदला है।।

• • • • •

भजन - 74

ओ मनवा सत्गुरू के घर आ जा मुक्ति पाएगा
माया से हटाए, प्रभु से मिलाए, ब्रह्म बनाएगा।
ओ ...

करके परिश्रम सत्गुरू ने ज्ञान का पाठ सुनाया
कृष्ण रूप में आकर, हमें गीता का ज्ञान सुनाया
है जग सपना, कुछ भी न अपना, यह समझाएगा।
ओ ...

राग द्वेष को मिटाकर, समता का भाव जगाए
सारे विषयों से हटाकर, शुद्ध स्वरूप बनाए
है जग स्वामी अर्न्तयामी दरश दिखाएगा।
ओ ...

अहंकार की वेदी पर, प्यार के पुष्प खिलाए
आतम-ज्योति जगाकर, ॐ में हमको टिकाए
सत्गुरू प्यारा जग से न्यारा, हमें बनाएगा।
ओ ...

• • • • • •

भजन - 75

ओ मनवा छिप-२ कर के तीर चलाया न करो
मैं अरज करूँ विषयों की गली जाया न करो

छिप छिप आके वाण चलावे पता नहीं कब आता है
पल में आये पल में जाए लम्बी दौड़ लगाता है
नटखट अपनी टेढ़ी चाल चलाया न करो।
मैं ...

बड़े गजब की चाल चले रे देखन में भोला-भाला है
बाहर से दे बड़ी सफाई, अन्दर से तू काला है
मन मस्ताने कूद-फांद मचाया न करो।
मैं ...

ओम् नाम रस पियो दिवाने छके रहो दिन रैन सदा
काम क्रोध ईर्ष्या को त्यागो बोलो मीठे बोल सदा
राग द्वेष की अग्नि में जलाया न करो।
मैं ...

संत कहे भूल करके भी मन का विश्वास नहीं करना
क्षण-भंगुर ये काया तेरी भोग विलास नहीं करना
संत संग आतम चर्चा से घबराया न करो।
मैं ...

• • • • •

भजन - 76

ओ सतगुरू प्यारे ने कितना बचाया है।
हँसने लगी जिन्दगी मन मुस्कराया है।।

दिव्य दृष्टि देकर के अंधकार मिटाया है।
नजरें नूरानी से स्वरूप लखाया है।।

वो अवगुण नहीं देखे गले से लगाया है।
अनमोल खजाना देकर के बादशाह बनाया है।।

ओ गिर गए थे हम जो गुरू ने उठाया है।
विषयों के कीचड़ से गुरू ने बचाया है।।

ओ मुरझाया मन का चमन गुरू ने खिलाया है।
भूल गए थे हम जो हँसना सिखाया है।।

ओ मन पर जन्मों से, गफलत का पर्दा था।
दुई का परदा हटा करके, नींद से जगाया है।।

ओ संसार सागर से, गुरू ने तराया है।
कैसे मैं भूलूँ रहमत को, तन मन चमकाया है।।

• • • • •

भजन - 77

ओ कैसे न छलके प्यार जब तू ही तू है
जब तू ही तू है तब निज सुख है–२

कहां द्वैत रहे कहां द्वेष रहे
फेरूँ नजर जहाँ पाऊँ तुझे मैं वहां–२

ब्रह्माकार वृत्ति तेरे दर्शन से
प्यार सबको मिले पर गम न मिले–२

ये जगत तेरा ही एक साया है
तेरे प्यार ने ये समझाया है–२

सुख सागर है तेरा ये संसार
दिल नजर में जो तेरी याद रहे–२

प्रभु तू है अनन्त तेरी महिमा अनन्त
रहे शरण में हम दिल करता है–२

• • • • •

भजन - 78

और नहीं कुछ तुमसे कहना
सतगुरू मेरे–३ मुझमें रहना

दीप नहीं तो कैसी ज्योति
सीप नहीं तो कैसा मोती
चांद बिना क्या चांदनी होती–२
ऐसे ही तुमसे हम बने है ना... सतगुरू मेरे...

कुछ देखूं तब तुमको देखूं
हर घट में बस तुमको देखूं
जब देखूं तब तुमको देखूं–२
और न देखे कुछ ये नयना...

सागर जैसा प्यार तुम्हारा
हम हो जाये इसकी धारा
ना कोई तुमसा मीत हमारा–२
तुमसे अलग होकर नहीं जीना...

सीता के बिन राम अधूरा
राधा के बिन श्याम अधूरा
एक अकेला नाम अधूरा–२
तुम ही कहना ये सच है ना...

• • • • •

क

भजन - 79

कबीरा बिगड़ गयो रे–२
सुनो मेरे भाई रे, देखो भाई रे।।

दही के संग में दूध भी बिगड़यो।
बिगड़–बिगड़ वो माखन भयो रे।।

पारस के संग में लोहा भी बिगड़यो।
बिगड़–बिगड़ वो तो सोना भयो रे।।

संतन के संग में हम भी बिगड़यो।
बिगड़–बिगड़ मैं तो संत भयो रे।।

• • • • •

भजन - 80

क्यों जी कहते हो भगवान आते नहीं।
सच्चे मन से उन्हें तुम बुलाते नहीं।।
क्यों जी कहते हो भगवान खाते नहीं।
बेर शबरी के जैसे खिलाते नहीं।।
क्यों जी कहते हो भगवान सोते नहीं।
मात यशोदा के जैसे सुलाते नहीं।
क्यों जी कहते हो भगवान रमते नहीं।
गवाल बालों जैसे रमाते नहीं।।
क्यों जी कहते हों बंसरी बजाते नहीं।
आप प्रेम के आँसू बहाते नहीं।।
क्यों जी कहते हो भगवान सुनते नहीं।
दुःख अर्जुन के जैसे सुनाते नहीं।।
क्यों जी कहते हो ज्ञान देते नहीं।
आप विषयों से उपराम होते नहीं।।
क्यों जी कहते हैं संकट मिटाते नहीं।
आप विश्वास दिल में जगाते नहीं।
क्यों जी कहते हैं भगवान दर्शन देते नहीं।
ध्यान ध्रुव के जैसे लगाते नंहीं।।

• • • • •

भजन - 81

कई जन्मों से बुला रहा है
कोई तो रिश्ता जरूर होगा
सांई को तू ही समझ न पाया
तो इसमें तेरा कसूर होगा...
निकल पड़े हैं सांई के बन्दे
किसी उजाले की आरजू में
करीब आएगा सांई तेरे
तू जितना दुनिया से दूर होगा...
पलक झपकने से खत्म होगी
जगत के ऐशो तरफ की महफिल
करीब आएगा सांई तेरे
तू जितना दुनिया से दूर होगा...
वो पुण्य में भी, तो फूल में भी
वो आग में भी वो धूल में भी
वो अब तलक तुझे नजर न आया
तेरी नजर का कसूर होगा...
वो अपने भक्तों को है दीवाना
उसे भी तो चाहिए ठिकाना
तेरी इबादत जो बेगरज है
तो खुद ही तेरे वजूद होगा...

• • • • •

भजन - 82

किया मैंने संतों से व्यापार
किया मैंने सतगुरू से व्यापार
किया मैंने साधों से व्यापार...
हौमै देके मैंने नाम लिया है
चिन्ता दे आराम किया...
मैं मैं दे के मैंने तू तू लिया है
हाय हाय दे वाह वाह...
झूठे धन के बदले मिला है
धन संतोष अपार...किया...
भय देके मैंने ली निर्भयता
दात देके दातार...किया...
एक से प्यार करके मैंने जीता
जगत सारे का प्यार...किया...
छोटे घर के बदले मिला है
घर सारा संस...किया...
पिछला घाटा पूरा करके
नफा पाया है अपार...किया...
सिर देके मैंने साजन पाया
मुफ्त में मुक्ति द्वार
किया मैंने...

• • • • •

भजन - 83

कितने ऊँचे भाग्य हमारे हमने सतगुरू पाया है
जलती हुई इस दुनिया में मिली ये शीतल छाया है।

भरे ये दुख ही दुख जिसमें ये ऐसी दास्तां थी
मिला न जब तलक ये दर परेशां जिन्दगी थी
कोई मिला मसीहा जिसने सारा रोग मिटाया है।

कोई गुणवान या निर्गुण सभी अपनाए जाते हैं
गुरू सागर दया का है दया बरसाए जाते हैं
दुनिया ने जिसको ठुकराया गुरू ने गले लगाया है।

यहाँ बेचैन रूहों को, सबर सन्तोष मिलता है
है जो बेहोश जन्मों से, उन्हें भी होश मिलता है
ले जाए वो रहमत जिसने दर पर शीष झुकाया है।

कलम लिख-लिख के हारी है जुवां गा-गा के हारी है
जमीं आकाश से ऊँची गुरू महिमा तुम्हारी है
गुरू तेरी रहमत से ये ज्ञान हमने पाया है
जलती ...

• • • • •

भजन - 84

किसी नाल राग नहीं, किसी नाल द्वेष नहीं
आत्म आनंद मैनूं, कोई भी कलेश नहीं

सत् चित आनंद हूँ फिर किसी आगे हाथ जोड़ूँ
सब घट वसदा प्रीतम, किस नाल मुख मोड़ूँ
किसका तो मेरे साथ बखेडा और द्वैत नहीं
आत्म आनंद...

कूड़ किस नाल बोलँ, मेरा किसे नाल वैर नहीं
सारे मेरे अपने हैं कोई मेरा और नहीं
सारा यह जहान मेरा, अपना तो देश है आत्मा
आत्म आनंद...

हाकिम बनके किस पर हुकुम चलाऊँ मैं
दीन बनके किस आगे हाथ न फैलाऊँ मैं
झूठा तो संसार इस में तो रहना हमेशा नहीं
आत्म आनंद...

• • • • •

भजन - 85

किसी के काम जो आवे
उसे इन्सान कहते हैं उसे भगवान कहते हैं।
पराया दर्द जो अपनाये उसे भगवान कहते हैं उसे...

ये जीवन एक उलझन है कहीं धोखा कहीं ठोकर
कोई हँस-हँस के जीता है कोई जीता रो-रोकर
जो गिरकर भी संभल जाए उसे इंसान कहते हैं
उसे भगवान कहते हैं...
कभी धनवार है इतना कभी इंसान निर्धन है
कभी दुःख है कभी सुख है इसी का नाम जीवन है
जो मुश्किल में न घबराए उसे भगवान इंसान कहते हैं
उसे भगवान कहते हैं...
अगर गलती रूलाती है तो वो राह भी दिखाती है
मनुष्य गलती का पुतला है अकसर वो हो ही जाती है
जो गलती को न दुहराये उसे इंसान कहते हैं
उसे भगवान कहते हैं...
अकेले में जो खा खाकर सदा गुजरान करते हैं
वैसे तो जीने के लिए पशु भी पेट भरते हैं
जो तन मन धन को लुटाए उसे इंसान कहते हैं
उसे भगवान कहते हैं...

• • • • •

भजन - 86

किये जा राम का सुमिरण अगर मुक्ति को पाना है
अरे बाबा ये वो घर है जो इक दिन छोड़ जाना है...

लगा कर प्रीत विषयों से उम्र वृथा गवाँते हो
मिला अनमोल ये हीरा जो फिर ना हाथ आना है...

महल न साथ जाएँगे न जाए बाग बगीचे
कोई ना साथ जाएगा ये मतलब का जमाना है...

तोड़ संसार के बंधन लगाले प्रीत सुमिरण से
बिना भगवान के बंदे न तेरा कोई ठिकाना है...

जो रिश्तेदार हैं तेरे जिन्हों से तेरी उलफत है
उन्हीं के घर की अग्नि से जिसम तेरा जलाना है...

अवस्था जा रही तेरी करले राम का सुमिरण
तेरे कर्मों का ये परचा तेरे ही पेश आना है...
किये जा राम का सुमिरण...

• • • • •

भजन - 87

कड़वे बोल न बोल जी सुख पाना है
सदा तोल के बोल जो सुख पाना है

जिव्हा प्रभु ने नरम बनाई, नरमी में हैं तेरी भलाई
सदा नरम से बोल जो सुख पाना है

मीठे गीत सुनाते रहना, मन सबका हर्षाते रहना
लगे न कुछ भी मोल, जो सुख पाना है।

मन में पहले तोल तू प्यारे फिर वाणी से बोल तू प्यारे
अमृत रस तू घोल जो सुख पाना है।

बोली में हो न खेद प्यारे, किसी के दिल को न छेद प्यारे
मीठी बोली बोल जो सुख पाना है।

कड़वे बोल में सदा बुराई, शत्रु बने मित्र और भाई
सदा तोल के बोल जो सुख पाना हैं

गीता सुना तू सदा ही चुनकर, चित सबका प्रसन्न हो सुनकर
सच कह दो दिल खोल जो सुख पाना है।

• • • • •

भजन - 88

कुछ गिनती की स्वासें हैं
दो पल का गुजारा है
बिन तेरे कुछ भी नहीं
सब झूठा सहारा है...

तू एक खिलाड़ी है इंसान खिलौना है
सब खेल तमाशा है
हँसना है या रोना है ढलती हुई परछाई
देती यह इशारा है...

बचपन है जवानी है मजबूर बुढ़ापा है
जीवन जिसे कहते हैं वो कई रंग बदलता है
बीता हुआ हर पल–पल देता यह इशारा है
बिन तेरे...

जब तक तो नचाएगा नाचेगी कठपुतली
सब खेल खत्म होगा डोरी जिस दिन टूटी
लहरों की तरह फानी जीवन की यह धारा है
बिन तेरे...

• • • •

भजन - 89

कुछ ऐसी करनी कर प्यारे
ये जन्म न बारम्बार मिले
माया तो बहुत मिल जाएगी
गुरू ऐसा न बारम्बार मिले...
इक–इक वसतु से प्यार किया
किया प्यार कभी न ईश्वर से
तू जन्म–जन्म से बिछड़ा है
अपने ही पिता परमेश्वर से
मुक्ति तेरे द्वारे बैठी है
जो सतगुरू से इक बार मिले...
क्यूँ भ्रम ने तुझको घेरा है
कुछ तेरा है ना मेरा है
सामान बटोरा बरसों का
जग चिड़िया रैन बसेरा है
तेरा क्या है तू क्यों सोच रहा
चाहे जीत मिले या हार मिले...
गुरू की करूणा अब तुझपे हुई
जो साथ गुरू का पाया है
गुरू न कृपा से मन में तेरे
ये ज्ञान का दीप जलाया है
खुद अर्जुन को मुक्ति देने
गुरू कृष्ण का बन अवतार मिले...

• • • • •

भजन - 90

कुछ भी न माँगू मैं भगवान
तुझको भी न माँगू मैं।
जो देखूँ तुझे परमात्मा
यो द्वैत आत्मा न मागूँ मैं।

आत्मस्वरूप है तू मेरा
और मैं तेरा ही आत्मस्वरूप
फिर कैसी ये तू और मैं
जब दोनों का है एक ही रूप।
ओहम्... ।।१।।

तू है मेरे हर कण में
और मैं हूँ तेरा ही एक कण
है न कभी सूरज से अलग
तेरे ही कण से बनी किरण।
ओहम्... ।।२।।

बिन सागर के बूँद बने ना
ना बिन बूँद के है सागर
भरी है तेरी बूँद-बूँद से
हर एक आत्मा की गागर।
ओहम्... ।।३।।

माया के सपने में तू दूजी
जागृत में एक मैं ही अकेला
अन्तर में जो पाऊँ मैं तुझको
शून्य हुआ सृष्टि का मेला।
ओहम् ।।४।।

इतना मुझे अपने में समा ले
कि कुछ भी नहीं बस आत्माबनूँ
देखूँ समाया कण कण में
मैं सत्यरूप परमात्मा बनूँ।
ओहम् ।।५।।

• • • • •

भजन – 91

कुछ न बिगड़ेगा तेरा सद्गुरू शरण आने के बाद।
हर खुशी मिल जाएगी कदमों में झुक जाने के बाद।।

जब तलक है भेद मन में, कुछ नहीं बन पायेगा।
रंग लायेगी ये भक्ति भेद मिट जाने के बाद।।

प्रेम के मंजिल के राही डर कभी पाते नहीं।
बीज फलता है सदा ही मिट्टी में मिल जाने के बाद।।

फूल से पूछो कि उस पर कैसे छायी है बहार।
कब तलक काँटों पे सोया डाल पर आने के बाद।।

देख कर काली घटायें ऐ भँवरे मत हो उदास।
बंद कलियाँ भी खिलेंगी रात ढल जाने के बाद।।

प्यार कर निष्काम निर्मल निश्चय कर व आतम का।
सूखी बगिया भी खिलेगी ऋतु बदल जाने के बाद।।

• • • • •

भजन – 92

कुछ ऐसे सद्गुरू होते हैं जो मंजिल तक पहुँचाते हैं।
जो सतगुरू का बन जाता है, वो जीवन भर सुख पाता है।

दुनिया का झूठा नाता है, दो दिन में ही उड़ जाता है।
ये सच का ऐसा नाता है, जो जीवन भर का सहारा है।
बिगड़ी हुई राहें जीवन की
सद्गुरू संग बन जाती है।।

ये ज्ञान का दीपक जलते ही अंधकार न कोई रहता,
और प्रेम का दीपक जलते ही जीवन मंदिर बन जाता है।
जिस दिल में प्रेम के बीज उगें,
वो एक दिन फल हो जाते हैं।।

जब से देखा है सद्गुरू को अब और न कोई दिखता है,
अज्ञान का पर्दा हटते ही जीवन जगमग बन जाता है।
जिस–जिस पे गुरू की नजर पड़ी
वो दिल दिलवर बन जाता है।।

• • • • •

भजन - 93

कर अपना कल्याण सत्संग में आकर

सत्संग है एक तीरथ भाई, मन का मैल जो धोए भाई
कर ले तू स्नान सत्संग में आकर

संतन दा संग खान रत्न दी, होवे प्राप्ति भक्ति धन की
बन तू भी धनवान सत्संग में आकर

सत्संग में लाभी अनेक, होवे सत्य असत्य विवेक
मिल जाए गुरू से ज्ञान सत्संग में आकर

वाल्मीकि नारद आदि जो, सत्संग की महिमा कर गए जो
नीच भी हुए महान सत्संग में आकर

प्रेमी रंग चढ़ावे सत्संग, काग से हंस बनावे सत्संग
पशु बने इंसान सत्संग में आकर

• • • • •

भजन - 94

कोई जब राह न पाए गुरू दर आये
गुरू ही राह दिखाये, गुरू ईश्वर अवतार

गुरू मुख से ज्ञान मिला, जीने का अन्दाज मिला
ज्ञान की डगर पे चलेगा, होगा उद्धार
गुरू ईश्वर अवतार ...

धन्य हुए गुरू पावन मिला, सतगुरू का सत्संग मिला
गुरू ही दिखाए प्रभु का द्वार
गुरू ईश्वर अवतार ...

पूजा नहीं प्यार करो, अन्दर में गुरू शब्द भरो
गुरू ही लगाए बेड़ा उस पार
गुरू ईश्वर अवतार ...

• • • • •

भजन - 95

कौन कहता है कि दीदार नहीं होता है।
आदमी खुद ही तलबदार नहीं होता है।

तुम उसे प्यार करो वो न तुझे प्यार करे...
बेखबर इतना तो करतार नहीं होता है...
आदमी खुद ही...

तुम पुकारो तो सही हृदय से उस प्रीतम को
देखना कैसे वो साकार नहीं होता है...
आदमी खुद ही...

जब बुलाते हैं भक्त अपनी खुदी को मिटाकर
तो फिर भगवान से इन्कार नहीं होता है...
आदमी खुद ही...

तू जब अपनी खुदी को नहीं मिटाता है
तो फिर भगवान का दीदार नहीं होता है...
आदमी खुद ही...

• • • • •

भजन - 96

कलयुग विच तेरा अवतार हो गया,
सोहने स्परूप अन्दर, मोहने रूप अन्दर।
दुखी जीवां उते तेरा उपकार हो गया,
सोहने स्परूप अन्दर, मोहने रूप अन्दर।

न्यारी जोति जगत विच आई ए,
त्रिलोकी विच धूम मचाई ए।
कोने–कोने विच तेरा उपकार हो गया,
सोहने स्परूप अन्दर, मोहने रूप अन्दर।

बैठे प्रेम दे भण्डारे खोल के,
देन्द्र श्रद्धा दे, भाव नाल तोल के।
प्रेम भक्ति वाला सच्चा व्यापार हो गया,
सोहने स्परूप अन्दर, मोहने रूप अन्दर।

शोभा सुन जीव शरण विच आन्दे,
पान्दे दर्शन ते खुशियाँ मनांवदे।
कौड़ी छॅड के हीरे दा व्यापार हो गया,
सोहने स्परूप अन्दर, मोहने रूप अन्दर।

• • • • •

भजन - 97

कहें किससे सुनायें क्या चखा जिसने वो ही जाने।
चाहे कोई कहे ज्ञानी या पागल ही भले माने।।

ये चकमक यों न जलती है न ज्योति यों दमकती है,
बहुत दिन की पड़ी आदत न बातों से बदलती है।
जो सिर रखता हथेली पर, तो गाता जंग के गाने।।

मेरे गुरूदेव ने मुझको पिलाया जाम इस रस का,
भरा भंडार था जिसमें दिखाया मार्ग उसी घर का।
महक उसकी नशा उसका पीया जिसने वो ही जाने।।

इन लोगों को जमाने की बहारों में मजा आता,
हमें तो दिल की दरगाह में भी दिखता है वो ही प्यारा।
कि जिसकी रोशनी हरदम लगी इस जग को चमकाने।।

• • • • •

भजन - 98

कबीरा तेरी कोठरी गल कटियन के पास।
जो करेगा सो भरेगा तू क्यों भयो उदास।।

कुछ लेना न देना मगन रहना–३
पाँच तत्व का बना है पिंजरा–२
जामे बोले है मेरी मैना–२

गहरी नदिया नाव पुरानी।
खेवटिया से मिले रहना।।

तेरा साहिब है तुझ माँही।
सखी खोल के देख नयाना।।

कहत कबीरा सुनो भई साधो।
गुरू के वचनों से लिपट रहना।।

• • • • • •

भजन - 99

करो न शिकायत, करो न पुकार।
सदा ही शुकर कर शुकर में गुजार।।

हर हाल में रहना राजी सदा,
होगा वही जो तेरे भाग्य में लिखा।
यही सोच कर दिन धैर्य में गुजार।।

सुख और दुःख में कर दिल को बड़ा,
हारा जो हिम्मत न आगे बड़ा।
हिम्मत है दिल में तो बेड़ा है पार।।

लिखा है जो प्रभु ने होगा जरूर,
दुनिया हँसेगी जो करेगी गिला।
यही होगा बेहतर दिन सबर में गुजारा।।

• • • • •

भजन - 100

कर बंदे विश्वास रे
मथुरा काशी भटक रहा क्यों
प्रभु है तेरे पास रे...।

बैठ के गंगा जी के किनारे,
पीता नहीं गंगा जल प्यारे
कैसे बुझेगी प्यास रे...।

हिरण की नाभी में कस्तूरी,
समझ न पाए है मजबूरी
कर न सके प्रयास रे...।

मोह का पर्दा दूर हटा कर,
तनिक प्रभु का नाम जपा कर
रख मिलन की आस रे...।

ज्ञान की आँखे खोल जरा तू,
फिर प्रीतम का दर्शन पा तू
मन मंदिर में निवास रे...।

• • • • •

भजन - 101

कन्हैया को एक रोज रोकर पुकारा।
मैं जैसा भी हूँ प्रभु हूँ मैं तुम्हारा।।

वो बोले कि साधन तुमने किया क्या
मैं बोला कि साधन से किसको है तारा...।

वो बोले कि दुनियां में तुमने किया क्या
मैं बोला कि अब भेजना मत दुबारा...।

वो बोले कि परेशान हूँ तेरी बहस से
मैं बोला कि कह दो तू जीता मैं हारा...।

वो बोले कि जरिया तेरा क्या है मुझ तक
मैं बोला कि दृग 'बिंदु' का है, सहारा...।

• • • • •

भजन - 102

क्यों दिल को फंसाये तू, ये देश है बेगाना
सपने की है सब रचना, धोखा न कहीं खाना।

जीवन तेरा जैसे इक बुलबुला पानी का
नहीं कुछ भी भरोसा है तेरी जिन्दगानी का
कोई न समझ पाये कुदरत का ये अफसाना।

नश्वर है ऐ प्राणी सारे सामान यहां
आया है फकत तू तो बनके मेहमान यहां
बेशक प्रयोग में ला पर दिल नहीं अटकाना।

जो रिश्ते बनाए हैं तुझे अन्त रूलाएंगे
पड़े संकट जब भी कोई वह नजर चुराएंगे
गुरू नाम ही आखिर है काम तेरे आना।

यहां काल और माया ने ऐसा खेल रचाया है
गुरू किरपा बिना प्राणी कोई छूट न पाया है
माया जाल कटाने को गुरू शरण में आना है।

• • • • •

भजन – 103

कर्ता के हाथ हजार
तू काहे करने चला
होगा वही जो रचा
मन मानी काहे करना चला ...

संध्या ने है रंग बिखेरे
रात अंधियारी झिलमिल तारे
सारी सृष्टि है उसकी कला
तू काहे रंगने चला ...

माटी रौधी तन को संवारा
प्राण है डाले जीव बनाया
घट तोड़े और जोड़े वही तू काहे गढ़ने चला ...

दान है सारा एक है दाता
पंख पखेरू सब को खिलाता
नहीं अब तक किसी को भूला तू काहे देने चला ...

• • • • •

भजन – 104

कैसे झूमें न हम दिलों जान से
खुदा पाया है हमने ईमान से

पाके खुदा की एक नजर को
जीवन चमका जैसे सूरज हो
हो ऽऽ पहुंचे–२ जीवन के लक्ष्य निशान पे ...

उसकी नजर में ऐसी कशिश है
संशय भ्रम यूं भाग चले हैं
हो ऽऽ जैसे–२ तीर चले हैं कमान से ...

रहमतों का तू है भंडारा
गल्ती किन्तु हो न दोबारा
हो ऽऽ उसे बनायेंगे तेरे ज्ञान से ...

प्यारे सतगुरू ऐसे हमारे
बंधन काटे गिन–गिन सारे
हो ऽऽ देखो करूणा निधि भगवान को ...

• • • • •

ख

भजन - 105

खोना कभी नहीं खोना मनुष्य जनम को
यूँ नहीं खोना, नहीं खोना
पाना, मंजिल को पाना,
पाके उसी में तुम खो जाना...जाना

जीवन के हर मोड़ पर जिस को सच का साथ है
दुःख सुख में वो समान है मंजिल उसके पास है
दुनिया के झूठे सपनों में,
तुम समय कभी नहीं खोना...खोना

प्रेम जहाँ भगवान वहाँ, यह तो सच्ची बात है
अपने प्रियतम के बिना जीवन यह बेकार है
हर दम हर पल प्रभु प्रेम में,
तुम नयनों को भिगोना...खोना

सच में छिपा एक राज है चाबी गुरू के पास है
श्रद्धा से जो आयेगा, आनन्द वो ही पायेगा
जब तक न हुआ तेरा प्रभु से मिलन
सुख से कभी–नहीं सोना...खोना

• • • • •

भजन - 106

खुद को जो मिटाया तूने, फिर हमें बनाया है
आज हम सबके दिल में, तू ही तू समाया है।

मंजिल को पाया हमने तेरे इक इशारे से
डूबते हुओं को तुमने लगाया किनारे से
भुला ना सकेंगे हरगिज प्यार तेरा पाया है
आज हम सबके दिल में तू ही तू समाया है।

मिथ्या जग से मन को मोड़ा नूरानी नजारे हैं
जुड़ गये जो सच्चे सुख से हम सब सत्य के सहारे हैं
दीप जो जलाया तूने अन्धेरा मिटाया है।

प्रेम का रंग सच्चा फिर इस जहां में यूँ फैले
साफ हो जाये दिल सारे जो ये जन्मों से मैले
आज अपने दिल में ना हो शिकवा न शिकायत है।

गा रहा हूँ इस महफिल में आपकी मोहब्बत है
आज हूँ मैं जो कुछ भी वो आपकी इनायत है।

• • • • •

भजन - 107

खुश–खुश बैठे हो जरूर कोई बात है,
पूरा गुरू पास है जी सच्चा गुरू पास है।

दुनिया के झंझटों में बात ऐसी हो गई,
सुध बुध खो गयी मैं सुध–बुध खो गई,
गुरू ने ललकार किया शेर तेरी जात है।

गुरू शरण आय के मैं ब्रह्म ही हो गयी,
सारे दुःख खो गई मैं सारे दुःख खो गई,
जनम मरण नर्क स्वर्ग नहीं भय की बात है।

• • • • •

भजन - 108

खुशी दो जहां की मिलेगी यही से
लिये जाओ भक्तों गुरू की आशीषें
ये रहमत न जग में मिलेगी किसी से
लिये जाओ भक्तों गुरू की आशीषें

ये मुस्कान मीठी ये प्यारी सी थपकी
मिले जिसको जागी है तकदीर उसकी
रिझालो–रिझालो इन्हें बंदगी से... लिये जाओ...

अगर ये दयालु नजर डाल देगा
तो सर से बलाये सभी टाल देगा
मिटेंगे अन्धेरे–२ सभी जिन्दगी के... लिये जाओ...

श्रद्धा की बाती दिलों में जलाकर
भक्ति के रंग में चुनरिया रंगाकर
गुरूदर पे रहना–२ सदा सादगी से.. लिये जाओ...

मेहरबान है ये दयावान है ये
अंग–संग प्रभु की पहचान है ये
गीता श्याम हमको–२ मिला सुख तुम्हीं से... लिये जाओ...

• • • • •

ग

भजन - 109

गाये जा गाये जा गुरू शुक्रना गाये जा।
पायेगा–पायेगा मन साचा सुख पायेगा।

गुरू के बगैर, दिशाहीन चल रहे थे।
किसी ने नहीं जगाया अन्धकार में पड़े थे।
गुरू ने जो कृपा कीनी, परब्रह्म से मिलाया।
बलिहारी उस गुरू की जिस राह ये बताया।

मेरे सतगुरू का जीवन आदर्श है हमारा।
बलिदान देके अपना इस बगिया को सजाया।
पंचभूत से उठा के सत–चित आनंद बनाया।
बलिहारी उस गुरू की, जिस अलख ये जगाया।

• • • • •

भजन - 110

गुरू तेरा दामन ना छोड़ेगे हम
चाहे जमाना करे लाखों सितम।

माया के जाल में फंसे हम पड़े थे
काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहं में पड़े थे
तेरी ही वाणी ने ज्ञान दिया है।

अन्धकार में ही हम तो डूबे ही जाते
न भव पार होते न ज्ञान ही पाते
तेरी नाव जो हम सहारा ना पाते।

तेरे रूप में अब तो खोई रहूँगी
तेरे नाम का अब तो सुमिरन करूँगी
अब तो ये जीवन है तेरे हवाले।

तेरे पाक वचनों को मैं तो चाहूँगी
तेरे पाक वचनों को मैं तो कहूँगी
आनन्द ही आनन्द तेरी शरण में
गुरू तेरा दामन ना छोड़ेगे हम
चाहे जमाना ....

• • • • •

भजन - 111

गुरूदेव मेरे दाता हमको ऐसा वर दो
सेवा सुमिरन सतसंग झोली में मेरे भर दो....

नफरत जो करे हमसे हम उनसे प्यार करें
करते जो हमारा बुरा उसका सत्कार करें
नफरत को मिटा कर के, तू प्यार का रंग भर दे

मेरे मन के मंदिर में गुरूदेव तू बस जाए
जिसको भी देखँ मैं तेरा रूप नजर आए
दे ज्ञान का अमृत तू जीवन को सफल कर दे...

शबरी की तरह सेवा और ज्ञान हो मीरा सा
श्रद्धा हो तुलसी सी और बोल कबीरा सा
ये अर्ज करे पेमी सतगुरू पूरा कर दे....

.....

भजन - 112

गुरू ऐसो जिया में समाय गयो रे
कि मैं तन मन की सुध बुध गँवा बैठी
हर आहट पे समझी वो आय गयो रे
झट राहों में पलकें बिछा बैठी

गुरू ज्ञान की जब पुरवैया चली
'तो विवेक की खुल गई किवड़िया'
ऐसा अनुभव हुआ गुरू हृदय बसे
झट बाँहों के हार चढ़ा बैठी

मैंने गुरू रज से माँग अपनी भरी
'श्रद्धा भक्ति से तन मन सजाया'–२
इस डर से माया की नजर ना लगे
झट ज्ञान का कजरा लगा बैठी

.....

भजन - 113

गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णु गुरू देवो महेश्वरा
गुरू साक्षात पारब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः
जो ज्ञान रूपी अमृत बरसाये वो प्यारा सतगुरू मेरा
वो दादा भगवान मेरा वो प्यारा सतगुरू मेरा
जिसे देख के मन का कमल खिले वो प्यारा सतगुरू मेरा
वो दादा भगवान मेरा... हरी ओम् हरी ओम् हरी ओम्

जो सब को प्यार की नजर से देखे, आतम ज्ञान कराये-२
जो राग द्वेष को खत्म कराके, सब में ब्रह्म दिखाये-२
जो ज्योति से ज्योति मिलाकर मिटाता सबके मन का अन्धेरा

सतगुरू मेरा दीपक है जिसने मिटाया अज्ञान अन्धेरा-२
जो कमल के फूल की तरह जगत में, रहता सबसे न्यारा-२
ऐसे दादा के गुण गाऊँ मैं नित नित सांझ सवेरा...

जिसने जनम मरण का भेद मिटाके, हमें है शेर बनाया-२
जिसने आतम ज्ञान की ज्योति जलाके, हमें है अमर बनाया-२
चारों ओर अभी तो हमको दिखता प्यारे प्रभु का नजारा...

जिसने प्रेम का हमको पाठ पढ़ाके, सबमें राम दिखाया-२
जिसने राज रूहानी सब को देके, जीवन मुक्त बनाया-२
शुकराना मैं किस मुख से गाऊँ शब्द से परे तो डेरा...

• • • • •

भजन - 114

गुरू मांगेगा हिसाब मन तो बताइये
देना पड़ेगा जवाब, सत्संग में आइये, नेकियां कमाइये

झुक न जाए ये निगाह दरगाह में शर्म से
जिस दिन खुलेगी किताब। नेकियां ...

और कुछ बनो न बनो आके जहान में
इन्सान बनो लाजवाब, सत्संग में आइये।

नफरतों की गंदगी से है जमाना भरा
महकाओ प्यार के गुलाब, सत्संग में आइये।

टूटेगा एक दिन इनसे, दिल ना लगा
है ये जहां एक ख्वाब, सत्संग में आइये।

दादा भगवान ने दी है दुनिया की रोशनी
ये प्यार का आफताब, सत्संग में आइये।

अकड़ के तो न चलो झुक जाएगी कमर
दो दिन का है ये शवाब, सत्संग में आइये।

• • • • •

भजन - 115

गुरू ने अपना बना के मुझको मुस्कराना सिखा दिया
अंधेरे मन में गुरू ने आकर, ज्ञान का दीपक जला दिया

वो रंग भर दिये मेरे जीवन में
कि जिन्दगी बस चमक उठी है
आनन्द ही आनन्द भरा जीवन में
गुरू ने मार्ग दिखा दिया है
अंधेरे ...

वो मेरा प्रीतम सच्चा सलोना
दुनिया के रिश्ते सभी है झूठे
गुरू खजाने लुटा रहा था
मैंने दामन बिछा दिया है
अंधेरे ...
गुरू ...

• • • • •

भजन - 116

गुरू तो मेरा प्यारा प्यारा राम है दिखाए
दुई वाला पर्दा हटाके प्यार है सिखाये
जो भी आयेगा, अड जायेगा, खाली आयेगा, भर जायेगा
सागर में वो तारे...
नहीं देखे हिन्दू मुसलिम नहीं सिख ईसाई
सब को एक ही बात सुनाये कहता भाई भाई
जो भी आयेगा, अड जायेगा, खाली आयेगा, भर जायेगा
सागर से वो तारे...
हाथ इशारे से ये दिलबर जिसकी जंक उतारे
भरम भाग गये उसके भाई सच्चा पता ये पाये
प्यारे सिर को जो झुकावे
जो भी आयेगा, भर जायेगा...
रहम नजर से जिसको देखे बेड़ा उसका तारे
कभी रहे न उसको दिल से जो पुकारे
लोक लाज उतारे...
जो भी आयेगा, भर जायेगा...
सिर देके जो सैदा करे अंजाम गुरू का ये ही
सतगुरू मेरा गाली देके जीवभाव को उतारे
ढाप-ढाप के बनाये

• • • • •

भजन - 117

गुरू का साथ है इतना प्यारा, भूल गये हम ये जग सारा
गुरू के प्रेम में हम तो पार हो ही गये हैं सत्संग में आके

सारी दुनिया जल रही है मैं मेरे की आग में
गुरू ने आकर हमें बचाया झूठे इस संसार से
अब तो मेरा मन यही है गाता गुरू के शुकराने
पार हो ही गये है सत्संग में आके हो ऽ ऽ ऽ ऽ

गुरू का ये निष्काम प्रेम हमें टिकाता निश्चय में
फंस न जाये हम कभी मोह ममता के बन्धन में
लगन हमारी बढ़ती ही जाये गुरू के प्रेम में हरदम
पार हो ही गये हैं सत्संग में आके हो ऽ ऽ ऽ ऽ

मिला ये हमको हीरा जन्म, जीवन सफल बनाने को
गुरू ने आत्मज्ञान दिया लक्ष्य को पाने को
अब तो मेरा मन यही है गाता गुरू के शुकराने
पार हो ...

• • • • •

भजन - 118

गुरू बिना चैन कहाँ रे, दादा बिन चैन कहाँ रे
माया छूटी ममता छूटी ज्ञान तो मिला सत्संग कर ले

गुरू मेरे ह्रदय के बीच में बसो
ह्रदय के बीच और नैनों में बसो
दर्शन की प्यास नैनों से बुझा ले
गुरू बिन ...

सारे विषयों से मन को हटा ले
दिन रात तू उसी का ध्यान कर ले
गुरू बिन ...

समय मिला रे अनमोल प्यारे
गुरू को ले पहचान प्यारे
मन मन्दिर में गुरू को वसा ले
गुरू बिन ...

• • • • •

भजन - 119

गुरू ब्रह्मज्ञान वाले तीर मार देनी संइयों सचमुच
जिन्हां लंगदे, उन्हादे मन, नहीं डोलदे नहीं संइयो सचमुच

गुरू अचरज युक्ति बतावंदे, नी बतावंदे
विच गृहस्थ दे मस्त बणावंदे, नी बणावदे
वो तो चिद–जड़ ग्रंथी नू खूब तोड़ दे नी, संइयों...

इक तमाशा है ये दुनिया, ये दुनिया
जिसका अन्त न पाइया ऋषियो मुनिया–२
ज्ञानी उसदे गहराई विचि मोती रोलदे नी, संइयों...

ब्रह्म विद्या दा गहणा पा लो, नी पा लो
राग–द्वेष को मार निकालो, नी निकालो
फिर बोल जीवें बनां विच शेर बोलदे नी, संइयों...

• • • • •

भजन - 120

गा लूँ भजन मैं सतगुरू का भजन
हो जाऊँ उसमें मैं ऐसी मगन
करूं नमन मैं गुरू को नमन
जिसने किया मेरा जीवन सफल

तूने किया मुझे सबसे असंग
ऐसे रहूँ मैं जैसे जल में कमल
तेरी कृपा से पाया हमने
अपने ही दिल में सच्चा आनन्द
गा लूँ ...

बढ़ती रहे मेरी दिल की लगन
रह न सकूँ प्रभु मैं तेरे बिन
न मेरा मन न मेरा तन
बस तू ही तू है मेरे दिल में सजन
गा लूँ ...

सांझ साबरे तुझे ध्याती रहूँ
तेरे ही गुण सदा गाती रहूँ
तेरी ही याद और इस राह में
जीवन मेरी ये पलता रहे

दीपक बनकर ऐसे जलूं
हो जाये रोशन सबका जीवन
गा लूँ भजन मैं सतगुरू का भजन
हो जाऊँ उसमें मैं ऐसी मगन।

• • • • •

भजन - 121

गीता भगवन तेरी कुर्बानी कैसे भुलाएं तेरी मेहरबानी

बन के फानूस खुद ये हवाएं करे हिफाजत जिस शमा की
वो शमा क्या बुझे वो तो जलती रहे जिसे रोशन करे तेरे जैसा ज्ञानी
गीता भगवन् तेरी कुर्बानी ...

डगमगाया शफीना जब हमारा तूने आकर दिया खुद सहारा
खुद ही नैया बने, खुद ही मांझी बने खुद ही सागर का लहरा पानी
गीता भगवन् तेरी कुर्बानी ...

कैसे भूलेंगे एहसान तेरा काटा आवागमन का है फेरा
लोभ मोह नहीं बुढ़ापा मौत नहीं अहंकार ने भी हमसे हार मानी
गीता भगवन् तेरी कुर्बानी ...

• • • • •

भजन - 122

गुरू की ही लगन, उसी में ही मगन,
यह प्रेम है ऐसा दीवाना,
भले टोको मुझको जग वालो–२
हो जाऊँ अगर मैं मस्ताना।
श्रद्धा और भक्ति से तेरी,
मन शान्त हुआ है अब मेरा,
दृष्टि जो तेरी एक बार पड़ी
सृष्अि ही बदल गई अब मेरी
तेरा साथ जो मिल गया भगवन–२
फिर तृप्त हुआ मन मेरा।
यह आग अन्दर में तेरी
सब वासनाओं की भस्म करती
तेरे एक ही बार झिड़कने से
अहंकार से जड़ भी है उखड़ती,
कर्तापन जब मिट जाए–२
फिर और न देह अध्यास रहे।
नित ज्ञान की वाणी से तेरी
संशय सब दूर हुए मेरे
दृष्टा – दर्शन – दृश्य तीनों,
त्रिपुटी का ज्ञान किया तुमने,
जब सहज अवस्था हो गई,
फिर आनन्द ही आनन्द रहे।

• • • • •

भजन - 123

गुरू गुरू बोल मन गुरू बोल रे
गुरू ने दिया है ज्ञान धन अनमोल रे
कर्ज गुरू का उतरे न, हरि विसरे गुरू कभी न विसरे

गुरू ब्रह्म गुरू विष्णु महेश है
गुरू को नमन हमें करना हमेश है
सोया भाग्य जगाता है, गुरू तीन लोक का दाता है

गुरू का जहान में बड़ा ऊँचा स्थान है
गुरू जो मिले तो मिल जाता भगवान है
चारों वेद पुकार करे, गुरू महिमा अपरम्पार करे

ध्रुव प्रहलाद और मीरा कबीर है
हर सन्त पीर और फकीर है
पहले गुरू को मनाया है, पीछे भेद गुरू का पाया है

आज भी सुखों का गुरू बांटता खजाना है
ओम् ही ओम् यह कहता जमाना है
सोया भाग्य जगाता है, गुरू तीन लोक का दाता है

• • • • •

भजन - 124

गीता भगवन् ने हम भक्तों का आके किया उद्धार
कहीं पे बरसे गुरू की ममता कहीं पे बरसे प्यार
जगत से नाता टूटे गुरू तेरा साथ न छूटे।।

मात–पिता तुम मेरे तुम साथी संग सहारे
तुम से मिला है जीवन तुम हो भगवान हमारे
कहाँ मिलेगी ऐसी ममता कहाँ मिलेगा प्यार।।
गुरू ...

कोई मांगे सोना और कोई रूपया पैसा
कोई न भगवान को मांगे ये सब जग है कैसा
चलते–चलते इस दुनिया में हाय गया मैं हार।।
गुरू ...

माया के चक्कर में दुनिया पागल सी डोले
थक जाए जब चलते–चलते गुरू से ऐसे बोले
बीच भंवर में अटके भगवन् कर दो बेड़ा पार।।
गुरू ...

• • • • •

भजन - 125

गुरू की प्रीत ही कुछ ऐसी है न छोड़ी जाए
प्रभु से सहज मिलती है न तोड़ी जाए

गुरू के ज्ञान से सबका उद्धार होता है
ये सच की प्यास ही कुछ ऐसी है न छोड़ी जाए
प्रभु से सहज मिलाती है न तोड़ी जाए

सभी का सवाल है कि नाम में क्या है
ये बेखुदी ही ऐसी है न छोड़ी जाए
प्रभु से सहज मिलाती है न तोड़ी जाए

सच के जाम में ऐसा खुमार होता है
लगन लगी ही कुछ ऐसी है न छोड़ी जाए
प्रभु से सहज मिलाती है न तोड़ी जाए।

• • • • •

भजन - 126

गुरू के प्रेम बिना दुनिया में सूनापन है
दादा के प्रेम बिना दुनिया में सूनापन है

तू मिले सब है मिले दुनिया के गम है टले
मेरा जीवन तो तेरे प्यार में पलता ही रहे
गुरू के प्रेम बिना दुनिया में सूनापन है

जब से सुनी तेरी वाणी तुम्हीं ने जगाया मुझे
जब–जब कदम मेरे बहके तुम्हीं ने उबारा मुझे
गुरू के प्रेम बिना दुनिया में सूनापन है

वो दिल ही नहीं जिसमें सत्गुरू की याद नहीं
वो चाह क्या जिसमें सच को पाने की चाह नहीं
गुरू के प्रेम बिना दुनिया में सूनापन है।

• • • • •

भजन - 127

गुरू के उपकारों की कलियां चुन–चुनकर सुन्दर हार बनाएं
निज की सारी भक्ति संजोकर गुरू के चरणों में फैलाए

नेत्र दिए हैं गुरू ने हमको सबमें उसका रूप निहारें
कंठ दिया है प्रभु ने हमको सत्गुरू को सर्वत्र पुकारें

चरण दिए हैं प्रभु ने हमको बतलाए पथ पर हम विचरें
वाणी दी है प्रभु ने हमको गुरू स्तुति गाए नित निखरे

हाथ दिया है प्रभु ने हमको इसको परहित कार्य लगाएं
माथ दिया है प्रभु ने हमको गुरू चरणों में इसे नवाएं

तन मन धन सब दिया उसी का गुरू पद पर कर दे न्योछावर
जब तक एक श्वांस है बाकी गुरू गुण गाए नित्य मनोहर

• • • • •

भजन – 128

गुरू से मैनें पाया क्या–क्या मैं तो बताऊँ
हर पल उस पर वारी उस पर सदके जाऊँ

गुरू से मिलकर मैं तो अब जग से हुई बेगानी हूँ
जग को ही सच मान लिया था जिससे मैं अनजानी थी
जीवन था एक कोरा कागज दुनिया ने लिखी कहानी थी
तुझको पाकर ही सच जाना सच से तो अनजानी थी
ज्ञान बिना जीना नहीं, ज्ञान बिना जीना नहीं
गुरू से मैंने पाया क्या ...

जीवन को अज्ञान अंधेरे हर पल घेरे रहते थे
हर पल हम तो जीते थे माया का विष पीते थे
गुरू ने आकर ज्ञान का अमृत प्याला आज पिलाया है
इस सच्चे गुरू ने आकर के इस जग को मिथ्या बताया है
गुरू है जहां मैं हूँ वहां गुरू है जहां मैं हूँ वहां
गुरू से मैनें पाया क्या ...

• • • • •

भजन – 129

गीता भगवन् की प्रेम कहानी याद तेरी है अमर कहानी

तूने सबको गले लगाया, तूने सबका है जीवन बनाया
दिल में घर सबके तूने बनाया, तुझ से पाया है राज रूहानी

मेरे आगे है आदर्श तुम्हारा, देता है हमें यह इशारा
उसी से है जीवन हमारा कैसे भूलूँ तेरी मेहरबानी

याद तेरे हैं हमको फसाने किए लाखों को तूने दीवाने
तुझ से पाए हैं सच के खजाने सदा लब पे तेरी कुर्बानी

• • • • •

भजन - 130

गुरू के पास आना, न लाना मन में और
लाख चौरासी तुम भटके हो जनम न लेना और

आए कहां से क्यों है जनम तुम्हारा
जाना कहां है क्या ये मन में विचारा
जग अज्ञान अन्धेरा, सत्गुरू नव–जीवन भोर।

रिमझिम की बूँदे गिरती करती इशारा
ऐसे ही पल का प्राणी जीवन तुम्हारा
ना जाने कब टूटे श्वासों की कच्ची डोर।

ना तो जगत में कोई वैरी तुम्हारा
न ही किसी ने तेरा काम बिगारा
भीतर दुश्मन बैठा ये मन पापी चोर।

सत्गुरू हवाले कर दो जीवन की नैया
आप करेगा भव से पार खिवैया
मेहनत गुरू की मिशदिन कुछ तुम भी लगालो जोर।

• • • • •

भजन - 131

गुरू चरणां विच बैठ कसम असीं खावांगे
बनी रहे तेरी कृपा तोड़ निभावांगे

तू तां प्यार दा सागर है–२
जिन्हा छाल मार दीती
उन्हीं भर लई गागर है
असीं वी इन्हाची गागर भर लै जावांगे
बनी रहे तेरी कृपा तोड़ निभावांगे...

गन्डा प्यार दीयां पक्कीयां ने–२
छेती नहीं खुलन वालीयां
असीं पा लईयां पक्कीयां ने
इन्हा गन्डा नूं होर पक्कीयां पावांगे
बनी रहे तेरी कृपा तोड़ निभावांगे...

रब साडे घर आ जावो–२
ओहनुं वी मना लवांगे
पहले सतगुरू मन जावे
सतगुरू बड़ी उच्ची चीज है
ऐदे बिना ऐ बन्दया जीना मरना मुश्किल है
तू तां प्यार दा सागर...

असीं कदी वी न भुलावांगे
मुश्किल नाल लाल लबया
जिन्द जान वी वारांगे
तू तां प्यार दा सागर है
जिन्हा छाल मार दिती उन्हीं भर लई गागर...

• • • • •

भजन – 132

गुरू मेरी पूजा, गुरू गोविंदा,
गुरू मेरा पारब्रह्म गुरू भगवंता।

गुरू मेरा देव, अलख अभेद,
सर्व पूज्य, चरण गुरूदेव

गुरू मेरा ज्ञान, हृदय ध्यान,
गुरू के सिमरे मिटे अज्ञान

गुरू मेरा रतन, असल वतन,
गुरू के शब्द, सत्य वचन।

गुरू बिन अपना नाही और,
सतगुरू बिन नाही ठौर!

गुरू का शब्द, हृदय का हीरा,
परख–परख मिटाओ पीड़ा।

• • • •

भजन - 133

गुरू वचनों को रखना संभाल के,
इक–२ वचनों में गहरा राज है।
जिसने जानी है महिमा गुरू की,
उसका डूबा न कभी जहाज है।

दीप जले और तम नहीं भागे, ऐसा कभी न हो सकता।
ज्ञान सुने और विवेक न जागे, ऐसा कभी न हो सकता।
उसकी ज्योति से रोशन जहान है वह फरिश्ता बड़ा ही महान है।
जिसने ...

बीज पड़े और अंकुर न फूटे ऐसा कभी न हो सकता
कर्म करे और फल नहीं भोगे ऐसा कभी न हो सकता
कर्म करने को तू आजाद है फल भोगने में तू लाचार है।

मैं का दिया तू जब तक जलाये, तब तक प्रभु नहीं मिल सकता
अन्तःकरण जो शुद्ध न हो तो ज्ञान कभी नहीं टिक सकता
अन्तःकरण को शुद्ध बना ले, उसमें प्रेम का दीप जला ले।

गुरू पर समर्पित हो जा धोखा कभी नहीं खा सकता
लक्ष्मण रेखा सत्संग की हो तो रावण कभी नहीं आ सकता
अब तो पल–२ ये होता आभास, सत्गुरू ही सदा मेरे साथ है।

• • • • •

भजन - 134

गुरू तेरा प्यार है ऐसे दादा प्यार है ऐसे
आकाश में उड़ने वाले अनल के जैसे

तूने ख्यालों से खाली किया है अब मैं उड़ने लगी...
सूखा पत्ता पवन में जैसे...

तेरी रहम नजर हर वक्त हो ऐसा महसूस हो...
हृदय में हजूर हैं जैसे...

तूने निष्काम प्यार से मन को ऐसा मोड़ दिया।
रबड़ की गुड़िया हो जैसे...

तूने कायक वाचक मन के, दुखड़े दूर किये
जीवन मुक्ति आनन्द दिया है जैसे...

तेरी नूरानी नजर को पाकर, अब तो लगने लगा
हर तरफ तेरा जलवा हो जैसे...

तूने ज्ञान अमृत बरसाकर, मन जो सूना पड़ा था
हरियाली किया है जैसे...

तुझे पाके ऐ मधुसूदन, अब तो खिलने लगा
मन का कमल हो जैसे... गुरू तेरा प्यार...

• • • • •

भजन - 135

गुरू के समान नहीं दूसरा जहान में
यही वेद श्रुति कहते गुरू बिन ज्ञान नहीं
ज्ञान बिना भक्ति कैसे आए तेरे ध्यान में...

शिव रूप जानो गुरु के स्वरूप हैं,
साक्षात ब्रह्म जानो लिखा है पुराण में...

सतगुरू की सेवा कीजिए छल कपट सब छोड़ दीजे
ज्ञान गुरू की शरण लेके मस्त रहो निज ध्यान में

काम से बचाए गुरू क्रोध से बचाए गुरु
मोह से छुड़ाए गुरू खेलो जो निर्वाण में...

• • • • •

भजन - 136

गुरुदेव के सद्ज्ञान ने दीवाना कर दिया,
हाय मस्ताना कर दिया।
हमने जो अपना माना था, बेगाना कर दिया,
हाय मस्ताना कर दिया।
जकड़े थे हम जगत में, मोह की जंजीरों से,
दु:खों के पीड़ों से
जग को जला ज्ञान अग्नि में परवाना कर दिया,
हाय मस्ताना कर दिया।
जन्मों के देह अध्यास की जो धुनी समाई थी,
शांति न पाई थी
ममता मिटा, निज रूप में मस्ताना कर दिया,
हाय मस्ताना कर दिया।
रग-रग में सभी जन के, नाम रूप धंसे थे,
माया में फंसे थे
हर ताल में अब सोऽहम् का तराना भर दिया,
हाय मस्ताना कर दिया।
ऐसा दिया उपदेश गुरू ने, तुम निज आनन्द हो,
प्रेमी तू सर्वानन्द हो
जग में सदा को बन्द आना जाना कर दिया,
हाय मस्ताना कर दिया!

• • • • •

भजन - 137

गुरू चरणों में गुरूमुख बनके आज मेरा नया जन्म भया
नाम रूप का अन्त हुआ, जगत का झूठा नाम गया...

छूट गये मोह ममता के बंधन, आज कोई जंजीर नहीं
जगत के झूठे नाम रूप की, मन में कोई तस्वीर नहीं
खुद आदि हूँ मैं, खुद अन्त हूँ मैं,
और व्यापक हूँ सारे नजारों में

द्वैत की वाणी झलकें जिसमें, मैं वो तराने भूल चुका
समता ही नयी मंजिल मेरी, गुण–अवगुण मैं भूल चुका
अब शाद हूँ मैं, आजाद हूँ मैं, कुछ काम नहीं है आहों से

सफल हुई है आत्म साधना, मन को अनोखा ज्ञान मिला
गुरू वचनों से गुरूमुख होके, मुझको नया वरदान मिला
अब अजर हूँ मैं, अब अमर हूँ मैं,
महाकाल को डर क्या कालों से

• • • • •

भजन - 138

गुरूदेव से निराला कोई और नहीं–२
बेड़ा पार लगाने वाला कोई और नहीं–२

माया के वो बन्धन तोड़े, प्रभु चरणों में प्रीति जोड़े
सारे दुःख मिटाने वाला, कोई और नहीं, गुरूदेव...

उपनिषदों की कथा सुनावे, मेरे मन की व्यथा मिटावे
सारे भरम मिटाने वाला, कोई और नहीं, गुरूदेव...

जीव ईश रूप समझावे, सत चित आनन्छ रूप बनाए
जन्म–मरण मिटाने वाला, कोई और नहीं...

वो तो आत्म–ज्ञान करावे, हृदय का अज्ञान मिटावे
मुक्ति धाम दिलाने वाला, कोई और नहीं...

ऐसे सतगुरू के गुण गाओ, राजेश्वर तुम शीश झुकाओ
भव का बंध छुड़ाने वाला, कोई और नहीं...

• • • • •

भजन - 139

गीता भगवन तेरे वचनों पे चलकर
हम आज अपनी मंजिल पर आ गये हैं
तेरे जैसा रहबर जो जीवन में आया
जीवनमुक्ति आनन्द को पा गये हैं

है लाखों से बढ़कर वचन ये तुम्हारे
हीरे मोतियों से लगे हमको प्यारे
इस मन को तुम्हारे वचन भा गये हैं...
तुम्हारी नजर से मिली ऐसी शक्ति
कि आठों पहर हो रही अब तो भक्ति
बड़े भाग्य है जो ये दर पा गये हैं...

जगत की बातों ने बहुत था सताया
मानों तपती लू ने बदन झुलसाया
तेरी रहमतों के बादल छा गये हैं...

तेरा शुक्रिया किस जुबां से मैं गाऊ
सिवा आसुओं के क्या भेंट चढ़ाऊँ
शमा बनके रोशन जहां कर गये हैं
हम आज.................

• • • • •

भजन - 140

गुरू की किरपा जिसपे हो जाए मौज उड़ाए-२

चाहे अमीर हो, चाहे गरीब हो
चाहे बुरी से बुरी उसकी तकदीर हो
पल में करिश्मा करके दिखाए

पीतल का सोना कंकड का मोती
बन जाए पल में किरपा जो होती
पल में करिश्मा करके दिखाए

दादा के बच्चे दुख नहीं पाते
गुरू के बच्चे खुशियां मनाते
पल में ...

अंधा भी देखे गूंगा भी गाए
पंगु भी चलकर सत्संग में आए
पल में ...

ले ले ओ नाम ले ले गीता और श्याम ले ले
सुबह और शाम ले ले
पल में ...

• • • • •

घ

भजन - 141

घूंघट के पट खोल रे तोहे पिया मिलेंगे

घट–घट में वो साईं रमता,
कटुक वचन मत बोल रे। तोहे ...

जग जौवन को गर्व न कीजै,
झूठा पंच रंग चोल रे। तोहे ...

सूने महल में दिया वर ले,
आसन सो मत डोल रे। तोहे ...

जाग जोवन सो रंग महल में,
पिय। पायो अनमोल रे। तोहे ...

कहत कबीर आनन्द भयो है,
बाजत अनहद डोल रे। तोहे ...

• • • • •

भजन - 142

घट में बसे भगवान, पहचान सके तो पहचान

सूरज की रोशनी में, चंदा की चाँदनी में
तारों की झिलमिल छाया में, पर्वत गुफाओं में,
नदियों में नालों में
सब में उसी की है छाया, मिला सृष्टि को है वरदान

जग की अद्‌भुत लीला देखकर होता नहीं विश्वास
बिन आधार खड़ी है धरती बिन खम्बे आकाश
देखो लीला है उसकी महान...

गर्भ के अन्दर जीव मात्र में, सब का पालन हारा
हाड़ मास और रूद्र बीच में, शुद्ध दूध की धारा
दिया दाता ने जीवन दान,

भटक रहा है भूल भुलैयां में देखो ये इन्सान
मृग की नाभी में कस्तूरी, फिर भी भूला जाए
बिना गुरू नहीं कल्याण...

• • • • •

भजन - 143

घर आए मेरे सतगुरू जी प्यास बुझी मेरे तन मन की

दिन रात जिसे मैं देख रही
कब आयेंगे रास्ता देख रही
वो ही आन मिले दुख भंजन जी

सुर नर मुनि जिसे ध्यावत हैं
श्रद्धा आनन्द पावत हैं
सो ही आन मिले मेरे सतगुरूजी

क्या भेंट करूँ सतगूरू आगे
मेरे जन्म-जन्म के पुण्य जागे
कहे प्रेमी मैं जाऊँ बलिहारी
कृपा करके ऐ करूणानिधान
कटी रेखा मेरे कर्मो की

मातंग ऋषि ने बोल कहा
आयेंगे श्याम कौल रहा
बात सच्ची भई ऋषियानि की

• • • • •

च

भजन - 144

चदरिया झीनी रे झीनी ये राम इस बीनी चदरिया झीनी रे झीनी

अष्टकमल का चरखा बनाया पांच तत्व की पूनी
नव दस मास बनन को लागे मूर्ख मैली कीन्हीं।।
चदरिया ...

जब मोरी चादर बुनकर आयी रंगरेज को दीन्ही
ऐसा रंग रंगा रंगरेज ने लालो लाल कर दीन्ही।।
चदरिया ...

चादर ओढ़ शंका मत करियो दो दिन तुमको दीन्ही
मूरख लोग भेद नहीं जाने दिन दिन मैली कीन्ही।।
चदरिया ...

ध्रुव प्रहलाद सुदामा ने ओढी शुकदेव ने निर्मल कीन्ही
दास कबीर ने ऐसी ओढी ज्यूं की त्यूं धर दीन्हीं।।
चदरिया ...

• • • • •

भजन - 145

चाहे सुख दे चाहे दुःख दे,
मुझे सब कुछ तेरा मंजूर है
ओ मीत मेरे, गाऊँ मैं गीत तेरे

राजी रहूँ मैं तेरी रजा में
लगाके अपनी जान की बाजी
चलता चलूँ मैं तेरे इशारे
बना सकूँ मैं तुझको राजी

सत करे मानूँ तेरा भाणा
तेरे हुक्म आगे रहूँ मैं निमाणा
भलाई समझूँ हर हालत में
तेरे आगे करूँ कभी न भाणा

राज कराओ तो भी तेरी वडिआई
भीख मंगाओ तो भी चिन्ता न कोई
मान कराओ अपमान कराओ
तो भी समझूँ महर है वो ही

• • • • •

भजन - 146

चरणों में तेरे रहकर भगवन प्यार ही प्यार मिला
श्रद्धा से जग पूजा मैंने ब्रह्म का ज्ञान मिला...

तुम संग कैसी प्रीत लगी कि
छूटा जग मुझसे
जादू तूने ऐसा किया कि
छूटा जग मुझसे
बन्धन सारे टूट गए जब तुमने बांध लिया
श्रद्धा से जब...

गुजर गया हर पल दुःख का
जब तेरा ध्यान किया
हर मुश्किल आसान हुई
जब तूने साथ दिया
मोह माया में फंसा हुआ मैं अब आजाद हुआ...

जीना मरना सीखा भगवन
जग में जी करके
जीते जी मर जाना कैसा
सीख अब तुझसे
तू ही है अब मांझी मेरा नैया पार लगा,
श्रद्धा से जब...

जहर भी पीना कहदे अगर तू
वो भी पी लेंगे
राजी जिसमें तू है भगवन
वैसा ही जी लेंगे
बिन पिए मदहोश हुआ यह कैसा जाम पीया,
श्रद्धा से जब पूजा मैंने...

• • • • •

भजन - 147

चिन्ताएं छोड़ो सारी सपने न देखो कल के
पूरण गुरू मिला है रहो क्यों न हल्के-हल्के

संसार के भंवर में अब तो नहीं है फंसना
हालात आए जैसे हरदम हमें हैं हंसना
सच की डगर कठिन है चलना संभल संभल के। पूरण ...

डोरी प्रभु से जोड़ो नाता जगत से तोड़ो
कस के लगाम अपनी पांचों विकार छोड़ो
रख देगें सतगुरू जी मन को तेरे बदल के। पूरण ...

श्रद्धा विश्वास लेकर सतगुरू शरण में आना
ये प्यार जो किया है तो अन्त तक निभाना
मंजिल को पाओगे तुम मन को रखो मसल के। पूरण ...

दृष्टा बनो जगत के पर मुख से कुछ न कहना
सच्चाइयों के पथ पे आगे ही बढ़ते रहना
जीवन नया मिलेगा सतगुरू शरण में आके। पूरण ...

निज रूप को पहचानो, अज्ञान को भी जानो
देहाभिमान तजकर भगवान खुद को जानो
आनन्द होगा तेरा निश्चय को पक्का करके। पूरण ...

• • • • •

भजन - 148

चाहे हार हो चाहे जीत हो,
तेरे चरण कमल में मेरी प्रीत हो

तुझसे सतगुरू प्रीत लगाऊँ, और किसी की न आग लगाऊँ
मन्दिर में तुझको बिठाकर, पल-पल तेरा दर्शन पाऊँ

जन्म-जन्म से रटन लगाऊँ, अब तो सतगुरू सुनाऊँ
चरण कमल से दूर न जाऊँ, बार-बार तेरा दर्शन पाऊँ

जब-जब माया मुझको सताए, तेरा ध्यान ही पल-पल आए
तन-मन में प्रभु नेह लगाए, मन की ममता सब जल जाए

एक पल न दाता मुझको भुलाना, चरणों में दीजै सतगुरू ठिकाना
पाप के चक्कर में आकर, शरण पड़े की लाज बचाना

• • • • •

छ

भजन - 149

छोड़कर संसार जब तू जायेगा,
कोई न साथी साथ निभायेगा
ईश्वर का भजन किया न, सतसंग किया न दो घड़ियाँ
यमदूत लगाकर तुमको, ले जायेंगे हथकड़ियाँ
कौन छुड़ायेगा... कोई न
इस पेट भरन की खातिर, तू पाप कमावंदा निश दिन
श्मशान में लकड़ी रखकर तुझे आग लगेगी एक दिन
खाक हो जायेगा... कोई न
सतसंग की ये गंगा, तू इसमें लगाले गोता
वरना इस दुनिया से, जायेगा रोता रोता
फिर पछतायेगा... कोई न
क्यों करता है मेरा मेरा, ये दुनिया रैन बसेरा
यहाँ कोई न रहने पाया, चंद दिनों का डेरा
हँस उड़ जायेगा... कोई न
कोई न साथी अब प्रभो-चरणों में निश दिन
तू प्रीत लगाले ओ बन्दे
कट जायेंगे तेरे जन्म जन्म के फन्दे... कोई

• • • • •

भजन - 150

छूकर मेरे मन को किया तूने जो इशारा
बदला ये जीवन बदला जग सारा लगे प्यारा जग सारा

जन्मों के बन्धनों से दिया तूने छुटकारा
मुक्ति का ज्ञान देकर दूर किया अंधियारा
दादा तेरे ज्ञान ने जीवन मेरा संवारा

जब से सुनी वाणी मन मेरा बदला
तेरे इन वचनों पे मिटता चला जाऊँ
खुद को मिटाकर पाऊँ प्यार तुम्हारा

जीव को ब्रह्म बनाकर किया तूने उपकार
तूने किया जीवन सफल निष्कामी बनकर
तू ही मेरा जीवन तू ही मेरा किनारा

• • • • •

ज

भजन - 151

जाग रे मुसाफिर तू, ख्वाब की ये दुनिया से
होश क्यों गँवाता है, पल दो पल की खुशियों में।

दर्द दिल में तू जगा, सच की राह पाने को।
साथ देंगे तुझको निराकार, श्रद्धा है अगर जो अपार।

कर्म के ये बन्धन में खुद को तूने जकड़ा है।
दास्ताने कुछ भी नहीं, तू तो मुक्त आत्मा है।

देख जरा नजरें उठा, नूर सबमें है किसका
मूरत पे नजर ना टिका हस्ति पे तू ध्यान लगा।

कर्मकाण्ड छोड़ के सभी, कर्ता रोग छोड़ दे अभी
जीवन मुक्ति आनन्द का, सच्चा जलवा ले ले अभी।

हर कदम पे सोच विचार, आता है क्या मन में अहंकार
मैं--मैं की ये रट को बिसार, बेड़ा होगा तभी तेरा पार।

सच के मोती हैं बेमिसाल, दिल की झोली फैला दे विशाल
तन मन में लगन तू लगा, सच की ज्योति दिल में जगा।

• • • • •

भजन - 152

जीवन में आई बहार गुरू के संग प्रीत लगाके
सच्चा मिला आधार, गुरू के संग प्रीत लगाके

जग को समझ सच, हम तो बेचैन थे
हालत बदलती हँसते थे रोते थे।
मिथ्या हुआ संसार, गुरू के संग प्रीत लगाके ...

खोजा था जिसको मंदिर ठिकाने में
पाया न उसको सारे जमाने में
दिल में मिला दिलदार, गुरू के ...

थोड़ी रही बाकी वृथा गवाना न
वचनों में डूबे रहना, प्रेम भुलाना था
खुशियां मिलेंगी बेशुमार। गुरू ...

गुरू तेरे प्यार ने यह निश्चय कराया
मुक्ति के खातिर मानुष चोला पाया।
हो गये भव से पार। गुरू ...

• • • • •

भजन - 153

जिसने गुरू वचनों को निभाया
उसने जीवन सफल बनाया
उसका बैरी न मीत, लागे सतगुरू से प्रीत। जिसने ...

जिसने वचनों का अम्रत पिया प्रेम से
जिसने इन्द्रियों को वश किया ज्ञान से
वो तो योगी बने न ही भोगी बने
जिसने श्रद्धा का दीप जलाया।

जिसने मन का दर्पण साफ किया
उसके दिल में गुरू ने वास किया
उसका खुल गया भाग्य, जिसके सत्गुरू हैं साथ
उसने अपने में ही पाया।

उसने वचनों का प्याला पिलाया हमें
तीनों कर्मो से गुरू ने छुड़ाया हमें
जो भी आए, गुरू द्वार पाये आनन्द अपार
उसने अपने में ही पाया।

• • • • •

भजन - 154

जो सुख देता है वो सुख देता है, दोनो से दूर रहो

आतम सुख में रहो अन्तर्मुख ही बनो
मेरा रूप है सत् चित् आनन्द
मेरी माया है झूठी, माया है झूठी। जो ...

पोथी पढ़कर ज्ञान जो पाया, वो हमको उलझाएगा
गुरू ज्ञान है अनुभव का, वो ही मुक्त कराएगा।

नाटक में सुख क्या, दुख क्या, दुख सुख मन का धोखा है–२
दृश्य का दृष्टा बनकर देखो, दृश्य हवा का झोंका है–२

शब्द बनाए हैं मानव ने, शब्द को कैसे सच माना–२
तत्व को बताया है गुरू ने, तत्व को मिथ्या माना–२

• • • • •

भजन - 155

जिसके हृदय में हरि सुमरण होगा,
उसका सफल क्यों न जीवन होगा
भक्त का भी भगवन को चिन्तन होगा,

सच्ची धारणा से प्रहलाद ने जो ध्याया था
खम्बे–से श्याम जी का दर्शन पाया था
जिसका सहारा रघुनन्दन होगा,

द्रौपदी ने बाँध केवल चार कच्चे धागों से
बदले में भेजी हैं हजार गज़ साड़ियाँ
जिसका सहारा मनमोहन होगा,

भक्तों को तारने तारनहार आये हैं
जंगलों में झूठे बेर भीलनी के खाए हैं
कहते थे कभी न कभी दर्शन होगा,

वन के वैरागी गीत दादाजी के गाए जा
तेरी सारी मुश्किलें आसान वो बनायेगा
जिसके हृदय में राम ना धन होगा।

• • • • •

भजन - 156

जब–जब भी तुझे पुकारा, तुमने ही दिया सहारा
ये दूर नहीं है हमसे, बस याद करो इन्हें मन से
सतगुरू तो हमारा साथी है, भक्तों का सहारा है

हमसे दूर नहीं है करता है रखवाली
जिसने किया भरोसा सतगुरू ने डोर संभाली
जो इनके पांव पकड़ ले, ये उसका हाथ पकड़ ले
सतगुरू तो हमारा ...

अपने भक्तों पे हमेशा दया किया करते हैं
उनको पार लगा दें जो सौंप दिया करते हैं
ये चार दिनों का जीवन सतगुरू को कर दिया अर्पण
सतगुरू तो हमारा ...

इनका साथ मिले तो हर मुश्किल टल जाए
हो घनघोर अंधेरा मंजिल मिल ही जाए
बिन पानी नाव चला दें, सतगुरू तो बिगड़ी बना दें
सतगुरू तो हमारा ...

• • • • •

भजन - 157

जीवन की डोर अब तो कर दी तेरे हवाले
जग को बनाने वाले अपना मुझे बनाले।

माया की डालियों पर संसार का हिन्डोला
उसमें जन्म मरण के झूले तेरे निराले।

तप ध्यान योग पूजा, तुझको रिझा न पाये
लेकिन तुझे रिझाएँ मन से बुलाने वाले।

निर्गुण कोई बताए, कोई सगुण बताए
खुद ही भटक रहे हैं मार्ग दिखाने वाले।

जीवन की किश्ती सतगुरू मंझधार में पड़ी है
चाहे उसे डुबो दे चाहे उसे बचा ले।

भटके थे हम दो राहें, जग में मिला न कोई
मिल गये मुझको तो सतगुरू, मार्ग दिखाने वाले।

• • • • •

भजन - 158

जीवन की घड़ियाँ वृथा न खो
ओम् भजो हरि ओम् भजो।

ओम् ही सुख का सार है
ओम् ही जीवन आधार है
वृत्ति न उसकी मन से तजो, ओम्...

साथी बना ले ओम् को
मन में बिठाले ओम् को
चादर ताने लम्बी न सो, ओम्...

चोला यही है कर्म का,
करने को सौदा धर्म का
धोना जो चाहे जीवन को धो, ओम्...

मन की गति संभालिए
भक्ति की ओर डालिए
इसके सिवा मार्ग न कोई, ओम्...

घट में हरि पहचान ले
स्वांसों की कीमत जान ले
नर तन का पाना हो न हो, ओम्...

• • • • •

भजन - 159

जो सिदक नहीं है पूरा दिल में,
तो प्रेम गली में आना ना।
जो ज्ञान की थैली रख न सको,
तो प्रभु से लगन लगाना न।।
ये राह खांडे की धारा है,
अगर इस पर तुमको जाना है।
तो लाज उतार के आना है,
नहीं तो कदम कभी भी बढ़ाना ना।।
जो दुनिया में भी आता है,
वो कर्मों का फल पाता है।
अगर कुछ नुकसान हो भी गया,
तो सत्संग को बुरा बताना ना।।
जो इस पथ पर कोई आता है,
वो डर किसी का नहीं पाता है।
अगर खौफ है रिश्तेदारों का,
तो भूल के गुण तुम गाना ना।।
सब रंग छोड़ के इक रंग हो जा,
सद्‌गुरू के वचन पर सर को झुका।
अगर नाता निभाना पूरा है,
तो चोले को दाग लगाना ना।।

• • • • •

भजन - 160

जो भी समझाओगे हमें बतलाओगे–२
वो ही करेंगे हम काम–२
बालक हैं आपके–२ जो भी आपके ...

तुम ही मेरे प्रभु जी, और हम है बालक तेरे–२
इसीलिए तो तुमपर मिटते हैं गुरूवर प्यारे–२
टूटे ना–२ कभी नहीं–२ रिस्ता ये ज्ञान का ... जो भी

तुमने मुझे पिलाया गुरू प्रेम ज्ञान का प्याला
मेरे इस जीवन को खुशियों से है भर डाला
मिलता है–२ सच्चा सुख यहां

जार्य हैं गुरू जी ये तेरा मेरा रिस्ता–२
तेरे वचनों से ही है मुझको आनन्द मिलता–२
प्रेमी है है गुरू है तेरे ही वचनों की–२
जो भी समझाओगे ...

• • • • •

भजन - 161

जो दीसे सो तू नाही।
जो है तू सो कहा न जाई।।

बिन देखा परतीत न आवे,
कहऊन न को पतिआनि,
समझा होए तो शब्द चिन्हाउ, अचरज होए अयाना।

कोई ध्यावे निराकार को,
कोई ध्यावे आकार को,
या विधि इन दोनों ते न्यारा, जाने जाननहारा।

ये राग तो लिखा न जाए,
मात्रा लिखऊँ न काना,
कहे कबीर जो परऊ न परलय, सुरत निरत जिन जाना।

• • • • •

भजन - 162

जो तू है सो मैं हूँ, जो मैं हूँ सो तू है,
न कुछ आरजू है, न कुछ जुस्तजू है।

बसा राम मुझ में, और मैं राम में हूँ,
न इक है न दो है, सदा तू ही तू है।

उठा जब ये माया का परदा ये सारा,
किया गम खुशी ने भी मुझ से किनारा।

जुबां को न ताकत न मन को रसाई,
मुझे मिल गई है मेरी बादशाई।

• • • • •

भजन - 163

जो सच को पाना चाहे, वो गुरू चरणों में आए।
जो श्रद्धा से नहीं आए, उसे कौन समझाए।
जो अमृत पीना चाहे, वो बर्तन खाली लाए।
जो पीने से मुख मोड़े, उसे कौन पिलाए।

दुनिया मतलब का घर है, ये बन्दे को भी खबर है।
संसार दुःखों की जड़ है, ये उसको भी खबर है।
जो उनमें असंग हैं रहते, वो मंजिल को हैं पाते।
जो खुद को दुनिया में फँसाए, उसे कौन छुडाए।

माना विषयों के आगे, नहीं चलता जोर किसी का।
उनको पाने में ही इनसान, है सब कुछ ही खो देता।
जो विषयों से खुद को बचायें, वो मन से जीत हैं पाते।
जो खुद को धोखे में रखे, उसे कौन समझाए।

ये जीव है इक नैया, प्रभु मांझी है खिवैया।
जड़ में चाहे चेतन में, रहता है वो ही रमैया।
जो अन्तर मुख हैं होते, वो ही दीदार हैं करते।
जो बाहर मुख हैं होते, वो जनम हैं खोते।

• • • • •

भजन - 164

जो मिलना है भगवान से, तो मिल पहले दरबान से।
कैसे दर्शन देगा भगवान, बिन पूछे दरबान से।।

भेद–भाव के बन्धन और ये ऊँच–नीच की दीवारें,
प्रभु से कैसे मिलने देंगी तुझे बीच की दीवारें।
तुमने खुद मुश्किल कर डाला, हर मुश्किल आसान रे।।

लाख चतुर तू बने मगर वो सबसे बड़ा सयाना है,
अपना आप छिपाकर बुनता जग का ताना बाना है।
चतुराई ना भाए उसे, वह प्यार करे अनजान से।।

प्रभु का होना है तुझको तो बंदों का तू हो जा रे,
अपना आप मिटाकर मूर्ख और उसी में खो जा रे।
नीचा सिर जो काम निकाले, वह न निकले मान से।।

• • • • •

भजन - 165

जो नर दुःख में दुःख नहीं माने
सुख स्नेह और भय नहीं जांके
कँचन माटी माने...

नहीं निन्दा नहीं उस्तति जांके
नहीं लोभ मोह अभिमाना
हिरख शोक ते रहे न्यारो
नहीं मान अपमाना

आशा तृष्णा सकल त्यागी
जगते रहे निराशा
काम क्रोध जंहि परसे नाहीं
ताहिं घट ब्रह्म निवासा

गुरू कृपा जांही नर ते किन्हीं
तिन्हि ये जुगत पहचानी
नानक लीन भयो गोविन्द सिंयू
ज्यूं पानी संग पानी

• • • • •

भजन - 166

जो भी न आया बिक गया, मोहन तेरे दरबार में।
भेद कुछ न रह गया, बिकने और खरीददार में।।

एक नजर परम नटवर, जिससे तेरी हो गई।
उसको फिर चिन्ता रही न, कोई इस संसार में।।

कैसा मीठा फल मिला, हमको तुम्हारी याद में।
दुनिया के सब नाते छूटे हैं, तेरे इस प्यार में।।

जिसके दिल और आँखों में, मस्ती तुम्हारी छा गई।
वो ही शोहरत पा गया, इस प्रेम के बाजार में।।

गुणों को ठुकराया करते, अवगुणों से प्यार है।
यही तो आदत भली है, तेरे कृष्ण मुरार में।।

उसे गर्ज अब क्या रही, वीरान और इस चमन से।
जो दुई का पर्दा उठ गया, तो मिल गया करतार से।।

• • • • •

भजन - 167

जो रहम की न होती भगवान तेरी आदत।
घर–घर में कौन करता मालिक तेरी इबादत।।

मुजरिम न कोई होता, हाकिम न तू भी होता।
सूनी ही रहती हरदम, दिलबर तेरी अदालत।।

तूफान में किसी की डोलायमान कश्ती।
मल्लाह बन के मालिक, करता तू ही हिफाजत।।

रहमत पे तेरी मेरे करते हैं, नाज गुनाह भी।
कर दोगे माफ मुझको, ये तेरी है बादशाहत।।

आशा रखूँ मैं दिल में, तेरे सिवाय कैसी।
तू ही आधार मेरा, तू ही है मेरी ताकत।

आँखों को आँसू साजन, तू ने ही तो दिये हैं।
आकर के ले लो वापस, अपनी ये तो अमानत।।

• • • • •

भजन - 168

जात हमारी आत्मा परमेश्वर परिवार है।
बेगमपुर के रहने वाले करते हम सब प्यार हैं।।

आ जाओ जिसको पार है जाना सद्‌गुरू नाव बनायी है।
इस नैया में बैठ के सबने प्रेम की धुनी लगायी है।
राग द्वेष को दूर हटाओ कहते बारम्बार हैं।

हम सबका है एक ही नारा, सतगुरू मेरा अवतार है।
करने आया भवसागर से, हम सबको ये पार है।
सतगुरू नाम जहाज है, चढ़ सो उतरे पार है

काटे लाख चौरासी सबकी, सबको मुक्त बनाता है।
ज्ञान का दान देकर सबके अन्दर ज्योत जगाता है।
नजर नूरानी देकर उसने सबका किया उद्धार है।

भक्तों के उद्धार के खातिर, धरती पर ये आया है।
निराकार होकर के भी साकार रूप में आया है।
धोखे में न रहना भक्तों आया कृष्ण मुरार है।

जो भी इसके द्वारे आता, कर लेता इकरार है।
पापी पुण्यी जो भी आता करता भव से पार है।
देख के अपना आप फिर ये हो जाता दिलदार है।

• • • • •

भजन - 169

जरा जीव विचारों मन में, तेरी आत्मा का कैसा स्परूप है
ये देह नहीं है तेरी आत्मा, तू तो सत् चिद् आनन्द रूप है।

घट-घट का दृष्टा घट-घट में जैसे,
जगत में है सबसे न्यारा
तीन देह का दृष्टा तू है, तीन देह से न्यारा।
तू तो साक्षी चेतन ब्रह्म रूप है,
तू तो अजर अमर विभु रूप है।

घट उपाधि से महाकाश, जो घट आकाश है कहलाता
अन्तःकरण उपाधि से ही, ब्रह्म जीव है कहलाता।
तज देह उपाधि ब्रह्म रूप है,
जैसे बिन्दु भी तो सिन्धु का ही रूप है।

हस्ति भाँति प्रिय नाम रूप, ये पांच अंश जग में दिखते
इनमें तीन ही ब्रह्म रूप है, और जगत रूप दो बचते।
नाम रूप सब जगत का ही रूप है,
तू तो हस्ति भाँति प्रिय रूप है।

राजा का लड़का सपने में जैसे, अपने को निर्धन माने
'राजेश्वर' तू मोह नशा में, अपने को दुखिया माने
तू तो जगत के भी जगत का भूप है,
अज्ञान से भरा भव कूप है।

• • • • •

भजन - 170

जहाँ तक जाती दृष्टि है, वहाँ तक फ़ैली सृष्टि है।
सर्व मम रूप है–सर्व मम रूप–३ है।

मैं हूँ सब में और न कोई, मेरी ज्योति सब घट परगट होई
ऐसा अद्‌भुज रूप, जाने कोई–२ भूप...
सर्व मम रूप...

मुझसे उत्पन्न है संसारा, चन्दा सूरज विद्युत तारा।
जगमगाती सृष्टि है, सारी आतम दृष्टि है...
सर्व मम रूप...

इन्द्र जाली जाल बिछाया, ईश जीव बन देखन आया।
आप से आप ही फूला, माया के भरम में भूला।।
सर्व मम रूप...

• • • • •

भजन - 171

जब अपने ही घर में खुदाई है, तो काबे में सजदा कौन करे,
जब दिल में ख्याले सनम हो बसा, तो गैर की पूजा कौन करे।
तू बर्क गिरा मैं जल जाऊँ,
तेरा हूँ तुझमें मिल जाऊँ,
हो मुझसे खता और तुम बख्शो,
ये रोज का झगड़ा कौन करे।
हम मस्त हुए वे वादा पिये, साकी की नजर के सदके में,
अंजाम पे डाले कौन नजर, पीली है तो तौबा कौन करे।
अब उनकी रजा पे छोड़ दिया,
आबाद करे बरबाद करे,
उनका था उनको सौंप दिया,
दिल देके तकाजा कौन करे।
तू सामने आ मैं सजदा करूँ, तब लुत्फ है सजदा करने का,
तू और कहीं मैं और कहीं, ये नाम का सजदा कौन करें।
परदे ही तलक सब सजदे हैं,
सजदे ही तलक सब परदे हैं,
जब परदा उठा तो आप हुआ,
फिर आप को सजदा कौन करे।

• • • • • •

भजन - 172

जग है सराय–२, कोई आए कोई जाए,
भूल के यहाँ कोई मन न लगाए।
आसमान में सितारे हैं जितने,
तूने पाप कमाये हैं उतने
कौन होगा तेरा सोच ले तू जरा,
फिर काहे को पाप कमाये।
तृष्णा बढ़ती ही बढ़ती जाये,
आयु घटती ही घटती जाये
नित नयी आस है, नित नयी प्यास है,
कोई कहाँ तक उसको बुझाए।
उलझा जग के झमेले में आके,
भूला प्रभु को दौलत तू पाके
वक्त यूँ ही गया तूने कुछ, न किया,
सारी आयु तेरी बीती जाये।
प्रेमी ये जग नहीं है किसी का यहाँ
नाता है बस पैसों का।
प्यार किसका रहा प्यार कैसा रहा,
यहाँ भाई ही भाई को खाये।

• • • • •

भजन - 173

जब से हम सतगुरू तुम्हारे हो गये।
मिल गई खुशियाँ सहारे हो गये।

पास मंजिल थी मगर हम दूर थे।
मिल गई साहिल किनारे हो गये।

तोड़ डाला मजहबी दीवार को।
भेद भाव मिटा तुम्हारे हो गये।

अब हमें जन्नत मिले या ना मिले।
चरणों में स्वर्गीय नजारे हो गये।

हमको हर सौगात बिन माँगे मिली।
तेरी रहमत से गुजारे हो गये।

बन के गुरूमुख आ गया जो दर तेरे।
उसके तो वारे नियारे हो गये।

• • • • •

भजन - 174

जीवन ये आनन्द भरा है, सबमें आनन्द घोल दो
देना लेना आनन्द का हो, बाकी सारा छोड़ दो

मन है हमारे विचारों की माला
अच्छे बुरे सब आने दो
चुन लो तुम अनमोल मोती
बाकी सारा छोड़ दो।

सृष्टि हमारी पूजा की है
मन–मन्दिर को सजने दो
प्रेम का नन्हा दीप जला दो,
बाकी सारा छोड़ दो।

कितने करोगे जप तप पूजा,
जो करते हैं करने दो
आत्मा का दीदार करो तुम,
बाकी सारा छोड़ दो।

दुनिया में रौनक लाख लगी है, तन चाहे सुख लेने दो
तुम भी चलता देख नजारा, बाकी ...

जग के नाते बन्धन सारे धीरे–२ खुलने दो।
हाथ पकड़ लो सत्गुरू का तुम, बाकी सारा ...

• • • • •

भजन - 175

जरा तो इतना बता दो भगवान, लगी ये कैसी लगा रहे हो
मुझी में रहकर मुझी से अपनी, यह खोज करा रहे हो।

हृदय में तुम हो, तुम्हीं हो प्रीतम
प्रेम भी तुम हो, तुम्हीं हो प्रेमी
पुकारता मन तुम्हीं को क्यों फिर
तुम्हीं जो मन में समा रहे हो...जरा तो इतना...

प्राण भी तुम हो, तुम्हीं हो स्पंदन
नयन भी तुम हो, तुम्हीं हो ज्योति
तुम्हीं को लेकर तुम्हीं को ढूँढ
नयी ये लीला बता रहे हो...जरा तो इतना...

भाव भी तुम हो तुम्हीं हो रचना
संगीत तुम हो तुम्हीं हो रसना
स्तुति तुम्हारी तुम्हीं से गाऊँ
नयी ये रीति बता रहे हो...जरा तो इतना...

कर्म भी तुम हो तुम्हीं हो करता
धर्म भी तुम हो तुम्हीं हो धरता
निमित्त के कारण मुझे बनाके
ये नाच कैसा नचा रहे हो...जरा तो इतना।

• • • • •

भजन - 176

जब मन मीठा होए जग मीठा होए।
फिर सुख मीठा और दुःख मीठा होए।

गुरूमुख जो हुआ हर भेद खुला
और प्रेम हुआ और प्रेम हुआ
प्रेम जहाँ होए, भगवान वहाँ होए
फिर सुख मीठा और दुःख मीठा होए

गुरू ने सिखलाया श्रद्धा रखो
और सब्र करो सब्र करो
सब्र जहाँ होए संतोष वहाँ होए
फिर सुख मीठा और...

जो होता है वो होता रहे
यह खेल भला यह खेल भला
खेल जहाँ होए, दुःख न वहाँ होए
फिर सुख मीठा और दुःख...

जब भ्रम मिटा तब ब्रह्म दिखा
मैं एक रहा, मैं एक रहा
एक जहाँ होए फिर द्वेष कहाँ होए
फिर सुख मीठा और...

• • • • • •

भजन - 177

जहाँ रब ले जाये चलता चल
जैसे रब रख ले तू रहता चल।
जो रब चाहे तू करता चल।।

तू है मुसाफिर इस दुनिया में
जीवन तेरी है नैया
माया के तूफानों से तुझको
पार लगाए खौवैया।
लहर लहर में देख ले उसको
हँसते मौज में बढ़ता चल।।
जहाँ रब ले जाए... ।। १।।

पानी भिगोए धूप सुखाए
मान जरा शुक्रना
प्यास बुझाए भूख मिटाए
रब का पानी दाना।
छोड़ दे बोझ उसी पे हर पल
याद उसी को करता चल।।
याद उसी को करता चल।। २।।
पल न गंवा रे तमन्ना में तू
पेश न कर तू अरजी

मिल जाए तेरी दुआ के बिन ही
गर हो उसकी मरजी।
जो पड़ जाए झोली में वो
लेकर तू मुसकाता चल।।
जहाँ रब ले जाये...।३।।

सोच न कुछ भी कर न कुछ भी
तू तो फ़कत है खिलाड़ी
समझ न खुद को मालिक अपना
है तू खिलौना अनाड़ी
जो तू पाले उसके हुकम को
भूल के गम तू हँसता चल।
जहाँ रब ले जाये...।।४।।

• • • • •

भजन - 178

जर्रे-जर्रे में है झाँकी भगवान की
किसी सूझ वाली आँख ने पहचान ली
नामदेव ने पकायी, रोटी कुत्ते ने उठायी
पीछे घी का कटोरा लिए जा रहा।

बोले रूखी तो न खाओ, स्वामी घी तो लेते जाओ
रूप अपना क्यों मुझसे छिपा रहा।

तेरा मेरा एक नूर, फिर काहे को हुजूर
तूने शकल बनायी है श्वान की
मुझे ओढ़नी उड़ा दी इन्सान की।

निगाह मीरा की निराली पी के जहर की प्याली,
ऐसा गिरधर बसाया मीरा श्वाँस में।
आया जब काला नाग, बोली धन्य मेरे भाग,
प्रभु आये आज सांप के लिबास में।
आओ-आओ बलिहार, काले कृष्णा मुरार
बड़ी कृपा है कृपा निधान की
धन्य वारी हूँ मैं आपके एहसान की।
इसी तरह सूरदास निगाह जिनकी थी खास
ऐसा नशा था साँवरिया हरि नाम का।

नयन हुए जब बन्द तब मिला वो आनन्द
आया नजर नजारा घनश्याम का।

हर जगह वो समाया, सारे जग को दिखाया
आयी आँख में वो रोशनी ज्ञान की
देखी झूम-झूम झलकियां जहान की।

गुरू नानक कबीर नेक जिनकी नज़ीर,
पत्ते-पत्ते में दिखाया निराकार-को।

नजदीक और दूर, वो तो हाजिरा हुजूर,
यही सार समझाया संसार को।

आओ-आओ मेरे प्यारे, खुले भाग्य हमारे,
बड़ी-बड़ी मेहरबानियाँ हैं उस मेहरबान की।
देखी झूम-झूम झलकियाँ जहान की।

• • • • •

भजन - 179

जिसके देव ऋषि मुनि गुण गाते रहे महिमा गाते रहे
हमें पूरा यकीं है तुम वही श्याम हो...

जब भी मुख से किसी के सुनु रागिनी
मैं ये समझूं तुम्हारी मुरली बजी
हो ऽऽऽ जिसकी मुरली पर हम दिल लुटाते रहे जान लुटाते रहे
हमें पूरा यकीं है...

तुमने द्वापर में कृष्ण अवतार लिया और त्रेता में आये तो राम बने
हो ऽऽऽ कलियुग में-२ आये हो साधारण वेष में गुरू के वेष में
हमें पूरा यकीं है...

तुमने उंगली पर गोवर्धन को उठा अपने भक्तों के दुखड़े दूर किये
हो ऽऽऽ जिस अर्जुन को ज्ञान सुनाते रहे-२
हमें पूरा यकीं है...

दे रही है सदा अंतर की वीणा
जैसे पहले भी हम तुम मिले हो यहाँ
हो ऽऽऽ कितने जन्मों से जिसको बुलाते रहे-२
हमें पूरा यकीं है...

बड़े कांटों भरे हैं ये सच के रास्ते
खुल गये द्वार सब प्यार के वास्ते
हो ऽऽऽ जिसके प्रेम में मन की विकारों से हटे, भव बन्धन कटे
हमें पूरा यकीं है...

• • • • •

भजन - 180

जहां ले चलोगे वही मैं चलूंगा
जहां नाथ रख दोगे वही खुश रहूंगा

ये वक्त समर्पित चरण में तुम्हारे
तुम्ही मेरे सर्वस्व तुम्ही प्राण प्यारे
तुम्हें छोड़कर प्यार किससे करूंगा

न कोई उलाहना न कोई भी अर्जी
कर लो करा लो प्रभु जो तेरी मर्जी
जो भी कराओगे प्रभु वही मैं करूंगा

तुम्हारे हवाले ये दिन और रातें
कृपा दृष्टि हम पर तुम्हारी सदा से
सतगुरू तेरा प्रेम सबको मैं दूंगा
जहां नाथ रख दोगे वही खुश रहूंगा

• • • • •

झ

भजन - 181

झीनी रे झीनी ते राम नाम रस भीनी चदरिया।
झीनी रे झीनी...

अष्ट कमल का चरखा बनाया, पाँच तत्व की पूनी।
नौ दस मास बुनन को लागे, मूरख मैली कीनी।
चदरिया झीनी...

जब मेरी चादर बुनकर आई, रंगरेज को दीनी।
ऐसा रंग रंगा रंगरेज ने, लालो लाल कर दीनी।।
चदरिया झीनी...

चादर ओढ़ शंका मत करियो, दो दिन तुमको दीनी।
मूरख लोग भेद भेद नहीं जाने, दिन–दिन मैली कीनी।।
चदरिया झीनी...

ध्रुव प्रहलाद सुदामा ने पहनी, सुखदेव ने निर्मल कीनी।
दास कबीरा ने ऐसी पहनी, ज्यों की त्यों धर दीनी।।
चदरिया झीनी...

• • • • •

भजन - 182

झूम–झूम के नाचो आज,
नाचो आज, गाओ खुशी के गीत हो,
आज तो मन की हार हुई है और गुरू की जीत।
अब तक था मन ने मुझको रूलाया,
मोह माया में था भटकाया,
गुरू ने प्रेम से इसे समझाया,
निज स्वरूप का मुझे पता बताया,
अपने जैसा मुझे बनाया,
धन्य गुरू की रीत।
भाग्य बड़े मेरे जो गुरू ने अपनाया,
गहरी नींद से मुझे जगाया,
भव बन्धन से मुझे छुड़ाया,
सारे जहाँ का राजा बनाया,
बिन माँगे सब कुछ दे डाला,
यही प्रीत की रीत।
भटक रहा था मैं, जग की माया में,
अटक गया था, इस काया में
भ्रमित हो रहा था छाया में,
अपने स्वरूप में अब आया मैं, सपने से जगा के मुझको
सुनाया आत्मा का गीत।

• • • • •

त

भजन - 183

तू प्यार का सागर है, तेरी इक बूँद के प्यासे हम।
बरसा जो तेरा अमृत, तो तर जाएँगे जहाँ से हम।।

परवश था मन पंछी पहले इन्द्रियों के अधीन,
गुरू वचनों से मुक्त हुआ मैं आत्मपद आसीन,
तेरी कृपा है भगवान हुए हैं सत्‌चित आनन्द हम।

गुरूमुख को ना यम का डर है, काल की क्या हस्ती,
गुरू चरणों में आए आनन्द, जगत है मौत खड़ी,
तेरे वचनों से ये जाना, अमर हैं आदि काल से हम।

• • • • •

भजन - 184

तू–तू न रहे, मैं–मैं न रहूँ हम राम में ऐसे रम जाएँ,
पानी में मिली जैसे नमक डली, हम...

हम तेरे द्वारे आन पड़े,
अब और बताओ जाएँ कहाँ।
ऐसी दया करो भगवान मेरे,
इस जन्म में तुझसे मिल जाऊँ।

कहीं काम क्रोध मोह में पड़कर,
हम घुट–घुट कर ना मर जाएँ।
ऐसी दया करो दयावान मेरे,
इस जन्म मरण से छुट जाएँ।

अब कोई भी कर्म का खाता नहीं,
जब राम में हम सब रम ही गए।
कोई लोक नहीं, परलोक नहीं,
जब सतगुरू का आदेश मिला।

• • • • •

भजन - 185

तू सैलानी मुसाफिर करने आए हो सफर,
तेरी दूर है मंजिल तेरा दूर है नगर।

ओ मेरे सैलानी करना न तू मनमानी,
इक दिन छोड़ के जाना ये जग फानी,
ये न समझना तुम्हें यहाँ है दुनिया ये बसानी।

ये सभी है माया, जिसमें है तू भरमाया,
ममता और हवस में जीवन गँवाया,
अंत समय में पगले तेरे कोई काम न आया।

ये दुनिया रैन बसेरा, तुमने लगाया डेरा,
जिस घर को कहते हो के ये घर मेरा,
लेकिन ये घर कुटुम्ब कबीला नहीं रहेगा तेरा।

सुन ले मन संसारी, अपनी अकल क्यों मारी,
क्या भगवान के आगे चलेगी तुम्हारी,
आए हो तो जाने की भी कर लो यहीं तैयारी।

• • • • •

भजन - 186

तू अपने घर में जरूर आ जा,
खुदी के बदले खुदा को पाजा।

क्यों इतने अरसे परदेस रहना,
जुदाई के गम ना तू इतने सहना।
तू छोड़ परदेस घर में आ जा...
क्यों छोड़ घर के महल गदेले,
क्यों खाक जंगल की छाने अकेले।
तू बच द्वन्द्व से घर में आ जा...
नदी ने ज्यों ही खुदी मिटाई,
बनी समुंदर मिटी जुदाई।
नदी के बदले बनी वो दरिया...
खुदी के जंग को रगड़ के धोना,
अभ्यास करना न गाफिल होना।
खुदी गई फिर खुदा को पा जा...
ये नाम रूप सब मिथ्या है सारा,
बना हुआ है सब उसका है पसारा।
तू हस्ति, भाँति, प्रिय में आ जा...

न नूर किरणों पर मस्त होना,
न ठहर रस्ते मंजिल को खोना।
तू असली अपने नूर में समा जा...

तू शीश खो दे और ईश पा ले,
तू त्याग सब कुछ और राज्य पा ले।
तू बनके राजा महल सजा जा...

• • • • •

भजन - 187

तू जहाँ-जहाँ भी होगा,
मेरा निश्चय साथ होगा, मेरा निश्चय।
तुम ही ने मुझको दी है, ये खुशी की बादशाही,
हर वक्त याद आती है, बेगम की शहनशाही।
तू अगर छिपा रहेगा, मेरा निश्चय साथ होगा...
मैं अगर कहीं भी होती, तो भी याद तू है प्रभु,
इक पल भी रह न सकती, तेरी याद बिन हे प्रभु।
चाहे कितना भी दूर हो तुम, मेरा निश्चय साथ होगा...
इस जगत के हर जर्रे में तेरी शक्ति देखती हूँ,
हर इक के हृदय में तेरी शक्ति देखती हूँ।
जो कदम-कदम चलूँ मैं, मेरा निश्चय साथ होगा...

• • • • •

भजन - 188

तेरी महफिल के दीवाने नशे में चूर रहते हैं,
वो इस दुनिया में रहने पर भी दिल से दूर रहते हैं।

मजा आता है लोगों को उधर से खुद वो मुड़ जाते
न तड़पन है, न बेचैनी, जो तेरे रंग में राते
जमाना यूँ कहे चाहे, बड़े बेशहूर होते हैं।
समझते हैं कि सब नश्वर, मिटा है मोह का बन्धन
वो बैठे हों या चलते हों, शिवोऽहम की सदा गुंजन
नहीं माया के हथकंडो से वो मजबूर होते हैं।

हो डेरा आसमां पर हो या जंगल में बसेरा हो
नहीं वो डूबता सूरज, अमावस का अँधेरा हो
जिधर पड़ती नजर उनकी, ख्याले नूर होते हैं।

पता नहीं देह क। उनको, तो फिर क्या औरों से मतलब
वो तो कूटस्थ निश्चल हैं, अविद्या के हैं सब करतब
वो खुद आशिक,
वो खुद माशूक, सदा भरपूर रहते हैं।

• • • • •

भजन - 189

तेरे ज्ञान के ये ढंग प्यारे-प्यारे
तेरे हाथों के इशारे प्यारे प्यारे
अब मुझे किसी से क्या लेना।
तूने ज्ञान का दीप जलाया, सबने सर आँखों पर लगाया।
तेरी आँखों को जिसने भी देखा, उसमें अपना ही डेरा बनाया।
है तेरा ये कमाल तू है कितना विशाल।
तेरे इन उपकारों का क्या कहना।

मैंने चाहा है जबसे तुझको,
अपने सपनों में है तुझको पाया।
मेरे दिल को तूने चुराकर, रात दिन का है चैन चुराया।
पिया एक तेरा प्यार।
जीवन भर का है साथ,
अब औरों के साथियों से क्या लेना।
जो भी पल तेरे संग बिताया, तेरी बाँहों में ही स्वर्ग पाया।
तूने जब-जब है आँख मिलाई,
प्यार का ही है सबक सिखाया।
हाय एक तेरी याद दिल में छाई दिन रात।
अब औरों की यादों से क्या लेना।

• • • • •

भजन - 190

तेरा दर्श पाने को जी चाहता है।
खुदी को मिटाने को जी चाहता है।
बहे गुरू जी की मोहब्बत का दरिया।
मेरा डूब जाने को जी चाहता है।
ये दुनिया है सारी नजर का ही धोखा।
कि ठोकर लगाने को जी चाहता है।
हकीकत दिखा दे हकीकत वाले।
हकीकत को पाने को जी चाहता है।
नहीं दुनिया की दौलत
दुनिया की चाह मुझको।
कि जुस्त लुटाने को जी चाहता है।
गमे दर्द देकर जुदा करने वाले।
तेरे पास आने को जी चाहता है।
पिला दो मुझे जाम भर-भर पिला दो।
कि मस्ती में आने को जी चाहता है।
न ठुकराओ मेरी ये फरियाद अब तुम।
तुम्हीं में समाने को जी चाहता है।
पुकारो मेरा नाम ले-ले पुकारो।
अगर फिर बुलाने को जी चाहता है।
उठा दो ये मुख से परदा उठा दो।
कि जलवा दिखाने को जी चाहता है।

• • • • •

भजन - 191

तेरे नाम का आसरा मिल गया है,
खुदा की कसम मुझको खुदा मिल गया है।

तेरे दर पे थोड़ा सा सर को झुका ले,
बनाई है किस्मत तेरे पास आके,
मुझे तेरे घर का--२ पता मिल गया है...

वो कहते हैं मुश्किल बड़ा तेरा पाना,
मैं कहती हूँ समझा नहीं ये जमाना,
मुश्किल नहीं है-२ तेरी मेहर को पाना...

न यम का खतरा है न मौत का डर है,
मुझ पर मेरे सतगुरू की नजर है,
जहाँ तू है रहता-२ वो दुनिया अमर है...

है करतार तेरी बड़ी मेहरबानी,
मुझे तूने दे दी है नई जिन्दगानी,
मुझे शाहों का शाह-२ खुश नसीब मिल गया है।

• • • • •

भजन - 192

तेरे चरणां विच रहा मैं गुरूदेव ऐसा वर दे,
निकलन ये श्वास मेरे, तैनूं याद करदे–करदे।

ऐ दो जहाँ दे मालिक, तूं दिल दी जाणंदा है–२
कइयां ते कीती रहमत, मेरी भी झोली भर दे।

ऐ प्रेम दे नशे नुँ पींदा कोई नसीब वाला,
कई तुर गये इस जहाँ नु तकरार करदे–२

दुनिया दी भीड़ अंदर, दामन तेरा न छोडाँ,
वैख मैं गिर न जावां अहंकार करदे–करदे।

विसरे कदी न मैंनू, तेरा ये नूर नूरानी,
ॲख भी कदी न झपके दीदार करदे–करदे।

संतोष मिल गया है पाके रत्न नूरानी,
इकरार हो गया है, इनकार करदे–करदे–२

• • • • •

भजन - 193

तमाशा तुझ में होता है तमाशे में क्यों रोता है।

जानना रूप है तेरा जानने से वो है नेड़ा।
जाने और आने वाले में, वृथा क्यों जन्म खोता है।।

हुआ जब जानना अपना, न माला है न है जपना।
मिटा मैं मेरे का सपना, गाफिल क्यों नींद सोता है।।

कोई काबे में कहते हैं, कोई काशी में जाने को।
अपने आप को भूला, दीवाना पाप धोता है।।

नहीं परलोक की आशा, नहीं कुछ चाह बनने की।
परमानन्द आपको पाकर, पूरण–पूरण में होता है।।

• • • • •

भजन - 194

तू सैलानी मैं सैलानी, तू परदेशी मैं परेदेशी।
अगम देश से आयें हैं हम सैर करण सुवहानी।

है हमारा देखने से काम, नहीं भाये इस उस का गम।
सैलानी का सैर से मतलब, बस्ती होवे या वीरानी।।

अपना है न पराया कोई, अच्छा बुरा है न कोई।
हम हैं मुसाफिर फरक रखें क्यों, करें क्यों नाहक नादानी।।

कदम–कदम पर काक महल है,
मुमल माया का छलबल है।
राणे जैसा रमज से चलता, जग में विरला कोई ज्ञानी।।

राणे नगरी मन भरमाये, कितने मुसाफिर हैं भटकाये।
देश भुलाकर परदेशियों से, दिलकुश दुनिया है ये फानी।।

आँख मिले पर दिल क्यों अटके,
भँवर जैसा मन क्यों है भटके।
रस का लोभ फँसाता है, हासिल होगी हैरानी।।

दुनिया के गुलजार को देखो, फूल को देखो काँटे को देखो।
प्यार और नफरत से काम है क्या, नजर चाहिये अकसानी।।

अपनी आदि जाति पहचानो, अपने से अपने को जानो।
सब से पद है तेरा ऊँचा, लाल है तू लासानी।।

• • • • •

भजन - 195

तू ही सागर तू ही किनारा,
ढूँढता है तू किसका सहारा।

कभी तन में कभी मन में उलझा,
तू सदा अपने दामन में उलझा,
सब से जीता तू अपने से हारा।
ढूँढता है...

विष निकाले कि अमृत निकाले,
डूब के थाह अपनी लगा ले,
तू ही शिव, तू ही शिव का दुलारा।
ढूँढता है...

पाप क्या पुण्य क्या ये भुला दे,
कर्म कर फल की चिन्ता मिटा दे,
ये परीक्षा न होगी दुबारा।
ढूँढता है...

उसका साया है उसी का दर्पण,
तेरे सीने में है उसी की धड़कन,
तेरी आँखों में उसका इशारा।
ढूँढता है...

• • • • •

भजन - 196

तेरे जैसा कौन है सतगुरू हर आँख में तेरा नूर है,
नजरों से रहकर दूर भी किसी दिल से तू नहीं दूर है।
तेरे मुख पे है ये गर्जना।।

तू देह नहीं तू है आत्मा सब नाम रूप ये नाश है,
बस एक है परमात्मा–२ इस राज से था मैं बेखबर।
हर शय में तेरा जहूर है...नजरों से...

तेरा सच्चिदानन्द रूप है दर्पण में तूने दिखला दिया,
तेरे दर पे मैं फकीर था, तूने क्या से क्या है बना दिया–२
तेरे हाथ से जो पिया है मैंने उसी जाम का यह सरूर है।।

तेरे नाम से ही बहार है आबाद है मेरी जिंदगी,
हर स्वास में तेरी याद है तेरी याद है मेरी बंदगी–२
तू शमा है तो मैं पतंग हूँ यही प्यार का दस्तूर है।।

अब मंजिलों की भी चाह नहीं लहरों में साहिल पा लिया,
कोई हाल का अब गम नहीं जीना तूने है सिखा दिया–२
चाहे फूल हो चाहे खार हो मुझे सब तेरा मंजूर है।।

• • • • •

भजन - 197

तेरे नाम की लौ कुछ ऐसे लगी,
पल भर भी तुझे बिसरा न सकूँ।

कुछ प्रेम में अखियाँ भर आई,
कुछ प्रेम में ऐसा दिल डूबा।
अपनी हालत खुद ही समझँ,
लेकिन तुझको समझा न सकूँ।।

पथ भूले को हो राह तुम्हीं,
मेरे जीवन की हो आस तुम्हीं।
तुम पास रहो इतने हरदम,
फिर भी क्यों तुमको पा न सकूँ।।

जीवन की मधुमय राहों में,
तुम मेरे साथी हो ही चुके।
इस प्रेम भरी महफिल में अब,
तुमको मैं कभी बिसरा न सकूँ।।

• • • • •

भजन - 198

तेरे फूलों से भी प्यार
तेरे काँटों से भी प्यार
जो भी देना चाहे, दे दे करतार
दुनिया के तारणहार...
चाहे सुख दे या दुःख
चाहे खुशी दे या गम
मालिक जैसे भी रखेगा वैसे
रह लेंगे हम–२
चाहे हँसी भरा संसार दे
या दे आँसुओं की धार
जो भी...
हमको दोनों हैं पसन्द
तेरी धूप और छाँव
दाता किसी भी दिशा में ले चल
जिन्दगी की नाव
चाहे हमें लगा दे पार
डुबा दे चाहे हमें मंझधार
जो भी...

• • • • •

भजन - 199

तुम्हें पाके हमने जहां पा लिया है,
जमीं तो जमीं आसमां पा लिया है।

हमको चढ़ी है सच्ची ये जो मस्ती,
मिटा न सकेगी कोई भी हस्ती,
जब से है भगवान तुम्हें पा लिया।

दुनिया की तो नियामत ये कुछ भी नहीं है,
फिर भी ये मूरख भटक ही रहा है,
सच्चा ये खजाना मैंने पा लिया है।

तुम्हारे ही प्रेम में बनी हूँ मैं जोगन,
सिवा अब तुम्हारे मेरा कोई न भगवान,
जड़ और चेतन में तुम्हें पा लिया है।

• • • • •

भजन - 200

तू प्यार करे या ठुकराएं,
हम तो हैं तेरे दीवानों में।
चाहे तू हमें अपना न बना,
लेकिन न समझ बेगानों में।।

मरने से हमें इन्कार नहीं,
जीते हैं मगर इक हसरत में।
भूले से हमारा नाम कभी,
आ जाए तेरे अफसानों में।।

मिटते हैं मगर हौले-हौले,
जलते हैं मगर इक बार सनम।
हम शमा का सीना रखते हैं,
रहते हैं मगर परवानों में।।

• • • • •

भजन - 201

तुझ बिन कोई दूजा नाहीं, मेरे सतगुरू इवें सिखाया है।

जित कित तू ही तेरी सूरत, तेरा रूप अपारा है,
स्वांग भी तू ही, साक्षी भी तू ही, तू ही खेल रचाया है।

नाम भी तू ही नामी भी तू ही, दिल बिच भेद न पाया है,
नाम बिना बेनाम भी तू ही, आप में आप समाया है।

जाम भी तू ही, साकी भी तू ही, ये आप शराब पिलाया है,
श्याम भी तू ही, गोपी भी तू ही, ये सब तेरे को भाया है।

गुरू भी तू ही, वेद भी तू ही, जीवन ज्योति जगाया है,
तेरी कुदरत तू ही जाने, दूसरा अन्त न पाया है।

• • • • •

भजन - 202

तेरा ये दर न भूले, दे दे चाहे सारे खजाने।
पर तू न भूले, तेरा ये दर...

तेरा दर्शन सतगुरू सारे जग से मीठा लागे।
हमने बाँध लिये हैं इन चरणों में प्रीत के धागे।
हम बच्चे हैं तू भगवान है, साथ न छूटे।

जब अमृत वचनों का, ये सावन बरसाता है तू।
युग-युग के प्यासों की जैसे, प्यास बुझाता है तू।
मन की प्यासी नदियों का, ये सागर न भूले।

हर कोई न समझे, प्रीत गुरू की होती क्या है।
जिस पर मेहर तू कर दे, बस उसने ही समझा है।
हमपे लुटाई मेहर जो तुमने, पल भर ना भूले।

• • • • •

भजन - 203

तेरी अमर कहानी तेरी आत्मा ही जाने, परमात्मा ही जाने।

कितने ही कर्मों से पाप कमाये तूने।
कितने ही पर्दों में पाप छिपाये तूने।
भले बुरे की कहानी तेरी आत्मा ही जाने।
ओ साथी रे...

जग जिसे कहते हैं कर्मो की खेती है।
जैसा कोई बोये यहाँ वैसा फल देती है।
तूने बोया क्या था प्राणी।
ओ प्राणी रे...

गुरू के द्वारे तेरा आना ही बहुत है।
बोल के न बोल पछताना ही बहुत है।
जो है श्रद्धा तुम्हारी।
ओ साथी रे...

• • • • •

भजन - 204

तेरी शरण में जो आ गया, भव से उसे छुड़ा दिया।
चाहे वो कैसा भी पातकी, पावन उसे बना दिया।

दर–दर भटकता है वही, तेरी शरण जो आया नहीं।
भूले से अगर गया कभी, रस्ता उसे बता दिया।

भाग्य प्रबल उसी का है, त्याग सफल उसी का है।
जीवन सफल उसी का है, जिसको तूने जगा दिया।

जिसको भरोसा हो गया, बेड़ा ही पार हो गया।
अलमसत फिर वो हो गया, प्याला जिसे पिला दिया।

जिसकी लगन हो आप से, उद्धार होवे पाप से।
छुट जाये जग के ताप से, शीतल उसे बना दिया।

तुम तो पतित के नाथ हो, भक्त जनों के साथ हो।
मुझसे अधम विमूढ़ को, दाता तूने अपना लिया।

• • • • •

भजन - 205

तू सत् हो जा गुरू प्यार मिले,
तू चित् हो जा गुरू प्यार मिले,
तू आनन्द हो जा गुरू प्यार मिले।

गुरू चरणों में मौत हुई है समझ ले अपने तन की।
मिट गई हस्ती मिट गई हर एक भूख प्यास अब मन की।
तू भस्म हो जा गुरू प्यार मिले।

जीवन में अब मिले जो पल–पल ज्ञान की मदिरा पी ले।
मर के मिट के गुरू चरणों में आतम रस में जी ले।
बेसुध हो जा गुरू प्यार मिले।

जान ले कितना आतम सुख है सत्य रूप में अपने।
ज्ञान के सागर में डूबे हर जनम–जनम के सपने।
तू स्थिर हो जा गुरू प्यार मिले।

समझ ले तेरा आखिरी पल है कर ले सुलह दुश्मन से।
करम से मिट जा, धरम से मिट जा, काम नहीं अनबन से।
तू मुक्त हो जा गुरू प्यार मिले।

• • • • •

भजन - 206

तुम्हीं ने दिया मुझको प्रेम खजाना
कि दिल गाए सतगुरू तेरा शुक्राना
जगत में बाहर मुखी हो रहे थे
सुख में सुखी दुख में दुखी हो रहे थे
सिखा हर हाल में दिया मुस्कराना, कि दिल ...
खुदगर्ज होकर अपने लिए ही जिए थे
अपने ही हाथों विष के प्याले पिए थे
रहमत तेरी न लागे अब कोई निशाना। ये दिल ..
कोई न पहुँचे इस दर पर बिना कुर्बानी
मगर तेरी महिमा सतगुरू अभी मैंने जानी
जले बन के शमां तभी आया परवाना। ये दिल ...
उपकारों की चर्चा जुबां कर न पाए
एहसानों का कर्जा कैसे चुकाएं।
सिवा आसुँओं के क्या दे नजराना। ये दिल ...

• • • • •

भजन - 207

तेरी चौखट पे आना मेरा काम था,
इतना काम भी मुझ से किया न गया।
तेरी रहमत को क्योंकर मैं इल्जाम दूँ,
उसको बख्शीश का मौका दिया न गया। तेरी...

मैंने सोचा था कि दर पे तेरे आऊँगा,
फिर वहाँ से न उठकर कहीं जाऊँगा।
सोचते–सोचते उम्र सारी गई,
एक सज़दा भी मुझसे किया न गया। तेरी...

तेरी रहमत बरसती रही रात दिन,
तार तार अपना दामन रहा उम्र भर।
मैं समेटूँ कहाँ रहमतों को तेरी,
चाक दामन था मुझसे सिया न गया। तेरी...

मैं हुआ हूँ तुम्हारे ही होने से जब,
तुझपे और तुझमें बाकी रहा फर्क कब।
नाम तेरा मेरा अपना ही नाम था,
नाम अपना भी मुझसे लिया न गया। तेरी...

• • • • •

भजन - 208

तुमको कैसे पाऊँ रे प्रियतम,
तू प्रियतम मैं तेरी दासी,
नित दर्शन को नयन प्यासी।
मन मंदिर में तुम को पूजूँ,
जीवन भेंट चढ़ाऊँ रे प्रियतम।

तू सब कुछ मैं कुछ भी न साजन,
तू मेरे जीवन का जीवन।
तू बन चाँ चकोरी बनूँ मैं,
उड़ते उमर गवाऊँ रे प्रियतम।

तुम को पाके खुद को गवाऊँ,
खुद को गँवा के तुमको पाऊँ।
तू भी तू बन मैं भी तू बनँ,
तुझ में खुद को समाऊँ रे प्रियतम।

.....

भजन - 209

तू जो चाहे परम पद पाना
गुरू वचनों से प्रीत लगाना

श्वासों के अनमोल रतन, कर गिन-२ गुरू को अर्पण
प्रभु नाम का हो जा दीवाना, गुरू वचनों ...

सीख ले सतगुरू से युक्ति, भव बन्धन से पा मुक्ति
तेरा छूटेगा आना और जाना, गुरू वचनों ...

मन माया से मुड़ जाए, गुरू चरणों से जुड़ जाए
जीवन का यही है इक निशाना, गुरू वचनों...

भक्त रहो जग में ऐसे, जल में कमल रहे जैसे
कांटों में भी तुम मुस्कराना। गुरू वचनों ...

.....

भजन - 210

तुमने मुझको प्यार किया है जितना, कौन करेगा इतना।
तुमने मुझ पर एहसान किया है जितना, कौन करेगा इतना।

तुमसे कैसे मिलन हुआ था, हम खुद समझ न पाये।
तेरे थे हम, तेरे हैं तेरे ही रह पाये।
प्यार में तुमने खींच के मुझको बना लिया है अपना।

जब–जब मैं कुछ भूल गई थी, तुमने मुझको सँभाला।
गोद में अपनी मुझको बिठाकर, प्रेम का राज समझाया।
तेरी नजर ने छिपके–छिपके घायल किया है जितना।

हम दोनों के प्यार में अब तो, और न कोई आये।
चाँद चकोरी बन के जगत में, प्रेम के गीत हम गायें।
कैसे कहें हम याद में तेरी, जलते रहे हैं जितना
कौन जलेगा इतना।

• • • • •

भजन - 211

तुम्हारी भी जय–जय, हमारी भी जय–जय,
न तुम हारे न हम हारे।
शरण तेरी ले के चला हूँ मैं जग में,
जो हम हारे तो कैसे हारे।
नाम तेरा लेता है हर कोई पर दिल से न भजता है,
जब दुःख आए तो रोता है बचा लो–२
तो तुम उनसे पूछो अभी तक कहाँ थे,
जो अब आए न पहले आए।

लीला देख के रोया है जग का हर एक प्राणी,
अंत में तेरी शरण को ले के अपनी हार ही मानी है।
देखो दुनिया वाले देखो जो ऐसा न होगा कोई जग में,
जो गिरे को उठाये, दुःखों से बचाये।

आज तलक कोई न समझा है जग में कब तक जिंदा,
फिर भी देखो राम का भजना, ठीक ही समझे अपनी निंदा।
जागो दुनिया वालों जागो, जो तुम अभी तक नहीं जागे,
तुम्हारा ही मालिक जब तुमसे है राजी।
तो तुम पाओ तो सहजे पाओ।।

• • • • •

भजन - 212

तेरे दर ते आ गईयां दर छडया नहीं जान्दा,
पल्ला फड़या तेरा दाता पीछे हटया नहीं जान्दा।

बिगड़ी तकदीरां नूं तुसी आप संवार दे हो
हथ दे के कश्ती नूं तुसी पार लगान्दे हो
ऐ जीवन हुन मेरा चरणों विच लग जान्दा।

ए जाम महोब्बत दा इक बार जो पी लेन्दा
भुल जान्दे ने गम सारे मस्ती विच जो लेन्दा
ए मस्ती उतर दी नहीं नशा चढ़ के उतर जान्दा।

तस्वीर तेरी दाता मेरे दिल विच वॅस गई ए
मैं कॅढ न सकदी हां रोम-रोम बिच बस गई ए
जदों बाणी बजदी ये, साथों रुकिया नहीं जान्दा।

ऐ प्रेम दा सौदा ए सिर धड़ दी बाजी ए
असां दुनिया तों की लैना साडा सतगुरू राजी ए
असां दिल विच वसा लिया साथों कडिया नहीं जान्दा।

• • • • •

भजन - 213

तेरी गोद में हैं तेरे चरणों में हैं
तेरी बाहों में हैं तेरी शरण में हैं
हमें कैसे कोई सताए, हमें कैसे कोई रिझाए

तेरी गोद में ममता मिली है तेरे चरणों में शक्ति पूरी
तेरी बाहों का मिला सहारा, तेरी शरण में मुक्ति पूरी। हमें...

तुझसे ही श्वांस मिले हैं कैसे हम भूलेंगे
तुझसे ही जीवन झूला, तुझमें ही झूलेंगे। हमें ...

कहीं ऐसा नहीं है कोना, जहां नहीं है तेरी भक्ति
जब मन में तुझे बसाया, हर तरफ है तेरी बस्ती। हमें ...

दुःख दर्द में तुझको पाया, हर दुःख हुआ हमको प्यारा
हर घट में तू ही दिखाया, इक तू ही तो है सहारा।

• • • • •

भजन - 214

तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार रे,
उदासी मन काहे को डरे,
रे निराश मन काहे को करे। उदासी...

नैया तेरी राम हवाले,
लहर लहर हरि आप संभाले,
हरि आप ही उतारे भवपार। उदासी...

काबू में मझधार उसी के,
हाथों में पतवार उसी के,
बाजी जीत ले या हार। उदासी...

सहज किनारा मिल जायेगा,
परम सहारा मिल जाएगा,
डोरी सौंप के तो देख एक बार। उदासी...

• • • • •

भजन - 215

तेरा-तेरा-तेरा यहां तेरा कुछ भी नहीं है
तू है, तू है, तू है, सारी सृष्टि में तू है

तेरा मेरा करता रहेगा जनम-मरण का चक्कर
तू तेरे के चक्कर में ही खा रहा तू टक्कर
तू तेरे के जाल से निकले तेरा कुछ भी नहीं है।

जीव भाव का कपड़ा पहन कर सागर में गोते खा रहा
अपने को न जाना, आना जाना, बना रहा
चोला तूने पहना हुआ है चोला तू नहीं है ...

करम का भाड़ा फोड़ दे तू क्यों संशय में आ गया
तू तो पूर्ण ब्रह्म था पर धोखा कैसे खा गया
जीव भाव का जाल बुना पर जाल ते नहीं ...

सपने का है सकल पसारा सपने में क्यों खो गया
जब देखा जगत है सपना, सच ये कैसे हो गया
आंख खोल के देख ले प्राणी, अपना कुछ भी नहीं है

तेरा-तेरा कहकर के तू सब भगवन को अर्पण कर
तू अपने ही घर में आजा, अपना ही दर्शन कर
अस्ति, भाति, प्रिय में आ जा, नाम रूप नहीं है।

• • • • •

भजन - 216

तू है हमारा और हम तेरे–२ हां तू है ...
तेरे प्यार में तेरे द्वार पर डाल दिये हमने डेरे
तू है हमारा और हम तेरे ...

तेरे चमन का रंग अनोखा है–२
दूसरे बागों में धोखा ही धोखा है
मुरझाये दिल खिले रहे–२ चाहे कितने भी यहां गम घेरे
तू है हमारा ...

किसकी मजाल तेरे दर से उठायेगा
किसकी है ताकत हमें कौन बहकायेगा
मुख से निकले यही दुवा तू कभी ना मुझसे मुँह फेरे ...
तू है हमारा ...

तेरा रास्ता चमकता मिलेगा
कोई भी राही ना भटका मिलेगा
हर पग पर मिट जायेंगे मन की शंका के अन्धेरे–२
तू है हमारा ...

• • • • •

भजन - 217

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना,
जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूँ।
मैं आ तो गया हूँ मगर जानता हूँ,
मैं सर को झुकाने के काबिल नहीं हूँ।।
ये माना कि दाता हो तुम कुल जहां के,
झोली फैलाऊँ कैसे तेरे द्वार आके।
जो पहले दिया है वो कुछ कम नहीं है,
मैं और ज्यादा उठाने के काबिल नहीं हूँ।।
तुम्हीं ने अदा की मुझे जिन्दगानी,
महिमा तेरी फिर भी मैंने न जानी।
करजदार तेरी दया का हूँ इतना,
जिसे मैं चुकाने के काबिल नहीं हूँ।।
जमाने की चाहत में खुद को भुलाया,
विषयों में फँसकर तुझको भुलाया।
गुनहगार हूँ मैं सजावार इतना,
तुझे दिखाने के काबिल नहीं हूँ।।
तमन्ना यही है कि सिर को झुकाऊँ,
तेरा दीद इक बार जी भर के पाऊँ।
सिवाए दिल के टुकड़े के ऐ मेरे दाता,
मैं कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूँ..

• • • • •

भजन - 218

तुम शरणाई आया ठाकुर, तुम शरणाई आया।
उतर गया मेरे मन का संसा, जब तेरा दर्शन पाया,
सतगुरू तुम शरणाई...

दुःख नासे सुख सहज समाए,
आनन्द–आनन्द गुण गाया,
ठाकुर तुम शरणाई...
अनबोलत मेरी वृथा जानी, अपना नाम जपाया,
ठाकुर तुम शरणाई...

बाँह पकड़ कढ़ लीने जन अपने, बहे अंध कूप ते माया...
कह नानक गुरू बंधन काटे, बिछड़त आन मिलाया,
ठाकुर तुम शरणाई...

• • • • •

भजन - 219

तोरा मन दर्पण कहलाए रे,
भले बुरे कर्मों को देखे और दिखाए।
मन ही देवता, मन ही ईश्वर, मन से बड़ा न कोई।।

मन उजियारा जब–जब फैले, जग उजियारा होए।
इस उजले दर्पण पर प्राणी, धूल न जमने पाए...

सुख की कलियाँ, दुःख के काँटे, मन सब का आधार।
मन से कोई बात छिपे न, मन के नैन हजार...

जग से चाहे भाग ले प्राणी, मन से भाग न पाए।
तन की दौलत ढलती छाया, मन का धन अनमोल...

तन के कारण, मन के धन को मिट्टी में ना रोल।
मन की कदर को भूलने वाले, हीरा जन्म गंवाए..

• • • • •

भजन - 220

तुझमें ओम्, मुझमें ओम्, सबमें ओम् समाया।
सबसे कर ले प्यार, जगत में कोई नहीं है पराया।।

जितने हैं संसार में प्राणी सबमें एक ही ज्योति,
एक माला के पुष्प हैं सारे एक माला के मोती,
ना जाने किस कारीगर ने एक मिट्टी से बनाया।

एक आत्मा एक प्रेम है एक है मंजिल हमारी,
एक को जान एक में रहें एक निश्चय हमारा,
सतगुरू के वचनों को मानें ये ही उत्तम पूजा।

छूत-छात और भेदभाव की दीवारों को तोड़ दे,
राग-द्वेष और मोह ममता के बन्धनों को तोड़ दे,
जागो और जगाओ सबको समय है ऐसा आया।

भेदभाव के बन्धन तोड़ो आत्म संग से प्रीति जोड़ो,
सतगुरू का फरमान यही है मेरे दादा का ज्ञान यही है,
सबमें देखो झाँकी प्रभु की सबमें वो ही समाया...

• • • • •

भजन - 221

तू तो बेमिसाल है सतगुरू,
तेरे जैसा कौन है जहान में।
तूने जीवन मेरा पलट दिया,
तेरे जैसा कौन है जहान में।

तेरा चाँद तारों में नूर है,
हर शए में तेरा जहूर है,
ये नजर-नजर का है फासला,
किसी दिल से तू नहीं दूर है।
तेरा जल्वा सतगुरू हर जगह-जगह

हम अमीर हैं या गरीब हैं,
तेरे दर पे आके फकीर हैं,
हुई जिसपे नजरें करम तेरी,
वो जहाँ में फिर ना उकीर है।
जिसे तू मिला उसे सब मिला-२

• • • • •

भजन - 222

तेरा नाम गुरू जो ध्याए रे–२
जन्म–जन्म के मोह माया से निश्चय छुट वो जाए।

एक रत्ती भी नाम तेरे की, जिस घट में बस जाए
भूल जाए वो सारे गम को, सुख साचा वो पाए।
घास के सूखे ढेर को जैसे जरा सी आग जलाए तेरा नाम...

तेरे जैसी बने जीवन मेरी, दिल ने यही पुकारा
मैंने तेरा साथ है पाया जब भी मैंने चाहा।
सारी रैना तुझमें बीते तेरा ही रंग लग जाए...

जो भी तेरे द्वारे आए, हर चिन्ता मिट जाए
कट जाए उसकी यम की फाँसी सुख साया पाए।
तेरी रहम से सतगुरू अपना जीवन सफल बनाएँ...

जब–जब भीड़ पड़ी भक्तों पे तूने दिया सहारा
नैया उसकी पार लगा दी बनके खेवनहारा।
जिस ऊपर तेरा हाथ है स्वामी वो कैसे दुःख पाए तेरा नाम...

• • • • •

भजन - 223

तेरी शरण में जो आ गया, भव से उसे छुड़ा दिया।
चाहे वो कैसा भी पातकी, पावन उसे बना दिया।

दर–दर भटकता है वही, जो तेरी शरण गया नहीं।
भूले से अगर गया कभी, रास्ता उसे बता दिया।

भाग्य प्रबल उसी का है, त्याग सफल उसी का है।
जीवन सफल उसी का है, जिसको तूने जगा दिया।

जिसको भरोसा हो गया, बेड़ा ही पार हो गया।
अलमस्त फिर वो हो गया, प्याला जिसे पिला दिया।

जिसकी लगन हो आप से, उद्धार होवे पाप से।
छुट जाये यम के ताप से, शीतल उसे बना दिया।

तुम तो पतित के नाथ हो, भक्त जनों के साथ हो।
मुझमें अधम विमूढ़ को, दाता तूने अपना लिया।

• • • • •

भजन - 224

तेरी इको ही झलक मेरे लॅखां हो मरज
यही है अकसीर मेरे सतगुरू
तैनूं राम कहाँ कि मैं कृष्ण कहाँ
तू तो दोवां दा है पीर गुरू...

श्रीराम दे विच बल भारी सी
पर आखर धनुष धारी सी
इॅथे धुनष नहीं कोई बाण नहीं
तेरी ॲख शमशीर मेरे सतगुरू...

श्री कृष्ण दी बाँसुरी बजदी सी
ते खलकत उठ-उठ भजदी सी
असां बिन मुरली ते बिन ताना
तेरी बाणी हो फकीर मेरे सतगुरू...

की जाणां की तू कीता है
पल भर दे विच लुॅट लीता है
मेरे रोम-रोम दे नाल छुपी
तेरी इक तस्वीर मेरे सतगुरू तैनूं राम...

• • • • •

भजन - 225

तेरे पूजन को भगवान बना मन मन्दिर आलीशान।

किसने देखी तेरी सूरत,
कौन बनाए तेरी मूरत।
तेरा रूप अनूप महान,
बना मन मन्दिर आलीशान...

तू ही जल में तू ही थल में,
तू ही डाल के हर गुलशन में।
तेरी लीला अपरम्पार, बना...

तूने राजा रंक बनाए,
तूने भिझुक राज बिठाए।
तेरी लीला अपरम्पार, बना...

झूठे जग की झूठी माया,
मूर्ख उसमें क्यों भरमाया।
कर कुछ जीवन का कल्याण, बना...

किसने जानी तेरी माया,
किसने भेद न तेरा पाया।
हारे ऋषि मुनि कर ध्यान, बना मन...

• • • • •

भजन - 226

तू ही मेरी जिन्दगी तू ही आधार है।
तुझ संग सतगुरू मेरा जन्मां दा प्यार है।।

अपने चरण का दिया तूने अनुराग,
यही मेरी आत्मा का अचल सुहाग है,
यही मेरी शोभा यही श्रृंगार है।
तुझ संग...

दुनिया जो राहों में काँटे बिछाए,
तेरा प्यार मुझसे जो छीन ले न जाए,
तेरी जो कृपा रहे बस बेड़ा पार है।
तुझ संग...

गाफिल ना हो जाऊँ–तुझको न भूल जाऊँ,
ऐसी आशीष दीजो मन का न धोखा खाऊँ,
तेरा ही सहारा सतगुरू मुझे स्वीकार है।
तुझ संग...

हाथ बढ़ाकर अपना मुझको उठा लो,
चरण कमल में नाथ लगा लो,
तेरी जो कृपा रहे बस बेड़ा पार है।
तुझ संग...

• • • • •

भजन - 227

तेरी आयु यूँ ही बीत जाएगी,
सतगुरू की शरण आओ जी।

जहान जिसे ठुकराए, गुरू गले से लगाए।
उसे अपना बनाए गुरू जी, सतगुरू...

देहाध्यास मिटाए, आत्मा में टिकाए।
ब्रह्म स्वरूप बनाए गुरू जी, सतगुरू...

गुरू काम से छुड़ाए, गुरू क्रोध से बचाए,
लोभ मोह मद से छुड़ाए, गुरू जी...

विषय गुरू ही छुड़ाए, विकार से बचाए।
जन्म मरण मिटाए गुरू जी...

गुरू शरणी जो आए, जगत मिथ्या कराए।
सपने से जगाए गुरू जी...

• • • • •

भजन - 228

तेरे हाथ में है जीवन बचाना,
हीरा कौड़ी के लिए न गवाना।

दुनिया न बदले बदल जायें हम,
फिर तुझे मिलेगा परमानन्द।
पर विषयों से ममन को हटाना...

कल का नाम है तेरा काल,
यहीं है आज और यहीं है अब।
गुरू वचनों से मन को लगाना...

क्यों सोचे तू कल की रे,
खबर नहीं इक पल की रे।
हर श्वास है तेरा बेगाना...

आत्मा तो है सदा अजर-अमर,
जीना मरना इस देह का धरम।
सुनो-सुनो ये सच्चा अफसाना...

• • • • •

भजन - 229

तेरा प्यार खींच कर लाया मोहे साँवरिया तेरे द्वारे,
तब अपना आप भुलाया जब दर्शन किए निहारे।

तेरे द्वारे पर जो आए, वो खाली कभी न जाए
जो जैसा भाव जगाए, वो वैसा भी फल पाए
तू करे कृपा की छाया, और बिगाड़े काज सँवारे।

कोई ध्यानी तुझे ध्याए, ज्ञानी भरम भेद मिटाए
कोई योगी योग लगाए, कोई रो-रो तुझे मनाए
तूने सबको गले लगाया, ओ दुनिया के रखवाले।

मेरी तुम संग प्रीत मुरारी, झूठी सब दुनियादारी
तेरी लीला सबसे न्यारी, कोई जाने हैं अधिकारी
तेरा भेद न कोई पाया, ऋषि मुनि यत्न कर हारे।

• • • • •

भजन - 230

तेरे दर से जिसे मुहब्बत है
फिर उसे और क्या जरूरत है

हर घड़ी उसकी चैन से गुजरे
जिसपे होती तेरी इनायत है–२ तेरे दर से...

जन्मों–जन्मों के जुल्म माफ करे–२
ऐसी सतगुरू की ये अदालत है–२ तेरे दर से...

उसकी कुटिया महल से है ऊँची
नाम की जिसके पास दौलत है–२ तेरे दर से...

तेरे दर पे कमी नहीं देखी–२
जिसको जिस चीज की जरूरत है–२ तेरे दर से..

तेरे चरणों में आके देखा है–२
हर घड़ी कितनी खूबसूरत है–२ तेरे दर से...

• • • • •

भजन - 231

तेरा भाणा मीठा लागे शुकराना–मुस्कराना दादा का कहना
ना कुछ बनना ना कुछ करना ना गम से घबड़ाना
दादा का कहना

ब्रह्मज्ञान ऐसा हीरे मोती जैसा
मिलता नसीब से बिना पाई पैसा
हो ऽऽ ये दादा की बात है
अवसर न गंवाना दादा का कहना...

राजी रहे हम उसकी रजा में
मिले तो ईद होवे ना मिले तो रोजा
हो ऽऽ इच्छा गात्राम अविद्या है इच्छा दूर भगाना...

रूप अनेक है लेकिन सबमें एक है
भेद जो ये जानता उसकी बुद्धि नेक है
हो ऽऽ कण–कण में है नूर समाया विरले ने पहचाना...

मौन ही तो सोन है मै ना तेरा गहना
पुरूषार्थ है देव तेरा आगे बढ़ते रहना
हो ऽऽ श्रद्धा और विश्वास सहारे
जीवन से तर जाना...

• • • • •

भजन - 232

तुझे हाथों से न देते हुये देखा
पर झोलियां भरी देख ली
कहां किस रूप में कब किसी को
क्या दिया है ये कोई ना जाने
तेरी लीला है क्या तू ही जाने
किसे देना है कब किस बहाने
बड़े ही रूप तेरे बड़े ही नाम तेरे
निराले ढंग तेरे अनोखे धाम तेरे
तुम्हारी क्या है माया कोई न जान पाया–२ जान पाया–२...
वो माटी भी चंदन सी महक तेरी करूणा ने जिसको छुआ है
प्रभु सपने में भी जो न सोचा तेरी रहमत से प्रभु वो हुआ है
अंधेरा हो सवेरा इशारा हो जो तेरा
किया ना शोर तूने हिलायी डोर तूने
पल्ले भरपूर हो गये सभी दुख दूर हो गये–२ दूर हो गये
कोई कुछ मुँह से बोले न बोले हर किसी की तुझे ही खबर है
एक कण भी छिपेगा ना तुझसे जर्रे–जर्रे पे तेरी नजर है
गगन की छत पे हां नहीं उतने सितारे
जितने एहसान प्रभु हम पर है तुम्हारे
तुम्हारी क्या है माया कोई ना जान पाया–२ जान पाया–२...

• • • • •

थ

भजन - 233

था मुरझाया जीवन गुरू ने खिलाया
तो लब पे मेरे सतगुरू तेरा नाम आया
मोहब्बत का जब भी कहीं जिक्र आया
तो लब पे मेरे सतगुरू तेरा नाम आया

हाँ यही प्यार करने का इनाम है
प्रेम भक्ति का मिलता वरदान है–२
किया प्यार इतना छलक कर आया
तो दिल ने मेरे तेरा शुकराना गाया

इस जहां में सभी ने है ठुकरा दिया
इक तूने गुरू मुझको अपना लिया–२
जमीं से उठाकर पलक पे बिठाया
तो दिल ने मेरे तेरा शुकराना गाया

तेरे दनर पे आकर देखी बहारें
तेरा प्रेम पा हम तुझ पर वारें
हुआ जब रोशन मेरा दिल दीवाना
तो दिल ने मेरे तेरा शुकराना गाया

• • • • •

द

भजन - 234

देखी ज्योति निराकार की, इन नाजुक अखियों में।

आँखे अलग-अलग हैं बनाई, मनके तो सबमें एक हैं।
देह अलग-अलग है सभी की, साक्षी तो सब में एक है।
है झलक उसी के प्यार की, इन...

जीवन अलग-अलग है सभी का, जीवन दाता एक है।
हृदय अलग-अलग है बनाया, साथ में दिया विवेक है।।
देखी लीला अपरम्पार की, इन...

एक ही साक्षी चेतन है, पर एक से हुआ अनेक है।
बूँद समायी सागर में, पर सागर समाया बूँद में।।
देखी रचना उस कलाकार की, इन...

शान्ति की राह दिखाने वाला, मेरा सतगुरू एक है।
जीवन नौक पार लगाने वाला मेरा मांझी एक है।।
देखी महिमा उस दिलदार की, इन...

जीव-जगत यों भासत है, पर उसको बनाने वाला है।
पलते अलग-अलग हैं प्राणी, पालने वाला एक है।।
देखी अद्भुत छवि तेरे प्यार की, इन...

• • • • •

भजन - 235

देख तेरे सतसंग की महिमा मैं हो गई हैरान,
कितने भगत बने भगवान-२।

कैसा अनोखा बाग लगाया,
जिसमें अनेकों फूल खिलाये,
हर एक फूल की शोभा न्यारी,
देख के मुझ को आई बहार।
फूल देखकें तेरे दादा मैं हो गई मस्तान।।

हर एक फूल को तुमने बनाया,
अपने तन मन धन को लगाकर,
एक-एक फूल में जान है डाली,
प्रेम के जल से तुमने सींचा।
फूल देख के मुझको सद्‌गुरू आयी तेरी याद।। कितने...

ऐसा बगीचा कहीं न देखा जैसा बगीचा तुमने बनाया,
देख बगीचा बहार हुई मैं, मैं भी अपना आप गँवाया।
कैसे करूँ मैं महिमा तेरी, तेरा गुल गुलजार।।

फूलों की जब सजावट देखी, नाम रूप से न्यारी-२
सभी फूलों में खुशबू तेरी, लागी मुझ को प्यारी-२
भगवान बन के और सबको बनाया भगवान।।

• • • • •

भजन - 236

दादा के ज्ञान में जो शक्ति है
वो ही दर्पण को साफ करती है,
दादा ने बीज जो उगाए हैं
आज तो उनसे फल निकलते हैं।

जब से डोरी गुरू से जोड़ी है,
तब से जीवन गुरू ये तेरा है,
अब तो दूजा नजर नहीं आता,
सब में तेरी ही झलक दिखती है।
दादा...

देह में सब विकार होते हैं,
गुरू देह से ही मुक्त करते हैं,
एक अहंकार जब निकल जाता,
सब विकास खुद ब खुद निकलते हैं।
दादा...

रंग लायेगी सच की ये महफिल,
मिल गई, सतगुरू से है मंजिल,
अब तो सच ही हमारा जीवन है
जिन्दगी सच में ही गुजरती है।
दादा...

• • • • •

भजन - 237

दिल एक मंदिर है—आनंद अंदर है
प्यार की जिसमें होती है पूजा ये प्रीतम का घर है

प्रेम को जानो प्रेम बढ़ाओ
प्रेम की माला सबको पहनाओ
प्रेम अपनाओ—प्रेम को बरसाओ
ये साजन का स्वर है, दिल...

सतगुरू ने ज्ञान का बोध कराया
गैर अंदर से तुरंत निकाला
महिमा गुरू की फिर—फिर गाओ
ये आत्म आनंद है, दिल...

आप पहचानो, आपको जानो
आत्म ज्योति अंदर जगाओ
प्रेमी सच्चा ये आनन्द लूटो
ये जीवन का धन है, दिल...

• • • • •

भजन - 238

दुनिया के आगे बन्दे, भूला तू अपना करार है,
तेरे लिए भगवान ने, कैसी रची बहार है।

वायदा गर्भ में था किया, भूलूँगा तुझको नाहीं,
फंस के मोह के जाल में, भूला तू अपना करार है।

जिस हरि ने जन्म दिया, उसका कभी ना नाम लिया,
जिस से प्रीत लगा रहा, कोई न मददगार है।

माया ने तुझको बावरे, अपना दीवाना कर दिया,
भक्ति प्रभु की छोड़के, विषयों से करता प्यार है।

लाखों हरि उपकार किए, भक्तों के बेड़े पार किए,
सच्चे मन से जा याद करे, होता वह मददगार है।

• • • • •

भजन - 239

दस्तूरे मुहब्बत बस है यही,
हस्ती को मिटाना पड़ता है।
जरा गफलत हुई या नजरें झुकीं,
चऊँ ओर सभी ने घेर लिया।
गुरू ज्ञान का दीपक मन मन्दिर में,
हर वक्त जलाना पड़ता है, दस्तूरे...
भगवान का पाना आसान है,
सतगुरू का मिलना मुश्किल है।
सतगुरू को पाने के लिए,
सिर भेंट चढ़ाना पड़ता है, दस्तूरे...
मंदिर में गया मस्जिद में गया,
जंगल में भी उसका पता ना पाया।
जब समझ आई तो ये समझा,
सतगुरू को रिझाना पड़ता है।
जब नजरें परम हो सतगुरू की,
तो मंजिल भी कोई दूर नहीं।
वो नजरें परम पाने के लिये,
सतगुरू को रिझाना पड़ता है।

• • • • •

भजन - 240

देखा दुनिया का झूठा झमेला तो मन को हटाना पड़ा

गर्भ के दुःख जो थे समझ ही चुके
बालापन बेसमझ में गुजार ही चुके
बेतरह से पिटे, मार खाने पे आँसू बहाने पड़े

मात–पित–भ्रात–परिवार अपना लिया
मोह के जाल में फांस, धोखा दिया
कुछ मरे, कुछ गिरे, कुछ जले और कुछ को बहाना पड़ा

पड़ गए प्रेमियों के अजब जाल में
उम्र खोई वृथा के बुरे ख्याल में
तन के सुख, धन के सुख, जन के सुख में समय को गंवाना पड़ा

इस तरह चोट पर चोट खाते रहे
तड़फड़ाते रहे कुछ भुलाते रहे
कर्म संचित जले, भ्रम भागे, तब शरण गुरू के आना पड़ा

अब गरज बेगरज कुछ न संसार से
खेल था खेल डाला उसी चाल में
गुरू ने झगड़ा खत्म कर दिया
अब न आना न जाना पड़ा

• • • • •

भजन - 241

दिल में बैठा राम रमैया, तुझको नजर न आए।
पाथर मूर्ति आप बनाए, उसको शीश झुकाए।।
सुख के खातिर जोड़ी माया, सुख तो हाथ न आया।
जिस कारण सुख उपजे मन में, वो ठाकुर बिसराया।।
तुझे कैसे कोई समझाये, तुझको नजर न...
जग की वस्तु थिर नहीं कोई, पल पल मिटती जाए।
घट घट में जलती जीवन ज्योति, वो सब में मुस्काए।।
क्यों उनसे नैन चुराए, तुझको...
पत्थर की तूने नाव बनाई, कैसे पार लगेगा।
अब से अपना भाग्य जगा दे, जीवन सफल बना दे।।
वो पल में पार लगाए, तुझको...
कैसे मन से करता है तू, उस जग का व्यवहारा।
इक चित होकर कभी न सोचा, कौन है करने हारा।।
क्यों वृथा गर्व जताए, तुझको...
पत्थर को तूने राम है माना, जीवित राम न जाने।
रमता राम सब घट भीतर, उसको नहीं पहचाना।।
क्यों भेद भाव न मिटाए, तुझको...
सतगुरू शरण पड़े बिन कोई भेद न उसका पाया।
कण–कण में कर आत्म दर्शन, रमा सभी हरिराया।।
तू आनन्द में ही समाए, तुझको...

• • • • •

भजन - 242

दे मस्त फकीरी वो मुझको, शाहों की भी परवाह न हो।
न मैं किसी का शाह बनूं, मेरा भी कोई शाह न हो।।

दुनिया खुश है दौलत पाकर,
पर मैं खुश हूँ तुमको पाकर।
निर्धनता की ज्वालाओं से,
मेरे मन में कोई दाह न हो, दे...

पर दुःख को मैं अपना दुःख समझूं,
पर अपना दुःख ना रूला पाये।
पर सुख को मैं अपना सुख समझूं,
पर अपने सुख की चाह में न हो, दे...

चाहे घर-घर में सत्कार मिले,
चाहे घरे-घर में तिरस्कार मिले।
दोनों में ही मुस्कान रहे,
दिल के भीतर भी कोई आह न हो, दे...

कई रंग बदलें इस जीवन में,
पर द्वैत न मन में आने पाए।
मन विचरे आनन्द के वन में,
पल भर भी कभी गुमराह न हो, दे...

• • • • •

भजन - 243

दिल में दिलबर मिल गया, काबे में जाए क्या जरूर,
दुई से हम पाक हुआ, गंगा नहाए क्या जरूर।

हो रही है बंदगी, हरदम दिल में यार की,
फिर ये माला को लेकर, फिर फिराए क्या जरूर।

हर तरफ मुझको नजर, आता है जलवा यार का,
एक मक्का की तरफ, उसको बिठायें क्या जरूर।

तन कु बुत खाने में देखा, मैंने उस बुत पाक को,
गैर और संग के आगे, सिर झुकाएं क्या जरूर।

आप पर आप हम, आशिक हैं अब दोस्तों,
आशिक होकर औरों पर, तकलीफ उठायें क्या जरूर।

दूसरों की चुगली से, काटे हैं जब हम कान को,
कान को दागी बनाकर, जोगी बनना क्या जरूर।

इक नुख्ते में जो सब, इल्म का मतलब मिल गया,
कागजों के बोझे को, सिर पर उठाएं क्या जरूर।

वो नहीं है दूर हमसे, दूर उससे हम नहीं,
कान में उंगली दबा, बागें सुनाए क्या जरूर।

• • • • •

भजन - 244

देखो सन्तों दिन सुहाना आ गया,
खुद खुदा रहमत बरसाने आ गया।

ढूँढते थे हम जिसे वीरान में,
घट में ही हमको खुदा दिखला गया।

धर्म कहते हैं किसे मजहब है क्या,
राज रूहानी बताने आ गया।

जल रहे थे अहंता की आग में,
समता का अमृत पिलाने आ गया।

इनकी वाणी में है संतों वो असर,
मुर्दा भी श्वासों की पूँजी पा गया।

• • • • •

भजन - 245

दिल से करे जो भक्ति–भक्ति भगवान को पसन्द है
भगवान अपने भक्त की मुट्ठी में रहते बन्द हैं

माला का मणिया फेरा तुमने दिखा–२ कर
माया बहुत कमाई तुमने छिपा–२ कर
छल और कपट की बातें इनको नहीं पसन्द है
भगवान ...

चन्दन लगाया धिस–२ कपड़े रंगाये सारे
सुख में तो खूब सोया, दुःख में उसे पुकारे
स्वार्थ की सेवा पूजा, इनको नहीं पसन्द है।
भगवान ...

भक्ति में ऐसी शक्ति संसार को झुका दे
भक्तों का जब जी चाहे, भगवान को बुला ले
अभिमान करने वालों भक्तों के रास्ते बन्द हैं

• • • • •

भजन - 246

दुनिया का मजा ले लो, दुनिया तुम्हारी है
दुनिया से डरोगे तो दुनिया डरायेगी
आँख दिखायेगी, रोब जमायेगी, हँसी उड़ायेगी
चैन न लेने देगी जान जलाएगी
तान के सीना चलो, दुनिया...

दुनिया को लात मारो दुनिया सलाम करे
झुक–झुक सलाम करे, मुड़–मुड़ सलाम करे
कभी नमस्ते जी कभी राम–राम करे
दुनिया के बाप हो तुम...दुनिया

दुनिया को जीतेंगे नजारे ये तुम्हारे हैं
फूल तुम्हारे हैं सितारे तुम्हारे हैं
चंदा तुम्हारा है चंदनिया तुम्हारी है
दुनिया के बाप हो तुम...

• • • • •

भजन - 247

दादा गुरू भगवन का उपकार हुआ है।
जिससे यहाँ हम सब का उद्धार हुआ है।।

खुद जी के जिसने हमको भी जीना है सिखाया।
ऐसा महान इक वो कलाकार हुआ है।।
दादा...

क्या खोज के भगवान को दादा ने बताया।
इन्सान ही भगवान का अवतार हुआ है।
दादा...

मैं और नहीं हूँ अरे तू और नहीं है।
परमात्मा से आत्मा का प्यार हुआ है।।
दादा...

नहीं दूसरा कोई यहाँ तुम द्वैत को छोड़ो।
अद्वैत में ही प्रेम का विस्तार हुआ है।।
दादा...

कहते थे लोग कुछ तो चमत्कार दिखाओ।
तू स्वयं है भगवान्, चमत्कार हुआ है।।
दादा...

गीता के हर एक शब्द का है अर्थ बताया।
हर शब्द के हर अर्थ का है भेद बताया।।
हर शब्द आज ज्ञान का भण्डार हुआ है।।
दादा...

दादा सदा कहते थे इच्छा मात्र अविद्या।
इच्छा नहीं रही तो निराकार हुआ है।।
दादा...

दादा का ये पौधा जिसे भगवान ने सींचा।
सत्–ज्ञान का इतना बड़ा दरबार हुआ है।।
दादा...

कर्ता क्यूँ बनूँ करके मैं दादा की बड़ाई,
अपने ही आप उनका ये सत्कार हुआ है।
ये उनका कहाँ ज्ञान का सत्कार हुआ है,
इस वास्ते उन्हीं को नमस्कार हुआ है।।

• • • • •

भजन - 248

दादा के सत् ज्ञान ने दीवाना कर दिया,
हाय मस्ताना कर दिया,
हमने जो अपना माना था बेगाना कर दिया
हाय बेगाना कर दिया।
जकड़े थे हम जगत में मोह की जंजीरों से,
दुःखों के पीड़ो से,
जग को जला ज्ञान अग्नि में परवान कर दिया,
हाय परवान कर दिया।
जन्मों के देहध्यास की जो धुनि समाई थी,
शांति न पाई थी–२
ममता मिटा निज रूप में मस्ताना कर दिया,
हाय मस्ताना कर दिया।
रग–रग में सभी जग के नाम रूप बसे थे,
माया में फंसे थे–२
हर ताल में अब सोऽहम का तराना भर दिया
हाय तराना भर दिया।
ऐसा दिया उपदेश गुरू ने तुम निज आनन्द हो,
प्रेमी तुम सर्वानन्द हो,
जग में सदा को बन्द आना जाना कर दिया
हाय आना जाना।

• • • • •

भजन - 249

दाता तेरा नाम अमर फिर क्यों मुझको दुनिया का डर

हैं ये मेरी प्रार्थना, नाम जपूं, सदा तेरा,
मुझ पर कृपा हो तेरी, रहूं न चरणों से जुदा।
मुझ पर रहे तेरी रहम नजर, फिर क्यों...

झूठा ये संसार है, झूठी माया जाल है,
रख लो अपनी शरण मे, बाकी सब जंजाल है।
तेरी दया हो जाए अगर, फिर क्यों...

भूला हूँ मैं भटका हूँ, कोई नहीं जहान में,
तू ही तू रहे सदा, तेरा नाम जहान में।
हृदय में रहे तेरे चरण-कमल, फिर...

सतगुरू देवों के देव हो, जग के तारणहार हो,
मुझको है तेरा ही आसरा, जग का तू ही आधार है।
दासी के सिर पर हाथ तू धर, फिर क्यों...

• • • • • •

भजन - 250

दुनिया दो दिन दा है मेला,
जिसको समझ पड़े अलबेला,
जैसी करनी वैसी भरनी, गुरू हो या चेला।

सोने चांदी धन रत्नों से, खेल अजीबन खेला,
चलने की जब घड़ियाँ आई, संग नहीं चले अधेला।

महल बनाया, किला बनाया, कह गयो मेरा मेरा,
कहत कबीरा अंत समय सब, छोड़ देंगे अकेला।

पांच पचीस भये हैं बराती, ले चल ले चल हो ली,
कहत कबीरा बुरा नहीं मानो, ये गति सब की होनी।

इस जग में नहीं कोई तेरा, ना कोई सगा सगाई,
लोग कुटुम्ब मेरे कट गए, प्राणी जाए अकेला।

• • • • •

भजन - 251

दिया मेरी मंजिल को गुरू ने इशारा
उम्र भर न भूलेंगे एहसान तुम्हारा

रूहानी मस्ती मेरे गीत में है,
कि नूरानी हस्ती तेरी प्रीत में है
भरोसा है मुझको तो बस है तुम्हारा।

तू जो मिल गया मिल गई है खुदाई,
कथनी गई और करनी है आई
यही दादा ने मेरा जीवन संवारा।

ये निश्चय हुआ तुझसे सद्ज्ञान पाकर,
गुरू रूप बैठे हैं भगवान आकर
मिलेगा तो तुम से ही भव का किनारा।

था मुद्दत से दिल मेरा बेताब सद्गुरू
दिये रहमत के तूने लाल और जवाहर
हटाया आंखों से परपंच सारा।

भले दिल में आता है जज्बा गुरू का
खुदा से भी ऊँचा दर्जा गुरू का
बहे दिल में मेरे अमर रस की धारा।
उम्र ...

• • • • •

भजन - 252

दो दिन की मिली जिन्दगी बन्दे कर ले प्रभु बन्दगी
तेरे आगे खजाना पड़ा चाहे गम को उठा या खुशी

होती है जहां रोशनी वहां अंधकार रहता नहीं
जिस दिल में हो परमात्मा वहां अंधकार रहता नहीं
सन्तों ने यही सीख दी बन्दे ...

क्या तू आया था लेकर यहां जिसके जाने से रोता है तू
बोझ अपना सम्भालता नहीं औरों के ढोता है क्यों
कैसा नादान है आदमी बन्दे ...

जैसी अपनी निगाह होती है वैसे आते हैं सारे नजर
जैसा आदर करोगे किसी का वैसे होगी तुम्हारी कदर
रूप दर्पण में है अपना ही बन्दे ...

जो समझता है खुद को बड़ा वो बेचारा तो नादान है
छोटा बन जाना ही बड़े होने की पहचान है
सतगुरूं ने समझाया यहीं बन्दे

• • • • •

भजन - 253

दरबार में मेरे सतगुरू के, दुःख दर्द मिटाए जाते हैं,
जो तंग आये इस जीवन से, इस पर पे हंसाए जाते हैं।

यह महफिल है दीवानों की हर भक्त यहां मतवाला है,
भर भर के प्याले अमृत के यहाँ खूब पिलाए जाते हैं।

क्यों डरते हो ऐ जग वालो इस दर पर शीश झुकाने से,
इस दर पे तो ऐ नादानों, सर भेंट चढ़ाए जाते हैं।

जिसको ठुकराया दुनिया ने और ठोकर खाकर गिर गए,
इक बार जो दर पर आ जाए वो सर पे चढ़ाए जाते हैं।

ये मुक्ति का द्वार है भव बन्धन यहां कट जाते हैं,
पापी से पापी बांह पकड़ कर यहां पार लगाए जाते हैं।

इल्जाम लगाने वालों ने इल्जाम लगाए लाख मगर,
तेरी सौगत समझ के हम सर पे उठाऐ जाते हैं।

जिन प्यारों पर ऐ जग वालों हैं खास इनायत सतगुरू की,
उसका ही संदेशा आता है और वे ही बुलाए जाते हैं।

सिर धर के हथेली पे यहां,
आ जाओ हसरत अगर जीते जी मरने की,
भक्तों के जनाजे खूब यहां, इस दर पे सजाए जाते हैं।

• • • • •

भजन - 254

दादा तेरा शुकराना तेरे जैसा प्यार कहां
याद करती है दुनिया तेरा ये नजराना

मेरी जिन्दगी संवारी मुझको गले लगाकर
बैठा दिया पलक पर मुझे खाक से उठाकर
मैंने तो तुम्हें हरदम अपना खुदा माना।

बिन मांगे सतगुरू सब कुछ दिया है मुझको
आंचल में भर दी है तूने खुशियां जहां की
मैंने तो तुम्हें हरदम अपना खुदा माना।

चलूं तेरे आदर्श पर मेरी यही रजा है
तुझ सा हो मेरा जीवन बस यही इल्तजा है
मैंने तो तुझे हरदम अपना खुदा माना।

• • • • •

ध

भजन - 255

धरती जिसकी शैय्या है अंबर जिसकी ओढ़नी
सारी सृष्टि जिसका आंगन मेरा सतगुरू वही है

ज्योत से ज्योत मेरी अब तो जला दे
शमा सा ये जीवन मेरा अब तो बना दे
बुझने कभी न पाए ऐसी रोशनी दे

सच में ये जीवन अपना यूं ही गंवा दे
तेरा ये पैगाम सच्चा सब को सुना दे
ढल जाए संग में तेरे ये ही आरजू है

नूर दिखे तेरा सारे जहां में
राजी रह हम हरदम तेरी रज़ा में
यही अपना दिल कहता है मंजिल भी यही है।

• • • • •

न

भजन - 256

नदिया न पिये कभी अपना जल
वृक्ष न खाए कभी अपना फल
अपने तन का, मन का, धन
दूजों को दे जो दान रे
वो सच्चा इन्सान अरे, इस धरती का भगवान है

अगर सा जिसका अंग जले, दूजों को मीठी स्वाँस दे
दीपक सा जिसका जीवन है, दूजों को अपना प्रकाश दे
धर्म है जिसका भगवत् गीता, सेवा ही वेद पुराण है, वो...

चाहे कोई गुणगान करे, चाहे करे निन्दा कोई
फूलों से कोई सत्कार करे, चाहे कांटे चुभा डाले कोई
मान और अपमान ही दोनों, जिसके लिए समान है, वो...

• • • • •

भजन - 257

ना मैं मन ही रहा, ना मैं तन ही रहा,
सतगुरू मिलने से झगड़ा खतम हो गया।

कुटुंब वाले क्यों झगड़ा फैलाते हो,
जाल इन्द्र का अब तो भस्म हो गया।

नहीं माता पिता सुत दार मिले,
खेल जादू का अब तो भस्म हो गया।

अगर कुछ बनना हो तो योगी बनो,
फिर बनना बनाना खत्म हो गया।

कराए योग, पिलाए हरि प्रेम रस,
भीतर बाहर हरि ही हरि हो गया।

मैंने गर्भ में वायदे किए राम से,
सतगुरू की कृपा से वो पूरे ही हुए।

प्यारे सतगुरू की महिमा मैं कैसे गाऊँ,
दास होना था, अब तो वही हो गया।

• • • • •

भजन - 258

ना कर अब तू मेरा मेरा।
टूटेगा अभिमान जो तेरा।।

दिल में प्रभु का प्यार नहीं है।
जीवन में कुछ सार नहीं है।।
कर्म धर्म बेकार है तेरा, ना कर...

ये जग है इक झूठा सपना।
फिर क्यों माना है उसको अपना।।
छूटने पर पड़ेगा रोना, ना कर...

ये धन पाप से कमाया तूने।
ये सामान जो बनाया तूने।।
सब है प्रभु की अमानत का देना, ना...

इस जग की तू प्रीत छोड़ दे।
सतगुरू आगे सीस चढ़ा दे।।
काट ले जन्म मरण का फेरा, ना...

• • • • •

भजन - 259

नहीं लेना किसी और का सहारा सहारा गुरू तेरा चाहिए

जो कुछ भी लेंगे तुम्हीं से लेंगे
हम तो तुम्हारी शरण में रहेंगे
गुरू देना मेरी नैया को किनारा
सहारा खुद तेरा चाहिए–२।।

जिसको मिला है तुम्हारा सहारा
खुद आ गया है चल के किनारा
गुरू तू ही है भक्तों का सहारा
सहारा गुरू तेरा चाहिए–२।।

न जाने कितनों के साथी गुरू जी
बुझते दियों की बाती गुरू जी
तूने कितनों को पार उतारा
सहारा गुरू तेरा चाहिए–२।।

• • • • •

भजन - 260

नारायण जिसके हृदय में, सो कुछ कर्म करे न करे।

सूर्य का जब प्रकाश होवत,
तब दीपक ज्योति जले ना जले।

नाव मिली जिसको जल अन्दर माहीं,
सो बाँहों से नीर तरे न तरे।

पारस मणि जिसके घर मांहि,
सो धन संचय करे ना करे।

ब्रह्मानंद को जिन जन जानियो,
सो काशी में चाहे मरे ना मरे।

• • • • •

भजन - 261

नर तन जो मिला प्यारे इसे यूं ही न व्यर्थ गंवा
श्वांस कीमती है तेरी ही प्रभु सुमिरन में इसको लगा

जन्मों से तेरी मांग थी, चोला मानुष का मुझको मिले
प्रभु सुमिरन करूंगा सदा चक्र आवागमन का चले
तेरी मांग हुई पूरी किए वादे को अब तू निभा।।

छोड़ दे अब तेरी और मेरी दुनिया है मतवाली
आज तक न हुई किसी की कैसे अब यह बनेगी तेरी
दुनिया से हटा दिल को प्रभु को तू हरदम ध्या।।

ज्ञान गौर से प्रभु का सुन, प्रभु नाम का कर सुमिरन
गुरू की हिदायत पर करना कुर्बान तन और मन
मौज में चलकर सतगुरू को पाले लक्ष्य तू जीवन का।।

• • • • •

भजन - 262

निराकार बनके गुरू रूप आया,
जो हर रोग की ये दवा देता है।

सनातन पुरातन की बातें हैं लेकिन,
ये अनुभव का लेबल लगा देता है।

जो–जो आँखों में दुनिया समाई थी सारी,
ये रब देखने की निगाह देता है।

मैं–मैं की झूठी बीमारी छुड़ा कर,
मैं हूँ आत्मा ये जुबान बेचता है।

जो रावण का सिर लेके इस दर पे आया,
वो सिर कृष्ण का ये लगा भेजता है।

बदले में लेता है पापों की गठरी,
ये शुद्ध ज्योति निर्मल बना देता है।

निराकार...

• • • • •

भजन - 263

नर तन है इतना प्यारा
गुरू शुक्रिया तुम्हारा दादा शुक्रिया तुम्हारा

मोह बन्धनों में जकड़ा गफलत की नींद सोया।
मानुष जन्म है दुर्लभ जो न मिले दुबारा।।

कब तक रहेगा भूला सार्थक जन्म ये कर ले।
हरि नाम सुमिरन को नहीं तन मिले दुबारा।।

सतगुरू शरण में आकर निष्काम धन कमा ले।
सतगुरू की भेंट प्यारे मिलती नहीं दुबारा।।

सतसंग में तू आकर सच की प्यास बुझा ले।
फिर ये अमृत धारा मिलती नहीं दुबारा।।

• • • • •

भजन - 264

नींद निशानी मौत की उठ कबीरा जाग।
और रसायन छोड़ के, नाम रसायन लाग।

नींद से अब जाग बंदे, राम में अब मन रमा।
निर्गुण से लाग बंदे, है वही परमात्मा।।

हो गई है भोर कब से, ज्ञान का सूरज उगा।
जा रही हर श्वांस बिरथा, सांई सुमरन में लगा।।

फिर न पाएगा तू अवसर, करले अपना तू भला।
स्वप्न के बंधन है झूठे, मोह से मन को छुड़ा।।

धार ले सत् नाम साथी, बंदगी करले जरा।
नैन जो उल्टे कबीरा, सांई तो सम्मुख खड़ा।।

• • • • •

भजन - 265

नींद से अब जाग बन्दे राम में अब मन रमा
निर्गुणा से लाग बन्दे है वही परमात्मा

हो गई है भोर कब से ज्ञान का सूरज उगा
जा रही है हर श्वांस वृथा साई सुमिरन में लगा
नींद से अब जाग ...

फिर न पाएगा तू अवसर कर ले अपना तू भला
स्वप्न के बन्धन हैं झूठे मोह से मन को छुड़ा
नींद से अब जाग ...

धार ले सतनाम साखी बन्दगी कर ले जरा
नयन जो उलटे कबीरा साईं तो सन्मुख खड़ा
नींद से अब जाग ...

• • • • •

भजन - 266

निर्गुण रंगी चदरिया रे कोई ओढ़े संत सुजान कोई ओढ़े

कोई–कोई बिरला जतन से पावे चूनर पी के मन भावे
कितने ओढ़ भये बैरागी म्रय कई मस्तान

नाम के तार से बुनी चदरिया
प्रेम भक्ति से रंगी चदरिया
सतगुरू कृपा करे सी पाए थे अमोलक दान

पोथी पढ़ पढ़ नयन गवाए
सतगुरू नाम शरण नहीं आए
हरि नारायण निर्गुण सगुण सब्ही में पहचान

• • • • •

भजन - 267

नजरों से पिला दे सतगुरू, भर दे मेरा पैमाना
इतनी पिला दे सतगुरू, मुझे होश में न आना

हम होश खो चुके हैं बन के तेरे दीवाने
दुनिया का गम नहीं है चरणों में दे ठिकाना

मेरी जिन्दगी भी तू है मेरी बन्दगी भी तू है
मेरी जिन्दगी के मालिक मेरा तू है आशियाना

दरबार लाखों देखें तुमसा कोई नहीं है
तेरे दर पे आ गई हूँ मुझे छोड़ के ना जाना

बीतीं हैं जितनी बीतीं उसका तो गम नहीं है
रहती है जितनी बाकी चरणों में दे ठिकाना

• • • • •

प

भजन - 268

पल–पल बीत रहा है जीवन काहे करे अभिमान रे
राम जपो हरि नाम जपो तू दो दिन का मेहमान रे

तू आया जग हंसता आते ही अंसुवन बोए
अब जाना है ऐसे जा तू जाए और जग रोए
ज्ञान की राह पे चलता चल तू जीवन है महान रे

खाली हाथ ही आया था खाली हाथ ही जाना है
उसका सफल होगा जीवन जिसने उसे पहचाना है
सांझ सवेरे निशदिन कर तू उसी का ध्यान रे

• • • • •

भजन - 269

पल पल संत तुझे समझाएं, क्यों हीरा जन्म गंवाए
समय क्यों खो रहा है

ओ भोले प्राणिया, चार दिनों की तेरी जिन्दगी
कुछ तो कमाई कर ले, कर मालिक की तू बंदगी
प्यार से संत तुझे समझाए, ज्ञान की राह बताएं

कर ले ओ भोले प्राणी, ब्रह्मज्ञानी की तू संगते,
आत्म निश्चय कर ले, छोड़ दे माया की तू रंगतें
ब्रह्मज्ञानी का ये फरमाना, क्यों सोया नादान...

समय अनमोल पाया विषयों में ना तू उसको रोल दे
मिलेगा सच्चा सुख अपने में प्रभु को तू टोल ले
आत्म ज्ञान को पाकर बन्दे, जीवन मुक्ति को पाले

• • • • •

भजन - 270

पायो जी मैंने, राम रतन धन पायो
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरू,
कृपा कर अपनायो

जन्म जन्म की पूंजी पाई
जग में सभी गँवायो

खरचे न खूटे चोर न लूटे
दिन दिन होत सवायो
पायो...

सत् की नाव खेवटिया सतगुरू
भव सागर तर आयो

मीरा के प्रभु हरि अविनाशी
हरष–हरष जस गाओ
पायो...

• • • • •

भजन – 271

प्यारे प्यारे सतगुरू दिल में बस गये जी
ऐ जी कोई गुरू बिन जीना है बेकार

यूं हमरा जीवन गुरू बिन, रामायण जैसे राम बिन
ये सारी दुनिया समझे ना बात को जी

नजरों के दो प्यासे नैना, तुम बिन हम दर दर भटकते रहे
अब नहीं बिछड़ूँ रहूँ गुरू संग में जी

तूने जादू ये कैसा है किया प्रीति की डोरी में बांध लिया
प्रेम के सागर मिले मेरे सतगुरू जी

तेरी नजर नूरानी भाये है दूजी नजर न कोई आए है
दाता विधाता अब तो मेरे सतगुरू जी

तेरे वचनों पे मैं चलती रहूँ सुमिरन हर पल तेरा ही करूँ
अमृत ये वचना पीये आठों पहर जी

• • • • • •

भजन – 272

पूरा सतगुरू मिला, दिया सर को झुका
जिसे जग ढूँढता है वो मिल गया

पाठ पूजा भी की, द्वारे मंदिर गए
योग अभ्यास से मुझे मिल ना सका
पोथी पुस्तक पढ़ी फेरी माला बहुत
पर मुरझाया दिल मेरा खिल ना सका
संसे दूर हुए, मिल गया है हरि मुझको

कर इश्नान तीर्थ को क्यों जाऊँ मैं
हरि को पौरी मिली मुझे हरि मिल गया
पूरव जन्मों के कर्म खुले थे यहाँ
घर बैठे मुझे सतगुरू, मिल गया
नफरत बीत गई, दिल में प्यार आ गया

कभी राम बने, गुरू नानक बने
कभी दादा भगवान बनकर आ गये
दुनिया निन्दा हमेशा ही करती रहे
पर भक्तों के मन को सदा भा गया
मैं हूँ प्रेमी, मैं हूँ प्रेमी तो तू है मुरार मेरा...

• • • • •

भजन - 273

पूरण मांहि रहना साधो, पूरण मांहि रहना
यही गुरू का कहना रे साधो, यही...

पूरण ज्ञान सर्व प्रकाशी, काटो नाम रूप की फाँसी
सहज परिच्छिन्नता रे साधो, यही...

पूरण में पर–चिन्ता भागे, ना कुछ ग्रहण ना कुछ त्यागे
नहीं करना, नहीं भरना रे साधो, यही...

पूरण में नहीं लोक पाल है, पूरण में नहीं जगत जाल है
नहीं डूबना, नहीं तरना रे साधो, यही...

पूरण में नहीं बंध मोक्ष है–पूरण में नहीं पाँच कोष है
नहीं जीव, नहीं जड़ता रे साधो, यही...

पूरण परमानन्द को पाया, आदि अंत का भेद मिटाया
नहीं जाप, नहीं जपना रे साधो, यही...

• • • • •

भजन - 274

प्यार तेरा अमृत फल जैसा, दृष्टि तेरी गंगा जल है।
गहरा तू सागर से बढ़कर, करूणा का तू बादल है।।

भूल गया मैं सारे जग को, प्यार किया तुमने इतना
नींद खुली तो मैं समझा, सपना है या है अपना
मैं ना, जग ना करके दिखाया, जब तक जग जगते रहना
पास मेरे तू हरदम इतना, जैसे नयन का काजल है

छू न सके आंधी तूफान, आँचल तेरे प्यार का
रूप बदलते मैंने देखा, माया के अंधकार का
हाथ पकड़कर तुमने दिखाया, जो मेरा असली घर है
तेरी मेहर से मैंने समझा, भोग नहीं पर दल दल है

प्यार तेरा अमृत फल जैसा, दृष्टि तेरी गंगा जल है।
गहरा तू सागर से बढ़कर, करूणा का तू बादल है।

• • • • •

भजन - 275

प्यासा कोई मुसाफिर, भूले से दर पे आया।
बरसा है बनके बादल, तेरी रहमतों का साया।।
रहमों कर्म का कैसे करूँ शुक्रिया अदा मैं,
दिल ने जहाँ पुकारा, वही दौड़ के तू आया।
पीरों के पीर मुरशिद, मुरशिद कमाल मेरे,
कैसे तुझे भुला दूँ, मुद्दत के बाद पाया।।
तेरे सामने से उठकर, मैं किस तरह से जाऊँ,
तुझ सा हसीन दिलबर, अब तक नजर न आया।
वीरान हो या बस्ती, सहारा हो या चमन हो,
हर गुल में तेरी खुशबू, तेरा नूर है समाया।
जब भी मेरा शफीना, तूफान से डगमगाया,
तूने दिया सहारा, आगे ही बढ़के आया।
परवरदिगार तुम हो, रहबर हो रहनुमा हो,
ठुकरा दिया जहां ने, तूने गले लगाया।
फैलाने हाथ जाऊँ, किस दर पे तू बता दे,
इस दर से बढ़के मुझको, दर दूसरा न भाया।
जिसने पिया ये प्याला, उसे होश नहीं है आया,
तेरे दर पे जो झुका है, उसने है लक्ष्य पाया।

• • • • •

भजन - 276

प्रगट हो गया जग विच राम, मुक्ति वडंदा जांदा ए
के हसदी के ते नचदी शाम, मुक्ति वडंदा जांदा ए
के बलिहारी लखवारी, धानवारी तू ही

ढोल बजाके देवां सुन लो दुनिया वालो।
नूरो नूर दीसे हर पास, उज्जवल करे नन काले।।

कच दे बदले सच पिया देंदा, देखा ऐ वणजारा।
मालो माल होए ऐ मंगदे, बैठा खोल भंडारा।।

ऐसी मेहर करी मोरे सतगुरू बदल गई तकदीरां।
कर्म जो मोल मिटा न सके, मिट गइयां तकदीरां।।

नाम दे दीप जला के घर कर, करदा फिरे उजियारा।
इन दीपक पर आ परवाने, जीवन करे सुखाला।।

• • • • •

भजन - 277

प्रभु आये गुरू रूप में बधांई बजने लगी
हरि आये गुरू रूप में बधाई बजने लगी
श्याम आये गुरू रूप में बधाई बजने लगी
ऐसा ज्ञान का अमृत पिलाया,
न कहीं देखा न कहीं पाया
जीवन बदलने लगा बधाई बजने लगी
प्रभु आये...
जन्मों के मोह में जीव थका था,
चौरासी के चक्कर में फंसा था
तृप्ति आने लगी बधाई बजने लगी
प्रभु आये...
मैं मेरे का भेद मिटाया,
घट-घट में अपना रूप दिखाया
द्वैत वह मिटने लगा बधाई बजने लगी
प्रभु आये...
अहंकारों को तू निकाले,
बिना औजार आपरेशन कर डाले
शान्ति फिर आने लगी बधाई बजने लगी
प्रभु आये...

• • • • •

भजन - 278

प्रभु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है।
उसको हरदम आनन्द ही आनन्द है।।
झूठी दुनिया से करके किनारा,
लेके सच्चे प्रभु का सहारा।
जो उसकी रज़ा में रजामंद है,
उसको हर दम आनन्द ही आनन्द है।।
जिसकी कथनी में अमृत की धार है,
जिसकी करणी में ज्ञान की महक है।
प्रेम नर्मी से जिसका सम्बन्ध है,
उसको हर दम आनन्द ही आनन्द है।।
दीन दुःखियों के दुःख जो निवारे,
बन के सेवक भला सबका चाहे।
स्वाध्याय ही जिसको पसन्द है,
उसको हर दम आनन्द ही आनन्द है।।
निन्दा चुगली न जिसको भाये,
बुरी संगत की रंगत न आये।
सतसंग ही जिसको पसन्द है,
उसको हर दम आनन्द ही आनन्द है।।

• • • • •

भजन - 279

प्रेम प्याला गुरू दिया रे साधो रे
जासो मस्त मगन हम थिया रे साधो...
प्रेम वठी तां सतगुरू साकी
सिर साटे हम लिया रे साधो...
पीवत प्रेम बिसर गई काया
दिल दर्पण कर दिया रे साधो...
आठों पहर रहूं मतवाला
लाली का रंग लिया रे साधो...
चढ़ी खुमारी उतरे नाहीं
सदा अमर जुग जिया रे साधो...
प्रेम की महिमा मुख कही न जाये
घट उजियारा किया रे साधो...
जागी जोति राम रंग लागा
भूल भरम मिट गया रे साधो...
प्रेम कलास्यों ये पद पाया
जन्म मरण दुःख गया रे साधो...
कहत प्रेमी मिटी जब ममता
सदा अमर जुग जिया रे साधो
प्रेम प्याला गुरू दिया...

• • • • •

भजन - 280

प्रेम बिना ज्ञान कहां, ज्ञान बिना मुक्ति कहां
प्रेम बिना ज्ञान सूना सूना, कहे कृष्णा...प्रेम...

प्रेम प्रभु का रूप है, आत्म का स्वरूप है
प्रेम से जीता जग सारा, प्रेम बिना है ज्ञान अधूरा
कहे कृष्णा...प्रेम...

गीता का सार आत्म ज्ञान, कहते प्रभु तू निज को पहचान
सतगुरू कृपा है तेरे साथ अपनी कृपा कर अपने आप
कहे कृष्णा...प्रेम...

मानुष जन्म तुझको मिला, फिर भी कमल बन ना खिला
मोह माया में तू खो गया, बंधन में जकड़ा तू सो गया
कहे कृष्णा...प्रेम...

जाग रे जाग रे कर ले ऐहसास, टूट न जाये ये तेरी सांस
क्या लाया था क्या ले गया, मैं मेरा अपना यहीं रह गया
कहे कृष्णा...प्रेम...

आवत तो हर्ष ना हो, जावत तो शोक ना हो
ये मूल मंत्र है ब्रह्मज्ञान का, दूर भगाये अज्ञानता
कहे कृष्णा...प्रेम...

एक ही नूर से जग उपजे, कौन भले कौन मंदे
समता का ये आत्म ज्ञान, विरला ही जाने हैं ही भगवान
कहे कृष्णा...प्रेम...

सतगुरू मेरे हैं ही भगवान, देर न कर तू उनको पहचान
आत्म का फिर होगा मिलन, जब जब लेगा प्रेम जन्म
कहे कृष्णा...प्रेम...

• • • • •

भजन - 281

प्रेम सुराही सो पिये जो सीस दक्षिणा देय।
लोभी सीस न दे सके, क्या नाम का लेय।।
सब साधन का मूल है, दुर्लभ सतगुरू प्रेम।
प्रेम बिना थोथे सभी, जाप ताप व्रत नेम।।

पियो रे राम रस, है कोई प्यासा
है कोई प्यासा, है कोई प्यासा

जिसके दिल में प्रेम नहीं है
वो दिल तो सुनी–सुनी है
प्रेम बिना दिल रहे उदासा...

सतगुरू है मेरा प्रेम का सागर
प्रेम से भर ले दिल की गागर
तू भी कर ले पूरी आशा...

जन्मों से है प्यास सभी को
फिर भी है अहंकार सभी को
प्रेम बिना अभिमान न जाता...

प्रेम तो है ही खुद परमात्मा
हरेक दिल में है वो ही अध्यासा
प्रेम से भूले देह–दिहासा...

• • • • •

भजन – 282

प्यारे सतगुरू ने बंसी छेडी ज्ञान की,
मैंने पाई है तृप्ति चारों धाम की।

प्रीत क्या जुड़ी डोर क्या बंधी
बिना यतन बिना जतन हो गई मैं नई
बिना तोल दाम के ही बन गई तेरी
प्यारे सतगुरू...

पा लिया तुझे पा ली हर खुशी
मेरे नस में बसा गुरू का रंग है
नाज आए प्रभु मुझे तेरे ही नाम से
प्यारे सतगुरू...

ज्ञान तेरा है, अज्ञान मेरा है
ब्रह्म–ब्रह्म करके चढूं हर नई सीढ़ी
सुबह शाम की ये प्यास बड़े काम की।
प्यारे सतगुरू...

• • • •

भजन – 283

पी लेना, गुरू नाम का प्याला, सारे रोग मिट जायेंगे।
गुरूदेव, गुरूदेव

अमृतवाणी दीनी गुरू ने, सफल किया जीवन मेरा,
ऐसे गुरू को दण्डवत कीजे, सारे रोग मिट जायेंगे।
गुरूदेव, गुरूदेव

गुरू ही शक्ति, गुरू ही भक्ति, गुरू ही श्रद्धा, विश्वास है,
ऐसे गुरू को मन में बसा लो सारे रोग मिट जायेंगे।
गुरूदेव, गुरूदेव

गुरू ही अन्दर, गुरू ही बाहर, गुरू ही मेरी सृष्टि है,
ऐसी अपनी दृष्टि बनालो, सारे रोग मिट जायेंगे।
गुरूदेव, गुरूदेव

ऐसी मस्ती दीनी गुरू ने, खुद को मैं तो भूल गई,
तन–मन–धन अर्पण कर दूं मैं, सारे रोग मिट जायेंगे।
गुरूदेव, गुरूदेव

• • • •

भजन - 284

पीती–पीती–पीती अँज मैं पीती ऐ
नाम कटोरा भर भर के अँज पीती ऐ

मेरे शाम दिया शानां देखो
अज धूमां जग विच पइयां
ओहने तारे लखां पापी
मिट गइयां कर्मा दिया बइयां
अजी, ओहना दी रीती ऐ

इस शाम दे सदके जावां
जिने जाम पिलाया मैनूं
हुन मस्ती दे विच झूमां
जिने मस्त बनाया मैनूं
शाम संग प्रीती ऐ

न दाम कोई ऐ मंगदा
भर भर के पिलाये जांदा
निष्काम वचन सुनाके
सबनूं ऐ मस्त बनांदा
अजब दी रीती ऐ

मैं सदा चरणा विच रहंदा
मैं मौत कोलों नहीं डरदा
ऐ नाम प्याला पीके
सदा हसदा दे खुश रहंदा
प्रेम दी रीती ऐ

• • • • •

भजन - 285

प्यारे गीता भगवन ने हमको समझाया है
जग के–२ हर प्राणी में उसका नूर समाया है

हम ढूंढते थे प्रभु को मंदिर गुरूद्वारे में
मथुरा की गलियों में, काशी के चौवारो में
घट–घट वासी प्रभु का घट में दर्शन कराया है ...

ओम् की जो वंशी सुनी मन मयूर नाच उठा
तेरे वचनों को सुनकर सोया मनवा जाग उठा
शुक्रानों में हमने इस सिर को झुकाया है ...

देह में आसक्ति थी आत्म को न जाना था
कैसे कटते चौरासी, मुक्ति को न पाया था
पर तेरी कृपा ने भगवन आवागमन मिटाया है ...
जग के–२ हर प्राणी में ...

गुणगान करे तेरा रसना को न शक्ति है
मन तेरी अमानत है मन में तेरी भक्ति है
नयनों में छवि तेरी सिर पर तेरा साया है ...

• • • • •

भजन - 286

पलकें ही पलकें बिछायेंगे
जिस दिन श्याम म्हारे घर आयेंगे

घर का कोना कोना मैंने फूलों से सजाया
बंधनवार बंधाया घी का दीप जलाया
प्रेमी जनों को बुलायेंगे, जिस दिन श्याम...

गंगाजल के इत्रा से गुरू के चरन पखारूँ
भोग लगाऊँ लाड़ लड़ाऊँ आरती उतारूं
खुशबू ही खुशबू लुटायेंगे...

सतगुरू मेरे प्यारे श्याम से निराले
हम सब प्रेमी नाच–नाच के सतगुरू को रिझायेंगे
जीवन को उपवन बनायेंगे...

अब तो लगन एक ही सतगुरू प्रेम सुधा बरसा दे
जन्म–जन्म की मैली चादर अपने रंग में रंगा दे
जीवन को मधुवन बनायेंगे...

• • • • •

भजन – 287

प्रभु अपने दीवानों पे इक करम कमा लेना
जिस दिन मैं तुझे भूलूं दुनिया से उठा लेना

संतान हूँ मैं तेरी चौखट पे खड़ा हूँ मैं
जब नजर पड़े तेरी चरणों से लगा लेना

भूले से कभी तुझको अभिमान की बू आये
तुझे कसम फकीरी की मेरा कंठ दबा देना

चाहता हूँ मैं तुझको चाहत ही तो ऐसी है
कुछ दिल में दर्द देना कुछ दर्दे दवा देना

मैं दास हूँ तेरा जी मुझे दास ही रहना है
तू अपने गुलामों में मेरा नाम लिखो लेना

• • • • •

फ

भजन – 288

फिक्र से वो ही खाली होता है
जो सदा अन्तमुख में रहता है
वो ही ये ज्ञान अमल में लाता है
जो श्रद्धा सतगुरू में रखता है...

जिसके दिल में प्रभु की याद नहीं
वो अधूरा अधूरा रहता है
सारी खुशियाँ उसे मिलें भी अगर
फिर भी वो प्यासा प्यासा रहता है
उसकी स्वांसे व्यर्थ ही जाती है
जो ये अनमोल समय गंवाता है
फिक्र से...

इक कदम जो भी आगे बढ़ता है
सौ कदम प्रभु आगे बढ़ता है
हर जगह वो बसा ही रहता है
अपने भक्तों पे नजर रखता है
निज आनन्द को वो ही पाता है
सच की तमन्ना जो लेके आता है
फिक्र से...

कितनी दीवारें आगे आती हैं
जो कोई सच की राह पे चलता है
चाहे दुनिया उसे गिरा भी दे
वो तो गिर कर भी संभल जाता है
चाहे दुनिया उसे न कुछ समझे
वो तो लाखों में एक होता है
फिक्र से...

• • • • •

ब

भजन - 289

बनवारी रे, जीने का सहारा तेरा नाम रे
मुझे दुनिया वालों से क्या काम रे

झूठी दुनिया, झूठे बंधन, झूठी है ये माया
झूठा स्वांस का आना–जाना, झूठी है ये काया
साँचो तेरा नाम रे

रंग में तेरे रंग गई गिरिधर, छोड़ दिया जग सारा
बन गई तेरे प्रेम की जोगन, लेकर मन इकतारा
प्यारो तेरो धाम रे

दर्शन तेरा जिस दिन पाऊँ हर चिन्ता मिट जाए
जीवन मेरा इन चरणों में, आस की ज्योति जलाए
बाँह पकड़ लो, श्याम रे...

• • • • •

भजन - 290

बहुत दिया देने वाले ने तुझको
आंचल ही न समाए तो क्या कीजै
बीत गए जैसे ये दिन रैना
बाकी भी कट जाए दुआ कीजै

जो भी दे दे मालिक तू कर कबूल
कभी-कभी कांटों में खिलते हैं फूल
वहां देर भले है अन्धेर नहीं
घबरा के कभी यूं न गिला कीजै

देगें दुःख कब तक भरम के चोर
बीतेगी ये रात प्यारे फिर होगी भोर
कब रूक सकेगी समय की ये घड़ियां
घबरा के यूं कभी न गिला कीजै

.....

भजन - 291

बहुत याद करते हैं तुमको गुरू
वचन एक ले लो-२ बनेगा नसीब
बहुत याद...

हमें हर घड़ी याद वचन तुम्हारे
देते हैं पल पल सबको सहारे
सुनेगा जो वचनों को-२ बनेगा नसीब
बहुत याद...

आपका किसी ने अन्त न पाया
ज्ञान को सबने हृदय से लगाया
दिया ज्ञान ऐसा-२ बदले हैं हम
बहुत याद...

हमारी नजर चाहे दर्शन तुम्हारा
तुम्हारे बिना है ना कोई हमारा
देंगे न दर्शन तो-२ जियेंगे न हम
बहुत याद...

.....

भजन - 292

बने चाहे दुश्मन ये मन भी हमारा
सलामत रहे ये निश्चय हमारा–२

ये मन की गुलामी, ये मन का बंधन
ये मन हुकूमत, ये मन के अधीन
गुरू तूने आकर छुड़ाया हमें
कि घुट–घुट कर वरना मरते थे हम–२
हमारे लिए तूने अवतार धारा...२

गुरू को जो मन में बिठाया हमने
गुरू मन का दुश्मन बन बैठा
गुरू आने से मन ऐसा डरा
कि डर कर ही अपनी गद्दी छोड़ दी
गुरू रहमतो ने है हमको उभारा...२

अब न कोई गुलामी न कोई बंधन
न मन की तपन, न कोई घुटन
गुरू तेरी सवारी में सीधा है मन
कि आनन्द ही आनन्द में रहते हैं हम–२
करूं शुक्रिया किस जुबां से तुम्हारा...२

• • • • •

भजन - 293

बड़े भाग्य तेरे जो नर तन पाया, न यूं ही गँवाना–२
इतना समझ ले आखिर ओ बंदे, कहाँ है ठिकाना–२

नर तन को तरसें देव जन सारे
वेद ग्रंथ गीता कुल ये पुकारे
मिल ले प्रभु से, है मिलने की बेला
नहीं तो पड़ेगा चौरासी में जाना

सुहाना समय ये फिर ना मिलेगा
राज़े हकीकत ना बिन गुरू खुलेगा
सतगुरू शरण में सर को झुका ले
मिल जाएगा ये तुझे नज़राना

प्रभु मैं हूँ तेरी शरण में जो आया
मुक्ति ये दे दे जिसने सिर को झुकाया
निज घर को जाने जो सतगुरू वचन से
खत्म होगा उसका आना और जाना

• • • • •

भजन - 294

बंगला अजब बना दरवेश जिसमें नारायण बोले
इस बंगले के दस दरवाजे बीच पवन का खंभा रे
आवत जावत लखे न कोई देखा बड़ा अचम्भा रे
बंगला...

पाँच तत्व का बंगला बनाया तीन गुणों का गारा रे
जिस कारीगर बंगला बनाया वो कारीगर न्यारा रे
बंगला...

इस बंगले में कौन रहेगा ब्रह्मा विष्णु महेशा रे
इस बंगले का पार न पाया ढूँढ़े फिर दरवेशा रे
बंगला...

सूरदास प्रभु बंगला बनाया कुदरत की बलिहारी रे
कर कृपा मोहे दर्शन दीजिये मैं हूँ शरण तिहारी रे
बंगला...

• • • • •

भजन - 295

बंदगी कर ले प्रभु की वरना तू पछताएगा
अरमाँ तो होगा बहुत जब प्राण तन से जाएगा...

गर्भ में वायदा किया था वो न तुझको याद है
तेरी खुशियों की इमारत तो बिना बुनियाद है
इस हवा का झोंका पल में तोड़ उसको जाएगा...

काम अपना पूरा करले बस इसी में शान है
सुख में हैं सब संगी साथी दुःख में एक भगवान है
साथ ना आया है कोई, साथ ना कोई जाएगा...

कहे कबीर सुना भाई साधो समय बड़ा बलवान है,
दो पाटन के बीच में बस पिस रहा ये जहान है
कील संग लग जाएगा तो, काल ना उसे खाएगा...

• • • • •

भजन - 296

ब्रह्मज्ञान सतगुरू का मिला सच्चा धन
ये सारा जहां जिसके आगे है कम

मिल जाए चाहे ये सारा जहां है
मिलती है मन को तृप्ति कहां है
जगी सच की चाहत तो मन हुआ अमन

इस तन मन का राजा बनाया
आकाश आत्मा की सैर कराया
इस जहान दीप के शहँशाह हैं हम

सौदा किया सत् चित् आनन्द का है
आनन्द आया जीवन मुक्ति का है
किया है खात्म अपना आवागमन

चढ़ता ये सूरज आत्मज्ञान का है
जिस प्रकाश से ये रौशन जहाँ है
ये जितना लुटाओ न होता है कम

• • • • •

भजन - 297

ब्रह्मज्ञान में शक्ति बड़ी
ज्ञान सुन ले घड़ी दो घड़ी
उस इंसान का जीना भी क्या
जिसमें ज्ञान की ज्योति नहीं
उस जीवन का मतलब भी क्या
जिसमें प्रेम की बोली नहीं, है प्रेम में शक्ति बड़ी...
आज से अपना वायदा रहा
गुरू शरण में रहेंगे सदा
लाख भौतिक सुख हों तो क्या
गुरू वचनों से बढ़कर नहीं, है सतगुरू की महिमा बड़ी...
लाख माया की उलझन बड़ी,
गुरू वचनों में बढ़कर नहीं
माया डोर डाले भी तो क्या
गुरू वचनों में पार हो जा, है सत्संग की महिमा बड़ी...
उसका जीवन भी जीना है क्या
जो सबके लिए ना जिया
उसका मरना भी मरना है क्या
जो जीते जी मर ना गया, मौत है सामने खड़ी...

• • • • •

भजन - 298

ब्रह्मज्ञान की सीढ़ियों पे कोई–कोई विरला चढ़े
जो चढ़ जाए सीढ़ियाँ, चौरासी लाख उसकी कटे

मिला मानुष तन अनमोल, मैंने माटी में उसको रोला
सतगुरू ने कृपा करके विवेक का ताला खोला
कि माटी से कँचन करे, जो चढ़ जाए...

मैं जब से जगत में आया, था अपना आप भुलाया
गुरू ने मेरे मन मंदिर में, है ज्ञान का दीप जलाया
कि कागा से हँसा करे, जो...

गुरू काम क्रोध से बचाए, और राग द्वेष को मिटाए
ये प्रेम का सागर बनके, खुद पिए और सबको पिलाए
कि सबसे प्रेम करे...

मैं गुरू पर जाऊँ वारी, जाऊँ लाख–लाख बार बलिहारी
स्वरूप का पता बताके, मेरी डूबती नैया तारी
कि आत्म रूप लखे, जो...

गुरू आया बन अवतार है, जिसकी महिमा अपरम्पार है
कोई माने या ना माने, ये तो वो ही कृष्ण मुरार है
कि गोपियों के भाग्य खुले, जो...

• • • • •

भजन - 299

ब्रह्मज्ञान के साबुन से जो
मन की मैल मिटाएगा
निर्मल मन के शीशे में वो
आत्म दर्शन पाएगा, वो...

रोम–रोम में ओम् है तेरा
तो तुझसे कोई दूर नहीं
देख सके ना आँख जो उसको
उन आँखों में नूर नहीं
देखेगा जो मन मन्दिर में
ज्ञान की ज्येति जगाएगा
निर्मल मन...

ये शरीर अभिमान है जिसका
प्रभु कृपा से पाया है
झूठे जग बंधन में फँसकर
हरि को क्यूँ बिसराया है
ओम् नाम का महामंत्र ये
साथ तुम्हारे जाएगा...

झूठ कपट निंदा को त्यागो
हर एक से तुम प्यार करो
हर घट में भगवान है तेरा
सेवा से मत इन्कार करो
निष्काम सेवा करने से ही
मन निर्मल हो जाएगा...

निष्फल है सब भक्ति तेरी
जब मन में विश्वास नहीं
मंजिल को क्या पाएगा
जब दीपक में प्रकाश नहीं
निश्चय है तो भवसागर से
बेडा पार हो जाएगा
निर्मल मन...

• • • • •

भजन - 300

बृज के नंदलाला राधा के साँवरिया
सभी दुःख दूर हुए जब तेरा नाम लिया

मीरा पुकारे जब गिरिधर गोपाला
ढल गया अमृत में विष का भरा प्याला
कौन मिटाये उसको, जिसे बचाये नन्दलाला...

जब तेरे गोगुल पे आया दुःख भारी
एक इशारे से सब विपदा टारी
मुड़ गया गोवरधन जहाँ तूने मोड़ दिया...

नैंनों में श्याम बसे, मन में बनवारी
सुध बिसियार गई कुरली की धुन प्यारी
मन के मधुबन में रास रचाए रसिया...

• • • • •

भजन - 301

By God मुझे मिल गया God है।
Very Lengthy, very very broad है।
ना है रूप, ना है रंग But, रहता अंग संग
His face is very very nice है।
मन में बजती है Ring मेरे God मेरे King
Very Lovely and very very sweet है
You are near से भी near you are dear से भी dear
My dear Every where तेरा वास है
तेरा thank you मेरे प्यारे मेरी life के सहारे
सच्ची प्रीत है ना कोई ये Fraud है।
You are left & right तेरा जलवा day & night
जो न माने उसका very very Loss है।
मेरे God की कहानी सुन लो मेरे से जुबानी
मन है काला, और God मेरा White है
ये Sky और तारे, मेरे God के सहारे
देखो देते light, day & night है।
Poet लिख लिखकर हारे मेरे God के नजारे
सच्ची प्रीत है न कोई Fraud है।

.....

भजन - 302

बन्दगी कर ले प्रभु की वरना तू पछताएगा
होगा बहुत जब प्राण तन से जाएगा

गर्भ में वादा किया था वो न तुझको याद है
तेरी खुशियों की इमारत तो बिना बुनियाद है
एक हवा का झोंका इसको तोड़ पल में जाएगा

काम अपना पूरा कर ले बस इसी में शान है
सुख के सब संगी साथी दुःख में एक भगवान है
साथ कोई आया है न साथ कोई जाएगा

कहत कबीर सुनो भई साधू समय बड़ा बलवान है
दो पाटन के बीच में पिस रहा इंसान है
कील संग जो लग गया उसे काल भी न खाएगा

.....

भजन - 303

बन्धु अनमोल बड़ी, तेरे श्वासों की लड़ी
यूँ ही जाए न बिखर, रात–दिन नाम सुमर।

सुबह होती है शाम होती है
उम्र यूँ ही तमाम होती है
दो घड़ी ध्यान न लगाएगा
मन में विश्राम कैसे पाएगा।
लौटकर वक्त फिर न आएगा। बन्धु...

दुनिया फानी है, एक धोखा है
ये जनम ही सुनहरा मौका है।
बस यही पुल है पार जाने का
श्रुति को शब्द में मिलाने का
ऐसा मौका कहाँ तू पाएगा। बन्धु ...

माया मझधार में गिराएगी,
बन्दगी अन्त तक निभाएगी
तेरे सतगुरू तुझे जगाएगें
सच की पहचान जब कराएगें
प्रेमी फिर परम–पद को पाएगा। बन्धु ...

• • • • •

भजन - 304

बहुत प्यार करते हो माया से तुम
मगर याद रखना ये जीवन है कम

दो दिन की जिन्दगी दो दिन का मेला
आया था अकेला जायेगा अकेला
साथ चलेंगे तेरे–२ किये जो कर्म
बहुत प्यार ...

लाखों करोड़ों से दिल न भरेगा
दिल का खजाना तो खाली रहेगा
करना है जो भी कर ले, जब तक है दम
बहुत प्यार ...

जिन्हें चाहते हो वो तुम्हें आग देंगे
तेरे दोस्त भाई तुझे दाग देंगे
लकड़ी के ढ़ेरों पे होंगे भस्म
बहुत प्यार ...

अभी भी समय है कोई काम कर ले
किसी की दुवाओं से दामन भर ले
वापस मिलेगा न फिर ये जनम
बहुत प्यार ...

• • • • •

भ

भजन - 305

भीतर है सखा तेरा सखा मन लगा के देख।
अंतःकरण में ज्ञान की ज्योति जला के देख।।

है इन्द्रियों की शक्तियाँ बाहर की ओर जो,
बाहर से तोड़कर के अंदर से जोड़ दो।
कर सकल द्वार बंद समाधि लगा के देख।।

निज आत्मा में अपनी रचना का ध्यान कर,
निश्चय ही झूम जाएगा महिमा का गान कर।
श्रद्धा की रूठी हुई देवी को मना के देख।।

साक्षी पवित्र देव हैं बिगड़ी बने न क्यों,
जीवन ये मेरा भक्ति के रस में भीगे न क्यों।
आत्मा के आनंद का जीवन बना के देख।।

• • • • •

भजन - 306

भरोसा जिसको भगवान में है
उसे कोई चिंता न करनी पड़ेगी
जमाना उसको डुबोना भी चाहे
मगर नाव उसकी तरी है तरेगी...

राणाजी ने मीरा को मिटाना ही चाहा
भेजा साँप काला जहर भी पिलाया
राणाजी ने सोचा मीरा मरेगी
मगर नाव उसकी...

विपत द्रौपदी पर दुर्योधन ने डाली
नग्न करना चाहा सभा बीच नारी
दुर्योधन ने सोचा नग्न हो रहेगी
मगर नाव उसकी...

जमाना तो भक्तों पर हँसी करता आया
बिना मोल भक्तों से झगड़ा लगाया
जमाना ने समझा कि महिमा घटेगी
मगर नाव उसकी तरी है तरेगी...

• • • • •

भजन - 307

भजन बिना बाँवरे तैने हीरा जन्म गँवाया
कभी न आया संत शरण में कभी न हरि गुण गाया
बह–बह मरा बैल की नियाहीं सोया रहा उठ खाया
तैने हीरा जन्म गँवाया...

ये संसार हाट बनिये की जब जग सौदा आया
चातुर माल चौगना कीन्हा मूर्ख मूल गँवाया
तैने हीरा जन्म गँवाया...

ये संसार फल सेमल का सुआ देख लुभाया
मारी चोंच रूई निकसाई सर धुन के पछताया
तैने हीरा जन्म गँवाया...

ये संसार माया का लोभी ममता महल चुनाया
कहत कबीर सुनो भाई साधो हाथ कुछ नहीं आया
तैने हीरा जन्म गँवाया...

• • • • •

भजन - 308

भगवान मेरे मन को तो भी भगवान बना दे।
तू मन तो बना है अब इस तने को सजा दे।।

इस मन की आँख से तुझे हर चीज में देखूँ,
फूलों में भी देखूँ तुझे मिट्टी में भी देखूँ।
फूलों में सजा दे मुझे मिट्टी में समा दे।।
भगवान मेरे...
रहना जो है जहान में रख ले तू अपने पास,
जीवन की हर घड़ी में मुझे हो तेरा एहसास।
शीशे में जो देखूँ तेरा दरपण ही बना दे।।
भगवान मेरे...
हैं छूट गए बंधन और मिट गया अभिमान,
एहसास मगर तन का ही करता है परेशान।
खो जाऊँ तुझ में बस ये ही तू मुझको दुआ दे।।
भगवान मेरे...
न रूप हो मेरा कोई हो जाऊँ निराकार,
तन मन धन मेरा सब कुछ पाए तेरा आकार।
इन आँखों को भी ज्ञान देखना तू सिखा दे।।
भगवान मेरे...

• • • • •

भजन - 309

भगत भगवान के संकट से डर जाया नहीं करते।
वो हर दुःख हँस के सहते हैं, वो घबराया नहीं करते।

बड़ी दुष्वार है घाटी, भयंकर राह भक्तों की–२
जो बुजदिल हैं वो, इस मैदान में आया नहीं करते, वो...

रहे हर हाल में जो खुश, गरीबी में नहीं रोते
मिले जो बादशाही तो वो इतराया नहीं करते, वो...

दुःखी देखें किसी को वो, तो दिल उनका तड़पता है
किसी भी शरण आए को वो ठुकराया नहीं करते, वो...

जान जाए चली जाए, न जाए वचन को पाले
कदम धर धर्म की राह में भटक जाया नहीं करते, वो...

• • • • •

भजन - 310

भक्तों की याद पर आता जरूर हूँ–२
आज भी आऊँ और कल भी मैं आऊँ

भक्तों पर भीड़ पड़ी मैं नंगे पाँव आता हूँ
जैसे–जैसे जपतें हैं वैसे–वैसे आता हूँ

द्रौपदी का चीर हरा, वस्त्रों का रूप धरा
मीठे बेर शबरी के, मैं प्रेम से खाता हूँ

मीरा ने विष पिया मैंने जा अमृत किया
रग–रग–रग में रंग चढ़ाता हूँ।

नरसिंग का नाम सुना दुष्टों का दुख जाना
सतयुग, त्रेता, द्वापर की मैं साथ निभाता हूँ।

• • • • •

भजन - 311

भाग्यशाली हमको बनाया, मेरे श्याम जो तू जीवन में आया
प्यार तेरा अनमोल पाया, मेरे श्याम जो ...

किसी ने न हमको था प्रेम सिखाया
चढ़ना जो चाहा तो फिर–२ गिराया
धिक्कारा था सारे जगत ने हमको
एक तूने ही तो गले से लगाया
ओ आनन्द तेरे चरणों में पाया, मेरे श्याम ...

सतगुरू हमारे बड़े ही प्यारे
शरण में आये उसे पल में तारे
सभी ने था मुक्ति को मुश्किल बताया
गुरू ने तो जीते जी मुक्त कराया
ओ सतगुरू हमने नं १ पाया, मेरे श्याम ...

गुरू तेरा शुकराना कैसे हम गाएं
इसे गाने वाली जुबां कहां से लाएं
गुरू कितना ऊँचा है आदर्श तुम्हारा
इसके आगे छोटा है संसार सारा
हो हमने सब कुछ तुमसे ही पाया, मेरे श्याम ...

• • • • •

भजन - 312

भगवान तेरी उल्फत में एक प्यार भी है और मार भी है
एक प्यार भी है एक मार भी है
क्या है प्रेम निभाने में, गुलजार भी है और खार भी है

एक हाथ में प्यार भरी वंशी, एक हाथ में चक्र सुदर्शन है
हम तो समझे न चालों को, एक प्यार भी है एक मार भी है
ये गीता का इकरार भी है। भगवान...

ड्योढ़ी पर पहरेदारों ने, रोका तो सुदामा यूँ बोले
भगवान मेरा दिलदार भी है, एक यार भी है एक प्यार भी है।

तड़फा लो जितना जी चाहे, आखिर एक दिन तो आएगा
क्योंकि मौजूद जमाने में, गीता का ये इकरार भी है।

• • • • •

भजन - 313

भाव का भूखा हूँ मैं, बस भाव ही इस सार है।
भाव से मुझको भजे जो, भव से बेड़ा पार है।।

अन्न धन और वस्त्राभूषण, कुछ न मुझको चाहिए,
आप हो जाएँ मेरा बस, यही मेरा सत्कार है।
भाव का भूखा...

भाव बिन सूनी पुकारें, मैं कभी सुनता नहीं,
भाव वाले भक्त ही, करते मुझे लाचार हैं।
भाव का...

भाव बिन सब कुछ दे डालो, तो भी मैं लेता नहीं,
भाव से इक फूल भी दो, तो मुझे स्वीकार है।
भाव का...

जो भी मुझमें भाव रखकर मेरी लेता है शरण जी,
उसके और मेरे हृदय का, एक रहता तार है।
भाव का...

भाव जिस जन में नहीं, उसकी मुझे चिंता नहीं,
भाव वाले भक्त का, भरपूर मुझ पर भार है।
भाव का...

बाँध लेते भक्त मुझको, भाव की जंजीर से,
इसलिए इस भूमि पर, होता मेरा अवतार है।
भाव का...

• • • • •

भजन - 314

भोर भई उठ जाग–२ मन कब से सोया रे
हरि भजन में लाग–२ अब सवेरा होया रे

निशवासर तोहे संत जगावे तोहे तेरा रूप दिखावे
सुनत न उनकी तू आवाज नींद में खोया रे...

मोह ममता का देख अंधेरा चित्त में किया तेरे पांचों ने डेरा
लूट तुझे दिन रात–२ भर माल है खोया रे...

श्रद्धा भक्ति और नित्त सत्संग की गुरूसेवा न नाम आराधन
किये जन्म भर कर्म जो तूने बीज कांटों का बोया रे...

प्रेमी जाग जगन की बेला कर सांचे साहिब से मेला
जन्म लगे न हाथ में तेरे अगर तू सोया रे...

• • • • •

म

भजन - 315

मन में तरंग जान लो, बस हो गया भजन।
आदत बुरी सुधार लो, बस हो गया भजन।।
नजरों में तेरे दोष है,
दुनियाँ निहारते
समता का अंजन डाल लो, बस हो गया भजन।
कोई बुरा भला कह,
कर देना तू क्षमा
वाणी के सुर सम्हाल हो, बस हो गया भजन।
आए हो तुम कहाँ से,
और जाओगे किधर
मन में जरा विचार लो, बस हो गया भजन।
अनमोल ब्रह्मानंद जो चाहिए सदा
घट–घट में राम निहार लो,
बस हो गया भजन।
ये महल माड़ियाँ ना तेरे साथ जाएँगी
सतगुरू की महिमा जान लो,
बस हो गया भजन।

• • • • •

भजन - 316

मन मस्त हुआ फिर क्या बोले

हीरा पायो गाँठ गंठायो।
बार–बार वाको क्यों खोले।।

हल्की थी तब चढ़ी तराजू।
पूरी भई तो क्या तोले।।

सुर्ति कुल्हाड़ी भई मतवाली।
मधुवा पी गई बिन घोले।।
हँसा पायो मानसरोवर।
ताल तलैया क्यों डोले।।

तेरा साहिब तेरे मन में वसंदा।
बाहिर नैना क्यों खोले।।

कहत कबीर सुनो भई साधो।
साहिब मिल गए तिल ओले।।

• • • • •

भजन - 317

मन की आँखे खोल, बाबा मन की आँखे खोल

दुनिया क्या है खेल तमाशा, चार दिनों की झूठी आशा
पल में तोला, पल में मासा
ज्ञान तराजू हाथ में लेकर, तोल सके तो तोल...

मतलब की सब दुनिया सारी, मतलब के हैं सब संसारी
जग में तेरा कौन हितकारी
तन मन का सब जोर लगाकर, नाम प्रभु का बोल...

• • • • •

भजन - 318

मन लागो मेरो यार फकीरी में

जो सुख पायो मैं राम भजन में
सो सुख नाहीं अमीरी में, मन...

भला बुरा सब का सुन लीजे
कर गुज़रान गरीबी में, मन...
प्रेम नगर में रहन हमारी
भले बन आई सबूरी में, मन...

हाथ में डंडा बगल में सोंटा
चोरों और जगीरी में, मन...

यह तन आखर खाक मिलेगा
काहे फिरत मगरूरी में, मन...

भाई बंध कुटुंब कबीला
बाध्यों मोहे जंजीरी में, मन...

कहत कबीर सुनो भाई साधो
साहिब मिलेंगे सबूरी में, मन...

• • • • •

भजन - 319

मस्ताना जोगी आया है अंतर शक्ति जगाने
अलबेला जोगी आया है सोऽहम जाप जपाने
अंतर शक्ति जगाने सोऽहम जापे जपाने...

महिमा उसकी गाएँ कैसे वाणी रूक-रूक जाए
सनमुख उसके आएँ कैसे मस्तक झुक-झुक जाए
वो पावन ज्योति लाया है प्रभु की राह बताने...

चरण धरे वो जिस धरती पर वो तीर्थ बन जाए
क्षण भर देखे जिसको योगी चित्तशक्ति जगजाए
वो अमृत रस भर लाया है जीवन अमर बनाने...

ऋिद्धि सिद्धि चरणों में उसके भीतर चंवर डुलाए
भेष फकीरी परमहंस वो शहनशाह कहलाए
वो अलख जगाने आया है वाणी अमर सुनाने...

रहनी करनी अद्‌भुत उसकी कहानी अजब निराली
कभी प्यार से बहुत दुलारे, कभी सुनाये गाली
हर बात में तत्व समाया है विरला कोई पहचाने...

अंतर के सब भ्रम मिटाए साँचा ज्ञान सुनावे
जीवन ईश इक रूप बताकर परम ब्रह्म दरसावे
नित् नित्यानंद बहायाहै कोई आओ भक्त नहाने...

अमर उजाला बिखराएगी ये परमेश्वर वाणी
सोया कण-कण जाग उठेगा जागेगा हर प्राणी
ये विश्व गुरू बन आए हैं कोई माने या न माने...

भव बंधन में जकड़े प्राणी जग की ठोकर खाएँ
लख चौरासी योनी भुगतें साँचा सुख नहीं पाएँ
यहाँ महाआनन्द समाया है वो आया मुक्ति दिलाने...

जीव पने का भ्रम मिटाकर आत्म ज्ञान बताए
जन्म-मरण से न्यारा है तू, तत्वमसि सुनाए
तो मति पलटाने आया है सत्य सरूप लखाने मस्ताना...

कृपाकुंज है देव देव हम क्या सेवा में लाएँ
हाथ जोड़कर वंदन करते चरणन सीस झुकाएँ
गुरूदेव शरण में आए हैं मिलकर शीश चढ़ाएँ...

• • • • •

भजन - 320

मस्तों की महफिल में आकर तो देखो।
जरा खुदी को अपनी मिटाकर तो देखो।।

भूलेंगे नशे माया के सारे।
जरा गीत प्रभु के गाकर तो देखो।।

बैठा है दिल में तेरे ओ प्रेमी।
जरा सर को अपने झुका कर तो देखो।।

लहरें ही बन जाएँगी फिर किनारे।
तूफान से जरा टकरा के तो देखो।।

खुलेंगे भंडार आनंद के सारे।
जरा सतगुरू को अपना बना के तो देखो।।
मस्तों की महफिल में...

• • • • •

भजन - 321

महलों में नहीं कुटिया में नहीं
जहाँ याद करो भगवान वहीं

भगवान तो प्रेम के बस में हैं
वो दिल में बसे सबके साईं
क्यूँ पाप कमाके धन जोड़ा
कौड़ी के लिए नाता जोड़ा
सोने में नहीं, चाँदी में नहीं...

क्यों छुपके फेर रहा माला
तुझे देख रहा भीतर वाला
मंतर में नहीं, जंतर में नहीं
जहाँ याद करो, भगवान वहीं

पाताल गगन और जल थल में
भक्तों के लिए आते छिन में
गंगा में नहीं, यमुना में नहीं
जहाँ याद करो, भगवान वहीं

ये प्रकृति प्रभु की माया है
उस परमेश्वर की छाया है
चँदा में नहीं, सूरज में नहीं
जहाँ याद करो, भगवान वहीं

क्यों ज़ग दर्शन को हैं फिरते
क्यों याद नहीं दिल से करते
मंदिर में नहीं मस्जिद में नहीं
जहाँ याद करो...

• • • • •

भजन - 322

मजा है जो फकीरी में अमीरी क्या समझ पाए
उसे हरदम खुशी रहती जिसे हर दम लगी आहें...

नहीं जंगल में जाने से नहीं बस्ती में रहने से
गृहस्थ आश्रम से क्या मतलब न सन्यासी कहलाने से
पलटती हैं मनोवृत्ति वो ही निहाल हो जाए
मजा है जो...

दीवाने उसकी महफिल के नहीं बेचैन होते हैं
वो सोने पर भी जगते हैं वो जगने पर सोते हैं
भरा अंदर में जो रस है वोही हर वक्त छलकता है
मजा है जो...

नहीं परवाह कांटों की न फूलों से मुहब्बत है
सभी में इस खुदाई जो मेरी ही शहूरत है
हटाया दिल को विषयों से वो नुस्खा आजमाया है
मजा है जो...

किसी से ना शिकायत है न खुद करता शरारत है
जो मंजिल पर पहुँच जाता मिटी भटकन की आदत है
उसी आनन्द की लहरों में नशे में झूमता रहता
मजा है जो...

• • • • •

भजन - 323

माटी कहे कुम्हारे से तू क्यों रौंदे मोहे
इक दिन ऐसा आएगा मैं रौंदूंगी तोहे–२

आए हैं तो जाएँगे राजा रंक फकीर
एक सिंहासन चढ़ चले एक बंधे जंजीर

दुर्बल को न सताइए, जांकि मोटी हाए
बिन जीव के स्वांस का, लोह भस्म हो जाए...

चलती चाकी देख के, दिया कबीरा रोए
दो पाटन के बीच में, बाकी बचा न कोए

दुःख में सुमिरण सब करे सुख में करे न कोए
जो सुख में सुमिरण करे तो दुःख काहे को होए...

पत्ता टूटा डाली से ले गई पवन उड़ाए
अब के बिछड़े कब मिलेंगे दूर पड़े हैं जाए

कबीर आप ठगाइए और न ठगीए कोए
आप ठगे सुख उपजे और ठगे दुःख होए....

• • • • •

भजन - 324

मिल गया–मिल गया जिसको ढूँढ़ते थे हम
खिल गया–खिल गया मेरे दिल का चमन
मैं सुनाऊँ किसे ये है दिल की लगन

तू मिला जो न था मैं परेशान थी
मेरे रग–रग में ये ही एक तान थी
तू कहाँ खो गया है ओ जाने जिगर
क्यों अकेला भेजा मुझे इस धरती पर

जिसकी तिरछी नजर है घायल किया
जिसकी मीठी अदाओं ने जादू किया
ऐसे महबूब जमाने में मिलते हैं कम
जागी जिसके मिलने से है दिल में उमंग

जागा दिल में तूफान मैंने दिल दे दिया
तूने अपने कहा दिल मेरा खो गया
कैसे हो ही गया तेरा मेरा मिलन
मैं सुनाऊँ किसे ये है दिल की लगन

दिल की धड़कन का मुझको ख्याल न रहा
अपने ही अरमानों को मैं छू न सका
इसी आग में चाहे जले मेरा तन
मैं सुनाऊँ किसे ये है दिल की लगन

तुझ में देखा मैंने वो नूर है
जिसे जन्मों से खोजा बहुत दूर है
अब तू ही बना है मेरा हम सफर
मैं सुनाऊँ किसे ये है दिल की लगन

ज्ञान का तीर जब मेरे दिल में लगा
मुझको अपने स्वरूप का पता मिल गया
शुक्रिया करती रहती हूँ तेरा दिन ब दिन
मैं सुनाऊँ किसे ये है दिल की लगन

• • • • •

भजन - 325

मिले सतगुरूजी, दिल बहार हो गया
कब की आस लगी, आज दीदार हो गया

कीति कृपा गुरां ने संयोग मिलिया
साढा मुद्दतां दा आज सारा रोग टलिया
जदों पाया दर्शन, बेड़ा पार हो गया...

असीं जन्म–जन्म दुःख पावंदे रहे
मन माया दियां ठोकरां भी खावंदे रहे
सतगुरू ने बचाया, पर उपकार हो गया...

दासन दासी ऐसे गुरां नू बलहार जाइए
सच्ची लिव गुरू चरणां दे नाल लाइए
फिर जन्म सफल संसार हो गया...

मिलके सेवक गुरां दे खुशहाल होवंदे
देंदे सब नू वधाइयाँ ते निहाल होवंदे
आज सेवकांते सतगुरू दयाल हो गया...

• • • • •

भजन - 326

मिलती है बड़े भाग्य से सत्संग की ये घड़ी,
होती है सतगुरू की उन पर कृपा बड़ी।

फिरता रहा जहाँ में खुशी की तलाश में,
हर मोड़ पे थी सामने उलझन मेरे खड़ी।

भूला रहा मैं खुद को खुदा की तलाश में,
वो ख्वाब था खुदा की रूह मुझ में है बसी।

उलझा रहा जहाँ के झूठे ख्याल में,
पैरों में मोह–माया की जंजीर थी पड़ी।

सत्संग में आके जाना जीवन के सार को,
वरना तो ये जिन्दगी भी वीरान थी पड़ी।

सतगुरू की शरण आने से अनुभव का दर खुला,
सफल हुई है जिन्दगी जब उनकी नजर पड़ी।

• • • • •

भजन - 327

मन के सुख सागर में मैं डूब के सो जाऊँ
सपना भग जाए सारा ओम् में खो जाऊँ
खोज खोज तुझे नेहा तरसे
युग–युग बीत गये
काल चक्र में जीवन युद्ध
हारे और जीत गए
जन्म मरण मिथ्या सब रे तुझको जो पाऊँ,
ओम्...में खो जाऊँ
गुरू कृपा बिन ज्ञान कहाऊँ
गुरू प्रेम वरदान
नाही रहे अब द्वेष क्लेश
सुख दुःख एक समान
मुक्त भए बंधन सारे, तुझको जो पाऊँ,
ओम्...में खो जाऊँ
मन को ब्रह्मानंद मिले
मैं ना राम ही राम
शांत भए सब शांत भए
तुझमें पूर्ण विराम
अमर है ये आनन्द प्रभु तुझको जो पाऊँ...

• • • • •

भजन - 328

मन अपना ही कृष्ण मुरारी बन गया।
जदों प्रेम ओदे इकतारी बन गया।।

काम क्रोध नूँ मारे, लोभी मोह नूँ सँवारे।
पर्दा खुदी दा उतारे, तो बनवारी बन गया।।

राग द्वेष नूँ मिटावे, सारे भरम हटावे।
प्रीत जाल ओदे लावे, तां गिरिधारी बन गया।।

माता ममता नूँ मारे, आशा नारी सुझारे।
तृष्णा बहन नूँ बिचारे, तां गिरिधारी बन गया।।

जेड़ा हरि नूँ धियावे, हरि रूप बन जावे।
संत आनन्द मनावे, तां दरबारी बन गया।।

. . . . .

भजन - 329

मेरी रसना में प्रभु तेरा नाम निकले
हर घड़ी हर वेले, ओम्-ओम् निकले

मन मंदिर में ज्योति जगाऊँगी
प्रभु तेरा मैं सदा गुण गाऊँगी
मेरे रोम-रोम विच तेरा नाम निकले, हर...

मेरे अवगुण चित से भुला देना
मेरी नैया किनारे लगा देना
तेरी याद विच सुबह और शाम निकले, हर...

तेरी भक्ति का सदा गुणगान करूँ
तेरे वचनों का नित मैं ध्यान करूँ
तेरी याद विच जीवन तमाम निकले, हर...

. . . . .

भजन - 330

मेरी अखियाँ विच शाम मेरा आन बसिया
नैन खोलां किवें

नैन खोलदी ते लोकी मैनूं वेखदे
कँहदे किथो लब्बा लाल, सानुँ भेद दे
ऐना सुनके मैं अखियाँ नूँ होर कसया
नैन खोलां किवें...

सइयों पूछो न गल इस लाल दी
पहले भाल करो दलाल दी
सतगुरू है दलाल जिन्हें भेद दसया
नैन खोलां किवें...

राती सपने विच शाम मेरे आ गए
मेरी माँग विच सुवा रंग पा गए
मैं तां हो गई सुहागन अंग-अंग रसिया
नैन खोलां किवें...

मैंनू सतगुरू साड़ी साड़ी दित्ती ज्ञान दी
मैं तां ला लीती किनारी उते ध्यान दी
सखी जग वल मन हुन नहीं नसदा
नैन खोलां किवें...

• • • • •

भजन - 331

मैं आप ब्रह्मानंद मैनूं वेद गांवदा।
समदृष्टि करके देखो प्यारे नजर आवंदा
मत भूलो भटको प्यारे वेला हत्थ व आवंदा।

प्रभु को खोजन मैं चली मैं आपा भूल गई।
तन मन में मेरे व्यापक जैसे दूध में दही।।

प्रभु को ढूँढन मैं चली मथुरा द्वारिका।
देही में उसका वास उद्यम करो विचार का।।

मैं पाँच कोष से दूर मेरा साक्षी स्वरूप है।
मैं आदि मध्य अंत मेरा यही स्वरूप है।।

तिलों में जैसे तेल है, मेहंदी में जैसे रंग।
मैं सर्वव्यापक आत्मा रहता हूँ सबके संग।।

• • • • •

भजन – 332

मैं कुछ भी नहीं पर सब कुछ हूँ,
यह खेल अनोखा न जाने कोई।

सब हृदयों का आधार स्वरूप,
हर संकल्प का हूँ मैं खेवनहार।
यह न जान सका कोई खेले अजब,
बस नाच रहा पुतली की तरह।
एक जादू है एक तिल्सम है,
युग–युग से चला आता है वही।
कभी शांति न पाये फिर–पछताये,
इस जादू की नगरी में गिरकर।
लाख सिर पटकाये कुछ न हाथ आये,
पलभर में जाये यह सब छिनकर।
दुःख मौत के इस पिंजरे में मेरे,
यह न हो सकता बच जाये कोई।

इक राज की बात बताता हूँ,
जो हर हृदय में गाता हूँ।
तेरे हर संकल्प से पहले है जो,
तेरे अहम् का भी आधार है जो।
मैं तेरा वही सर्व रूप ही हूँ,
सिवाय मेरे नहीं है कुछ भी कोई।

आ जाओ गले लग जाओ मेरे,
मेरे रस की ही धारा है तू।
मुझ ही से तेरा खेल हुआ,
अब और न भटक खुद को न रूला।
मेरे पास तूँ आ मुझमें समा,
न ये प्यास रहे न ही प्यासा कोई।

. . . . .

भजन - 333

मैं दुनिया के तापों से बच गयो रे।
आनंद भयो रामा आनंद भयो रे।।

प्रेम तेरे में मैं बांवरी होई,
दिल का दर्द मेरा जाने न कोई।
नशो ये निरालो चढ़ गयो रे।।

लाख रोके मुझे दुनिया वाले,
नैया मेरी अब तेरे हवाले।
मैं तेरे ही रंग में रंग गयो रे।।

तेरे सिवाय मुझे कुछ ना भावे,
देखूँ जिधर भी नजर तू ही आवे।
ओ प्रेम की बदरी बरस गयो रे।।

मेरे तो प्रभु गिरिधर नागर,
भर गई अब मेरी खाली गागर।
मैं जीते जी जग से तर गयो रे।

• • • • •

भजन - 334

मेरे सतगुरू ने मुझे राजा बना दिया
खोला जो खजाना ज्ञान का महाराजा बना दिया...

ज्ञान की वाणी चुन-चुन के सतगुरू ने माला बनाई
आतम डोर में बुनके हर जिज्ञासु को पहनाई
आनंद का हर रोम रोम में, दरिया बहा दिया...
पाँचों ही विकारों की सतगुरू ने जूती बनाई
द्वैत का काजल पोंछ के फिर सब आत्म दृष्टि दिखाई
माया का है खेल तमाशा, साफ ये दिखा दिया...

सारा जहान ही अपना है, हीरे मोती क्या करने
अज्ञानी थे हम अब तक, जीते थे माया में मरने
मौत हुई अज्ञानी की, ज्ञानी मुझे बना दिया...

होगी ये भी कृपा गुरू की, हम आत्म में रह लेंगे
जब तक प्राण रहें तन में, हँसके सब कुछ सह लेंगे
बालक हैं भगवान के हम, भगवान से मिला दिया...

नींद से गहरी हमको जगाया राजाई दिखलाने
जन्मों से जो भूले थे, उस ज्योति को फिर से जगाने
ताज आत्मा का हम पे सजाके तख्त पे बिठा दिया, मेरे...

• • • • •

भजन – 335

मेरे सतगुरू मुझे अपनी पसंदी का बनालो जी
मुझे झुकना नहीं आता मुझे झुकना सिखादो जी

ये देह तेरी है सतगुरू ये दिल तेरा दीवाना है
तुम्हीं में डूब ये जाए–अपने में ही समालो जी,
मेरे सतगुरू...

जो हूँ तूने बनाया है न पिछला कुछ भी बाकी है
तूने इतना बनाया है तुम्ही पूरण बनादो जी,
मेरे सतगुरू...

तूने सब चाह पूरण की सिर्फ इक चाह बाकी है
कि अब सब काम हो पूरे आत्मा में टिका दो जी,
मेरे सतगुरू...

तेरे एहसान हैं इतने हुआ कुर्बान मैं कितना
शुक्रिया कैसे हो सकता है तेरा ये भी बता दो जी,
मेरे सतगुरू...

• • • • •

भजन – 336

मेरे सतगुरू मैं तेरे द्वार आई
मैं तेरे ही राहों पे चलती रहूँगी
तेरा ज्ञान पाके किस्मत खुली है,
नई जिन्दगी अब तो मुझको मिली है

मिला है मुझे प्रभु तेरा सहारा
चलती रहूँ मैं प्रभु तेरे इशारे
मैं अपने ही दिल में तुझको बसाके
मैं तेरे ही राहों पे...

बिना ज्ञान हर कोई धोखा ही खाए
प्यासा ही आए और प्यासा ही जाए
माया के नशे में अपना जीवन गँवाए
मैं तेरे ही राहों पे...

जिधर देखती हूँ, उधर तुम ही तुम हो
जिधर भी मैं देखूँ प्रभु तेरा हो दीदारा
समाया है मुझमें तू साँझ सवेरा
मैं तेरे ही राहों पे...

• • • • •

भजन – 337

मेरे साकिया बता दे, वो शराब कौन सी है।
जिसे पीके सारी दुनिया, तेरे दर पे झूमती है।।

फैलेगा मेरा दामन, सौ बार तेरे आगे।
बहरे सफा बता दे, तेरे दर पे क्या कमी है।।

तू हजार बार ठुकरा, मेरा सर यहीं झुकेगा।
है यही मेरी इबादत, मेरी बंदगी यही है।।

तौबाह गुनाह मेरे, क्या–क्या किया है मैंने।
इस पर भी तू निवाजे, तेरी बंदा परवरी है।।

• • • • •

भजन – 338

मेरे मालिक की दुकान पर सबका वही खाता
जितना जिसके भाग्य में लिखा
उतना ही फल पाता
मेरे मालिक...

क्या साधु क्या संत गृहस्थी
क्या राजा क्या रानी
उसकी बही में लिखी है
सबकी कर्म कहानी
किसी को कौड़ी कम नहीं देता
ना वो देवे ज्यादा
मेरे मालिक...

उसके घर ने रिश्वत चलती
न कोई चले चालाकी
उसकी अपने लेन–देन की
नीति बड़ी है बाकी
ज्ञानवान तो चुप कर जाता
मूर्ख शोर मचाता
मेरे मालिक...

करते हैं इनसाफ प्रभु जी
खुद आसन पर डट के
उनका लिखा कभी न टलता
लाख कोई सिर पटके
पुण्य का बेड़ा पार करे वो
पाप की नाव डुबाता
मेरे मालिक...

अच्छी करनी कर मेरे मनवा
कर्म न कर कोई काला
लाख आँख से देख रहा है
प्रभु तो देखनहारा
अच्छी खेती बो मेरे मनवा
समय गुजरता जाये
मेरे मालिक...

• • • • •

भजन - 339

मेरे दादा की मुरली क्या है बोले प्रेम प्रेम प्रेम,
ये बाँस की लकड़ी क्या है बोले प्रेम प्रेम प्रेम।
ये ज्ञान की मुरली क्या है बोले प्रेम प्रेम प्रेम।।

मिली मानुष की है देही इसकी कदर न जाने कोई।
इस मानुष जन्म को कौन है बनाये...प्रेम प्रेम प्रेम।।

चलो प्रेम नगर में प्यारे सच्चा आनंद है गुरू के द्वारे।
प्यारे प्रभु की रचना को कौन है जाने...प्रेम प्रेम प्रेम।।

जिसने प्रेम की माला पहनी है सतगुरू उसका साथी।
इस मन के मुखड़े को कौन है खोले...प्रेम प्रेम प्रेम।।

जो गुरू वचनों को ध्यावे वो अंतरमुख हो जाये।
ऐसी सहज समाधि कौन सिखाये...प्रेम प्रेम प्रेम।।

जो प्रेम नगर में आए तो आनंद रस को पाए।
इस आत्मपद पर कौन बिठाए...प्रेम प्रेम प्रेम।।

जो श्रद्धा से यहाँ आये वो ही ज्ञान गंगा में नहाए।
वो सब को सिखाए मेरा दादा...प्रेम प्रेम प्रेम।।

• • • • •

भजन - 340

मेरा सतगुरू प्यारा गीत है
मीतों से प्यारा मीत है...

सतगुरू शब्द उचारदे जिवें अमृत वर्षा हो रही
जन्म–जन्म दी बिछड़ी मैं रंक से राजा हो गयी
मेरा सतगुरू परम पुनीत है, मीतों से प्यारा...

मोह माया के जाल में मैंने अपना आप गँवाया सी
पूरे गुरां ने कृपा करी बांह पकड़ के पार लगाया सी
ये तो महापुरूषों की रीत है, मीतों से प्यारा...

आपे खेल खिलाड़ी मोहन आपे खेल रचावंदा
महापुरूषों के वाक्य द्वारा भेद सारा खुल जावंदा
वो तो छुप छुप करता प्रीत है, मीतों से प्यारा...

मैं प्रीतम की प्रीतम मेरा दोनों ही एक स्वरूप है
जल थल व्यापक पूरन सारे सोऽहम ब्रह्म स्वरूप है।
मेरा वेद भी गाते गीत हैं, मीतों से प्यारा...

• • • • • •

भजन - 341

मेरा प्रीतम वसंदा कोल लो कोल
वेखो अंदर अपना टोल लो टोल

मन अपने दी करो सफाइ
फिर देवेगा प्रीतम दिखाई
ओ बोल मिठड़े बोल लो बोल लो बोल...

सुर्ति निर्ति दी डोर बनाई
नाम का मणका उसमें पाई
चित्त नूँ कर लो अडोल लो डोल...

प्रेम की कुजी, ज्ञान का ताला
इस विधि खोले शिव दिवाला
फिर लाल मिले अनमोल लो मोल...

सत्त की डंडी धर्म का तोला
संतोष भारी करत है मोला
वैराग्य है पूरा, तो लो तोल...

गगन मंडल में कौन है वसदे
पूरे गुरां दा ज्ञान है दसदे
देखो अखियाँ अपने, खोल लो खोल...

• • • • •

भजन - 342

मेरा सत्चित् आनंद रूप कोई–कोई जाने रे

द्वैत वचन का मैं हूँ दृष्टा, मन वाणी का मैं हूँ दृष्टा
मैं हूँ साक्षी स्वरूप, कोई–कोई...

जन्म मरण मेरा धर्म नहीं है, पाप पुण्य मेरा कर्म नहीं है
मैं हूँ निज निर्लेप अरूप, कोई–कोई...

तीन लोक का मैं हूँ स्वामी, घट–घट व्यापक अंतरयामी
ज्यों माला में सूत, कोई–कोई...

पाँच कोष से मैं हूँ न्यारा, तीन अवस्था से हूँ न्यारा
मैं हूँ अद्वैत स्वरूप, कोई–कोई...

प्रेमी तुम निज रूप पहचानो, जीव ईश में भेद न मानो
मैं हूँ ब्रह्म स्वरूप, कोई–कोई...

• • • • •

भजन - 343

मेहरबान–मेहरबान सतगुरू मेरा मेहरबान,
सकल जगत को देवे ज्ञान सतगुरू मेरा मेहरबान।
तुम सतगुरू हऊ तुम्हारा चेला,
बड़े भाग्य हुआ तुम संग मेला।
जब से मैं आया शरण तिहारी,
तब से मैंने पायी नजरें नियारी।
आया मैं सुनन–मनन को वाणी,
पाया मैंने सतगुरू पूरण ब्रह्मज्ञानी।
सतगुरू ने मेरी दृष्टि सँवारी,
सतगुरू ने मेरी हो मेरी हो मैं मारी।
दुःख नाठे सुख सहज समाए,
आनंद भया तुद शरणी आए।
काम–क्रोध लोभ मोह मन हर लीना,
बंधन काट मुकत गुरू कीना।
भूले मारग जिस जिन बतलाया,
ऐसा गुरू बड़भागी दोऊ पाया।
मान–अपमान दोनों सम कर जाने,
तन मन मेरा सतगुरू हवाले।
सतगुरू मेरा बड़ समरथ्या,
शांत भई मेरा दुःख रोग लथ्या।

• • • • •

भजन - 344

मेरी जिन्दगी में क्या था तेरी कृपा से पहले...
मैं बुझा हुआ दीया था तेरी कृपा से पहले...
मेरी जिन्दगी में...

मैं था खाक एक जर्रा और क्या थी मेरी हस्ती
यूँ थपेड़े खा रहा था तूफां में जैसे कश्ती
दर बदर भटक रहा था तेरी कृपा से पहले...

मैं था इस तरह जहां में जैसे खाली सीप होती
मेरी बढ़ गई है कीमत तूने भर दिए हैं मोती
मुझे कौन पूछता था तेरी कृपा से पहले...

यू तो है जहां में लाखों तेरे जैसा कौन होगा
तेरे जैसा बंदापरवर भला ऐसा कौन होगा
मेरा कौन आसरा था तेरी कृपा से पहले...

तू जो मेहरबान हुआ तो ये जहान मेहरबान है
ये जमीन मेहरबान है, आसमां मेहरबान है
मैं खुदा तलक जुदा था तेरी कृपा से पहले...

तेरी रहमतें बड़ी हैं तू भी सतगुरू बड़ा है
तेरी रहमतों को ठाकुर कौन दास गा सका है
न ये गीत न गला था तेरी कृपा से पहले
मेरी जिन्दगी में क्या था...

• • • • •

भजन - 345

मैं नहीं मेरा नहीं, ये तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है, वो धन किसी का है दिया।।

देने वाले ने दे दिया है, वो भी दिया किस शान से,
है ये मेरा लेने वाला कह उठा अभिमान से।
मैं और मेरा कहने वाला, ये मन किसी का है दिया।।

जो मिला है, वो हमेशा पास रह सकता नहीं,
कब बिछड़ जाये कोई राज कह सकता नहीं।
जिंदगानी का खिला मधुबन किसी का है दिया।।

जग की सेवा प्यारे, प्रीत प्रभु से कीजिए,
जिंदगी का राज है यह जान कर जी लीजिए।
साधना के मार्ग में साधन गुरू का है दिया।।

लेने वाले ने ले ही लेना है, सो अब जल्दी कीजिए,
इस घड़ी के आने से पहले ही सब कर लीजिए।
मोह और अहंकार दोनों ये तो मन का है दिया।।

• • • • •

भजन - 346

मैं तो उन सन्तों का दास, जिन्होंने मन मार लिया
मन मारा तन वश किया, सभी भरम हुए दूर
बाहर से कुछ सूझत नाहीं, अन्दर बरसे नूर

आपा मार जगत में बैठे नहीं किसी से काम
इनमें कोई अन्तर नाहीं, सन्त कहो चाहे राम

नरसी दीजे सतगुरू स्वामी, पिया अमीरस प्याला
एक बूंद सागर से मिल गई, क्या करेगा यमराज

प्याला पी लिया नाम का, छोड़ जगत का मोह
मुझको सतगुरू ऐसे मिल गए सहज मुक्ति गई होए

• • • • •

भजन - 347

मैं छुप छुप प्यार करूँ सतगुरू प्यारे से, जग रखवारे से।

जिस जिस ने भी प्यार किया
श्रद्धा से मालामाल हुआ
अब जीवन है बदला, सतगुरू प्यारे से, जग रखवारे से।
था मोह माया में अटका
सतगुरू ने लगाया झटका
अब जीना है सीखा, सतगुरू प्यारे से, जग रखवारे से।
जिन निश्चय है मर जानिया
हर घट में ब्रह्म पहिचानिया
नव जीवन है पाया, सतगुरू प्यारे से जग रखवारे से।
जब प्रीत गुरू संग, लागी
माया की उलझन भागी
अब आनन्द है छाया, सतगुरू प्यारे से जग रखवारे से।
जब वाणी से प्रीत है बढ़ी
तन मन की सुधा बिसरी
अब अपना आप दिखा, सतगुरू प्यारे से जग रखवारे से।
मैं छुप छुप...

• • • • •

भजन - 348

मैं हूँ आनन्द का ही स्वरूप, मैं हूँ घट–घट स्वरूप।

निराकार से साकार होकर अपना खेल रचाया।
सब घट भीतर मेरी ज्योति, मैं ही सब में समाया।।

सूर्य चन्द्र में शक्ति है मेरी, मेरा ही नूर समाया।
धरती गगन में मस्ती है मेरी, सब घट मैं ही समाया।।

फूल में जैसी सुगंध समाई, मेंहदी में जैसे लाली।
सर्व व्यापक आत्मा मैं हूँ, मैं हूँ घट–घटवासी।।

नानक भी मैं हूँ, गौतम भी मैं हूँ, मैं हूँ श्याम मुरारी।
राजा भी मैं हूँ, रंक भी मैं हूँ, मैं हूँ पुरूष और नारी।।

क्राइस्ट बनकर छलनी हुआ मैं, सूली की सेज सजाई।
मुहम्मद और मनसूर बनकर, अनलहक की धुनी लगाई।।

राम भी मैं हूँ, रहीम भी मैं हूँ, मैं हूँ लीलाधारी।
बेगमपुर में रहन हमारी, मैं हूँ प्रेम पुजारी।।

मेरी लीला सबसे न्यारी, मेरा भेद न जाने कोई।
सतगुरू शरण में जो भी आये, मेरा भेद है जाने सोई।।

धन्य हैं मेरे सतगुरू, जिसने आत्म राह दिखायी।
राज रूहानी सबको बताके, सत्य की ज्योति जगायी।।

• • • • •

भजन - 349

मैं सदके वारी सतगुरू तों मैंनू सामने मंजिल दसदी ऐ
नहीं चिंता गमी, कोई दुःख उसमें,
ऐसी प्यारी हकीकत दसदी ए।

जब प्रभु की कृपा अपार हुई
तब पूरे सतगुरू मिलते हैं
वो ही ज्ञान अमृत बरसाते हैं
मुरझाई कली खिल जाती है

श्रद्धा विश्वास की भेंट चढ़ी
सतगुरू चरणों में रखते हैं
वही भव से पार उतरते हैं
सुख शान्ति उसको मिलती है

मेरे सतगुरू ज्ञान की ज्योति ने
हृदय में ज्ञान प्रकाश किया
जो पाना था सो पा ही लिया
पूरी हुई दिल की आशा है

• • • • •

भजन - 350

मैंने ऐसा सतगुरू पाया,
मेरा रोम–रोम खिल आया।

ऐसी ज्ञान की ज्योति जगायी
अज्ञानता की उतरी काई
हरि नाम मोहे भाया, मेरा...

मोह माया के बंधन छूटे
मेरी तेरी के भरम भी टूटे
मैंने सबमें प्रभु को पाया, मेरा...

ऐसी लगन है लागी मोहे
जहाँ मैं देखूँ तू ही तू है
मोहे और कछु ना भाया, मेरा...

नैया छोड़ी आप हवाले
आप सँभाले या न सँभाले
मैंने छुटकारा पाया, मेरा...

• • • • •

भजन - 351

मैंनू गुरां दे द्वारे तो हटाए कोई ना...२
सच्चे गुरू द्वारे तो हटाये कोई ना।

बड़े जन्मां दे बाद सच्चा गुरू मिलिया
ऐद बिना आवागमन छुडाए कोई ना...

बड़ा पक्का ऐ मैंनू रंगरेज मिल्या
ऐ दे रंग विच होर रंग आये कोई ना...

मेरी प्रीत है निराली मेरा प्रीतम है निराला
मेरे प्रीतम दी प्रीत विच आये कोई ना...

निराकार साकार धन आया जग में
ऐ दे बिना ज्ञान दा अमृत पिलाये कोई ना।

• • • • •

भजन - 352

मानुष जन्म अमोल माटी में न रोल–२
प्यारे माटी में न रोल
मान न मान तू है भगवान दादा के ये बोल–२
वेदों से ऊपर प्रभु की मुरली बजे
मन का मोर मुरली सुन सुन नचे
सतगुरू बोल–२
मौत है गहरी समाधि से बचा न कोय
जीते जी जो मर गया फिर उसकी मुक्ति होय
मुक्ति होय–२
न मथुरा में देखा न काबा काशी में
मेरा सुन्दर श्याम सलोना घट–घट वासी रे
हरि ओम्–२
सुख–दुख सब मुझे एक सा लगे
स्वयं हूँ मैं दृष्टा मेरा मन क्यों चले
मन मोड़–२
ज्ञान से इन्द्रियों को अन्दर तू मोड़
सतगुरू की चुनरिया सिर पे ली ओढ़
सतगुरू बोल–२
कबीरा ऐसे व्रत लिया ले सके न कोय
घड़ी एक विसरूँ राम को तो ब्रह्महत्या होय
हरि बोल–२

• • • • •

भजन - 353

मुझे गरज न और सहारों की, इक तेरा सहारा काफी है
मंझधार में डूबने वालों को, इक तेरा किनारा काफी है।

बन–बन के सहारे टूटते हैं, ये रसम पुरानी है जग की
जो टूटे कभी और छूटे ना, वो तेरा सहारा काफी है...

नजरों को धोखा देते हैं, दुनिया के झूठे नजारे
जो कायम हमेशा रहता है, वो तेरा नजारा काफी है

जहाँ रिश्वत और सिफारिश से, काम नहीं बन सकता है
मेरी बिगड़ी बन जाने में, इक तेरा इशारा काफी है

'हँसराज' पपीहे को मतलब क्या, नदियों और तालाबों से
स्वाती के बरसे बादल से, केवल इक धारा काफी है।

• • • • •

भजन - 354

मानव सोचो जग के सुख का
आधार रहेगा कितने दिन
सत्कार रहेगा कितने दिन
ये प्यार रहेगा कितने दिन।

कोई आता कोई जाता
सबसे थोड़े दिन का नाता
जिसका भी आश्रय लेते हो
वो आधार रहेगा कितने दिन। सत्कार...

चाहे पितु हो चाहे माता हो
पत्नी, सुत हो या भ्राता हो
जिसको भी अपना कहते हो
अधिकार रहेगा कितने दिन। सत्कार...

जग में जितने भी ज्ञानी हैं
परमारथ तत्व के ज्ञानी हैं
उनसे पूछो मन का मारा
संसार रहेगा कितने दिन। सत्कार...

तुम प्रीत करो अविनाशी
मिल जाओ उस उर वासी से
ऐ पथिक यहाँ मैं मेरे का
व्यापार रहेगा कितने दिन। सत्कार...

• • • • •

भजन - 355

मुझे मेरे जीने की चाहत न होती
अगर तुम न मिलते

तुझे क्या बताऊँ कि तुम मेरे क्या हो
मेरी जिन्दगी का तुम्ही आसरा हो
तूने हमारा जीवन बनाया

भटक रहे थे अज्ञान के अन्धेर में
तूने ज्ञान का दीपक जलाया
जीने की राह तूने दिखायी

फंसे थे हम तो फर्ज और धर्म में
तूने आके स्वधर्म सिखाया
जीने की तूने चाहत जगायी

मुझे मेरे जीने की चाहत न होती
अगर तुम न मिलते

• • • •

भजन - 356

मुझे मेरी मस्ती कहाँ लेके आई
जहाँ मेरे अपने सिवा कुछ नहीं है
लगा अब पता मुझको हस्ती का मेरे
सिवा मेरे अपने, नहीं कुछ नहीं है

सभी में सभी से परे मैं ही मैं हूँ
सिवाय मेरे अपने कहीं कुछ नहीं है
न दुःख है न सुख है, नहीं शोक कुछ भी
अजब है ये मस्ती, पीया कुछ नहीं है

ये सागर ये लहरें, ये झाग ये बुदबुदे
कल्पित हैं, जल के सिवाय कुछ नहीं है
अरे मैं हूँ आनन्द, ये आनन्छ है मेरा
है मस्ती ही मस्ती, पीया कुछ नहीं है

भरम ये द्वंद का जो मुझको हुआ था
मिटाया जो इसको कहीं कुछ नहीं है
ये पर्दा दुई का हटाके जो देखा
सभी एक मैं हूँ, जुदा कुछ नहीं है।

• • • • •

भजन - 357

मुझे है काम ईश्वर से जगत रूठे तो रूठन दे

कुटुम्ब परिवार सुतधारा–माल धन लाज लोकन की
हरि के भजन करने में–अगर छूटे तो छूटन दे...

बैठूँ संगत में संतन की–करूँ कल्याण मैं अपना
लोक दुनिया के भोजन में मौज लूटे तो लूटन दे...

प्रभु का ध्यान करे की–लगी दिल में लगन मेरी
प्रीत संसार विषयों की अगर छूटे तो छूटने दे...

धरे सिर पाप की मटकी मेरे गुरूदेव ने झटकी
वो ब्रह्मानंद ने पटकी–अगर फूटे तो फूटने दे...

• • • • •

भजन - 358

मुझको खजाना नाम का है आज मिल गया
मैं झूमती हूँ मौज में सरताज मिल गया

सतगुरू की शरण आए जो सो सौभाग्यवान हो–२
उनकी इक नजर से सारा अंधियारा दूर हो–२
वो देता भेद का दिलदार मिल गया

मालिक की ये सब मौज है
जिन प्यारा सतगुरू दे दिया–२
मुझ जैसे कर्महीन को जिन अपना कर लिया–२
जीवन की नैया का मुझे अब मांझी मिल गया–२

मैं कैसे गुरू के प्रेम की अब महिमा गा सकूँ–२
शक्ति है नहीं जुबां को उनके हर गुण गा सकूँ–२
कुल मालिक मुझे ज्ञान का भंडार मिल गया–२

• • • • •

भजन - 359

मेरे सद्गुरू तू पीरों का पीर है
जो भी आएं तेरी शरण उसकी बदली तकदीर है

भूले भटके जीवों को सद्पथ पे चलाने आये हैं
नाम जहाज बना के भव से पार लगाने आए हैं
नाम तेरा भव रोगों की अक्सीर है।

तेरे दर पे सद्गुरू जी प्रेम भक्ति का दान मिले
जनम–मरण का छूटे चक्कर मुक्ति का वरदान मिले
मोह माया की कट जाती जंजीर है।

तेरी संगत में सद्गुरू जी जो भी प्रेमी आता है
हँसा बना वचनों के मोती चुन–चुनकर खाता है
तेरी संगत की अजब आशीष है।

सारे जग की आश छोड़कर आश रहे तेरी मन में
हृदय ध्यान हो तेरा केवल, प्रीत रहे तेरे वचनों में
दिल में हरदम तेरी ही तसवीर है।

• • • • •

भजन - 360

मेरे सतगुरू प्यारे ने मेरा जन्म मरण दुख दूर किया
मेरे सतगुरू प्यारे ने मेरा आना जाना मिटा दिया
मेरे सतगुरू प्यारे ने मेरा जनम मरण दुःख दूर किया

तीन गुण माया से उपजे माया का विस्तारा
तू क्यों उसमें उलझ रहा है तेरा रूप अपारा
बांह पकड़ उबार लिया मोहे भव सिंधु से पार किया
मेरे सतगुर प्यारे ने...

श्रवण मनन से जागा मनवा सुरत शब्द में समाई
प्रेम सहित निदिध्यासन कर मन, परम धाम को पाया
मेरे सतगुरू प्यारे ने मेरा आना जाना मिटा दिया
मेरे सतगुर प्यारे ने...

बीज के अन्दर तरवर शाखा पुष्प पत्र फल पाया
आतम में ही है परमात्म जीव ब्रह्म और माया
मेरे सतगुरू प्यारे ने मेरे संसों को कोट दूर किया
मेरे सतगुर प्यारे ने...

चार वेद नित वचनी उचरे तांका मरम न पाया
मेरे सतगुरु प्यारे ने मोहे आत्म के संग जोड़ दिया
मेरे सतगुर प्यारे ने...
मैं नाहीं [illegible], सकल चाला चलावे
ना कोई मेरा रहा है दुश्मन ना हम किसके बैरी
ब्रह्म पसारा पसर रहा भीतर सतगुर से सूझी पायी
मुझे आतम का रस पिला दिया
मेरे सतगुर प्यारे ने...

मन वाणी बुद्धि नहीं जानत वेद कहत सकुचाए
राम रमैया परम पुरूष है घट माहीं दर्शाया
ज्ञान अंजन डाल दिया भेद भरम सारा मिटा दिया
मेरे सतगुर प्यारे ने...

• • • • •

भजन - 361

मेरे सतगुर प्यारे की महिमा इस मुख से गा न सकूँ।

इस दर पे जो आ जाये, वो कभी खाली न जाये।
ज्ञान धन के भरे भंडारे, झोली भरले जाये प्यारे...।।

यहाँ अमृत रस के भरे हैं प्याले जो आये जी जाये।
तन मन की सुध–बुध खो जाये,
आनन्द–आनन्द पाये प्यारे...।।

गुरू वचनों में प्रेम निराला, मन भया मतवाला।
अब इस दर को छोड़ न पायें,
खुदी को मार मिटायें प्यारे...।।

तेरा दामन पकड़ा हमने, तुझे कभी न छोड़े।
रिश्ते नाते छोड़ हमने, गुरू वचनों के दीवाने प्यारे...।।

सारा जीवन राग द्वेष में, हमने यों ही गँवाया।
तेरे दर पर आकर सतगुरू, आतम आनन्द पाया प्यारे...।।

• • • • •

भजन - 362

मोकूं कहाँ ढूँढे रे बन्दे
मैं तो तेरे पास में।

ना तीरथ में, ना मूरत में,
ना एकांत निवास निवास में
ना मन्दिर में, ना मस्जिद में
ना काबे कैलाश में।

ना मैं जप में, ना मैं तप में
ना मैं व्रत उपवास में
ना मैं क्रिया करम में रहता
नहीं योग सन्यास में।

मोकूं कहाँ ढूँढे रे बन्दे
मैं तो तेरे पास में।

• • • • •

भजन - 363

मैं दुनिया के तापों से बच गयो रे
आनंद भयो रामा आनंद भयो रे
ये कैसा जादू चढ़ गयो रे

प्रेम तेरे में मैं बांवरी हो गई
दिल का दर्द मेरा जाने न कोई
नशो ये निरालो चढ़ गयो रे–आनन्द...

लाख रोके मुझे दुनिया वाले,
नैया मेरी अब तेरे हवाले
मैं तेरे ही रंग में रंग गयो रे, आनन्द...

तेरे सिवाय मुझे कुछ ना भावे,
देखूँ जिधर भी नजर तू ही आवे
ओ प्रेम की बदरी बरस गयो रे, आनन्द...

मेरे तो प्रभु गिरिधर नागर,
भर गई अब मेरी खाली गागर
मैं जीते जी जग से तर गयो रे, आनन्द...

• • • • •

भजन - 364

मैं देखूँ जिस ओर प्रभुजी, सामने मेरे तूँ ही तो है
कैसा भी तूँ रूप धरे पर, ज्ञान से जाना हूँ ही तो है।

ज्ञान ने ऐसी ज्योति जलाई
आशा तृष्णा गई मिटी जुदाई
दुख हो चाहे सुख हो भगवान
सामने मेरे तूँ–ही तो है मैं देखूँ....

ज्ञान ने मन में ऐसी धूनी रमाई
नाम, रूप की उतरी काई
काई जो उतरी मन निर्मल हुआ
अब वो मन प्रभु तूँ ही तो है–मैं देखूँ...

गुरू वचनों को जो अपनाया
सतगुरू ने मुझे अपना बनाया
अपना बना के सब भेद मिटाया
बोले जो मैं हूँ सो तूँ ही तो है–मैं देखँ...

सतगुरू ने ऐसा विवेक जगाया
मैं मेरे का सब भेद मिटाया
जो मैं चाहूँ जगत को देखूँ
जगत में दिखता तूँ ही तो है–मैं देखूँ...

• • • • •

भजन - 365

मिल के खुशी मनायें हम ये दिन खुशियों वाला आया
झूमे नाचे गाये हम ये दिन खुशियों वाला आया

झूम रहा है गगन खुशी से नाच रही है धरती
बांध के घुंघरू घर में आई खुशियां झम-झम करती
कि फूले नहीं समाये हम ये दिन ...

सदके जाऊँ इस दादा के जिसने खुशी दिखाई
पूरी हो गई चाह सभी की मन की मुरादें पाई
लख-लख शुकर मनायें हम ये ...

बिन पंखों के उड़ते जाये पड़े न पैर जमीं पर
अपने जैसा भागो वाला होगा कौन जमीं पर
कैसे इसे छिपायें हम ये दिन ...

आठ पहर दस्तक देती है खुशियां जिसके दर पर
तीन लोक के इस साहिब का हाथ है मेरे सिर पर
मिलके नाचे गाये हम ये दिन ...

चौरासी में गूंज रही है खुशियों की शहनाई
गुरूमुखों को गुरूमुख देने आये आज बधाई
सच्ची बात बतायें हम ये ...

• • • • •

भजन - 366

मेला प्रेम का लगता रहे बार-२
गुरू तेरे सचखण्ड में
आते रहे प्रेमी पाते रहे प्रेमी, पाना ही है उनको गुरूवचनों का प्रसाद

समर्पण कर ले ये फिर न मिलेंगे कल
प्रेम में बिता ले जीवन के ये पल
एक बार चला गया जो ये समय
सत्गुरू जीवन में मिलते हैं एक बार
सौदा क्यों न करें आते रहें ...

जीवन में भर ले तू सात सुरों के रंग
धीरज, नम्रता, सेवा, प्रेम, समर्पण, संग
दीर्घकाल के अभ्यास से ही हो पाता है कोई देह से असंग
ज्ञान भक्ति से ही हो जाये बेड़ा पार
ये बात कोई न समझे

जीवन पिरोया जिसने प्रेम की मणियों से
किसी और माला की जरूरत नहीं उसे
एक बार फना हो जा सतगुरू प्रेम में
लौट के न आयेगा आवागमन में
जन्म मरण में आना नहीं बार-२
ये निश्चय क्यूं न करे आते रहे ...

• • • • •

भजन - 367

मिल जुल के प्यार से रहना–रहना
गुरू जी का यही कहना
सदा झरनों के जैसे ही बहना–बहना
गुरू जी का यही कहना

मीठा–मीठा सबसे बोलना प्रेम रस अपने में घोलना
कटु वचनों को तुम भूल जाना ...

सहनशीलता और सदभावना भर दो हममें प्रभु ये कामना
नम्रता का हम पहने गहना ...

मन की डोर को प्रभु से जोड़ लो
मोह माया से मन को मोड़ लो
माया ने तो सदा नहीं रहना

.....

य

भजन - 368

ये जो कण–कण में राम बसाता है, मेरा सतगुरू इसे दिखाता है
आत्मा ही जो बिछुड़ी जन्मों से, उसको परमात्मा मिलाता है।

ये हकी... है इस हकीकत पर, जिसको भी एतबार आता है
इक घड़ी में वो झूम जाता है, खुदा का दीदार करता है
इसकी एक रहम नजर करती है ऐसा असर
पासा किस्मत का पलट जाता है...

बंदगी यों तो सभी करते हैं, कोई मंदिर में कोई मस्जिद में
हर जगह देखकर मगर जलवा बंदगी हो रही है इस घर में
तू मेहरबान हुआ हमको ये ज्ञान हुआ
हर–तरफ तू ही तू नजर आता है...

क्यों भटकते हो भटकाने वालों, आओ भगवन आवाज देते हैं।
ढूँढते–ढूँढते ही जो खुद हारे, उसको रहमत वो राज देती है।
बात सच्ची है सुनो, यूँ न दीवाने बनो।
तुम समझो जो ये समझाता है...

देखना चाहते अगर उसको, तुम मुहब्बत व चाह से देखो
पालो हीरा है या कि पत्थर है, तुम दादा की निगाह से देखो।
करलो बनवारी कदर, ये है अनमोल अवसर
वक्त देखो तुम्हें बुलाता है...

.....

भजन - 369

ये गर्व भरा मस्तक मेरा, हरि चरा धूल तक झुकने दो,
अहंकार विकार भरे मन को, निज नाम की माला जपने दो।

मैं मन की मैल को धो न सका,
और जीवन तेरा हो न सका।
मैं प्रेम में इतना खो न सका,
गिर भी जो पड़ूँ तो उठने दो।

मैं अज्ञान की बातों में खोया,
और करम हीन बनकर सोया।
जब आँख खुली तो मैं रोया,
जग सोये और मुझको जगने दो।

कैसा भी हूँ मैं खोटा या खरा,
फिर तो शरण में आ ही गया।
एक बार तो कह दो खाली जा
या प्रीत की रीत झलकने दो।

• • • • •

भजन - 370

यह मति कहाँ से पाई रे साधो,
बन्ध मोक्ष की कल्पना मिटाई रे साधो

द्रष्टा, दर्शन दृश्य त्रिपुटी से न्यारा हूँ।
सब कुछ मैं ही, मैं करने हारा हूँ।
गुरू ने यह मति बतलाई रे साधो।
यह मति...

गुरू की संगत प्यारे अजब निराली है
वो ही संगत कर सी जिसने अहंता मारी है
अलख निरंजन आप अविनाशी रे साधो
यह मति...

मैं हूँ आत्म ब्रह्म बताया गुरू ने।
वेदां विचों सार, पिलाया गुरू ने।
पीके मैं होई हाँ निहाल रे साधो।
यह मति कहाँ से पाई रे साधो।...

• • • • •

भजन - 371

ये सत्संग वाला प्याला कोई पीयेगा किस्मत वाला।
ये मीठा प्रेम पियाला कोई पीयेगा किस्मत वाला।।

प्रेम गुरू है प्रेम ही चेला, प्रेम धरम है प्रेम ही मेला।
प्रेम की फेरो माला कोई फेरेगा किस्मत वाला।

प्रेम बिन प्रभु–नहीं मिलता, मन का कष्ट कभी नहीं टलता
प्रेम करे उजियारा कोई करेगा...

प्रेम का गहना प्रेमी पाये, जनम मरण का दुःख मिटाये
काटे करम जंजाला, कोई काटेगा...

प्रेम ही सब कष्ट मिटावे, लाखों से दुराचार छुड़ावे
प्रेम करे मतवाला कोई करेगा...

• • • • •

भजन - 372

ये भेद सनम मुझे आज मिला,
तू और नहीं मैं और नहीं।

जब दिल में तेरी झलक पड़ी,
जो बहम मुझे हुआ था वो दूर हुआ।
अब तू ही तू है दिल में बसा तू...

कलियों को सुना के गुल ने कहा,
मैं तुझ में ही था पहले से छुपा।
तू न मुझ से जुदा, मैं न तुझ से जुदा...

दरिया के जोश से मौज उठी
वो उलट के सागर से कहने लगी
मैं तुझ से हुई और तुझ में फना,

मैं कस्तूरी तू खुशबू उसमें,
मैं शीशा हूँ तू रूह उसमें,
मैं तन हूँ तू जलवा नुमा उसमें...

था दिल में जो पर्दा गफलत का,
वो झोंक इश्क से दूर हुआ।
फिर राम सनम से यूँ कहने लगा...

• • • • •

भजन - 373

ये जग अदला बदली है, दुनिया कदली का बन है।

दिवस भी बदला मास भी बदला
आस भी बदला के स्वांस भी बदला
इक साक्षी ना बदला है–२

जन्म भी बदला गमन भी बदला
श्रवण भी बदला मनन भी बदला
इक चेतन ना बदला है–२

जाप भी बदला ताप भी बदला
पाप भी बदला पुण्य भी बदला
इक सोऽहम ना बदला है–२

हार भी बदला जीत भी बदला
वैरी भी बदला मीत भी बदला
इक जाननहार ना बदला है–२

ध्यान भी बदल तो सुर्ति भी बदली
मोह भी बदला वृत्ति भी बदली
आत्म आनन्द ना बदला है।

• • • • •

भजन - 374

ये तन मन जीवन सुलग उठे, कोई ऐसी आग लगा देरे
दिन दूना हो विरह वेदना, पल भर चैन न पाए रे

ऐसी लौं हरि नाम की लागी रे, रह न जाए मेरा नाम
मन वाणी से प्रभु पुकारूँ, तन से हो हरि भक्ति का काम
हरि का हो सो रह जाय और मेरा सब जल जाय रे,...

मुझे पर्वत बनना पसंद नहीं, अभिमान मान हर लो मेरा
मैं प्रेम नगर का वासी हूँ, गुण ज्ञान ध्यान हर लो मेरा
धरती के आँचल पर मेरी, राख बिखेरी जाय रे,...

जीवन की इस कठिन डगर पे तुझे पुकारूँ दीनानाथ
दीनानाथ दीनानाथ मेरे दीनानाथ, मेरे दीनानाथ
बड़े कठिन साधन से पाया अब न छोड़ूँ तेरा हाथ
चाहे दुनिया दो रंगी है, निर्दोष पे दोष लगाए रे,...

जीवन पथ पर थका है राही, मार्ग चला नहीं जाता
एक तरफ जग एक तरफ प्रभु मुझसे चुना नहीं जाता
हाथ पकड़ कोई मुझ अंधे को, प्रभु की ओर झुकाए रे,...

• • • • •

भजन - 375

ये दिल है अमानत सतगुरू दी
दर दर पे रूलाया नहीं जान्दा
असीं कीते कौल निभावांगे,
असीं चीर के नदियां आवांगे
असीं अपना पीर मनावांगे
साथों जगत मनाया नहीं जांदा
असीं दुनिया कोलों बेगाने होये,
असीं सोहणी शमा दे परवाने होये
असीं सतगुरू चरणां दे दीवाने होये,
साथों कदम हटाया नहीं जान्दा
सानूं दुनिया कोलों डर केड़ा,
साडा सतगुरू बाझों डर केड़ा
असीं गुरू चरणां विच लाया डेरा,
साथों प्रेम छिपाया नहीं जान्दा
असीं दुनिया कोलों निराश होये,
असीं गुरू वचनां दे दीवाना होये,
असीं सतगुरू बाझों उदास होये,
साथों भेद छिपाया नहीं जान्दा

• • • • •

भजन - 376

ये दर न भूले, तेरा ये दर न भूले।
दे दे चाहे सारे खजाने पर तू तू भूले।

तेरा दर्शन सतगुरू सारे जग से मीठा लागे।
हमने बाँध लिए हैं, इन चरणें में प्रीत के धागे।
हम बच्चे हैं, तू भगवान है, साथ न छूटे।

जब अमृत वचनों का ये सावन बरसाता है तू।
युग-युग के प्यासों की जैसी प्यास मिटाता है तू।
मन की प्यासी नदियों का ये सागर न भूले।

हर कोई ना समझे प्रीत गुरू की होती क्या है।
जिस पे मेहर तू कर दे बस उतने ही ये समझा है।
हम पे लुटाई मेहर जो तूने पल भर ना भूले।

• • • • •

भजन - 377

ये भेद क्या है, अजब अनोखा,
कि राम मुझमें, मैं राम में हूँ।
बगैर सूरत अजब है जलवा,
कि राम मुझमें, मैं राम में हूँ।

मुस्कराए हुसनो इश्क हूँ मैं,
मुझी में नाजो न्याज सब है।
हूँ अपनी सूरत पे आप शैदा, कि राम...

जमाना आईना राम का है,
हर एक सूरत से है वो पैदा।
जो चश्मे हक भी खुली तो देखा, कि राम...

वो मुझसे हर रंग में मिला है,
कि गुल से बू भी कभी जुदा है।
हुबाबो दरयाह का है तमाशा, कि राम...

सबब बताऊँ मैं वजद का क्या,
है क्या जो दर पर्दा देखता हूँ।
सदा वो हर साज है पैदा, कि राम...
बसा है दिल में तेरे वो दिलबर,
है आईना में खुद आईना गर।
अजब तहयुर हुआ ये कैसा, कि राम...

मुकाम पूछो तो ला मकाँ था,
न राम ही था न मैं वहाँ था।
लिया जो करवट तो होश आया, कि राम...

जहाज दरिया में और दरिया जहाज में,
भी तो देखिए आज।
ये जिस्म कश्ती है राम दरिया, कि राम...

• • • • •

भजन - 378

ये जग दीवानों की बस्ती, देखा सोच विचार,
देखा पागल सब संसार।

कोई देखा धन का पागल, पूजा करता धन की।
धन कारण सब चैन गँवाया, शान्ति तज दी मन की।
लाख-लाख माया जोड़ी, और जोड़-जोड़ गया हार।

कोई देखा रूप का पागल, यौवन का मतवाला।
पल-पल जाए बीत जवानी, जीवन है ढल जाना।
जिस यौवन का मान करे, उस यौवन के दिन चार।

कोई देखा सुख का पागल, सुख-दुख करता जाए।
हरि भजन बिन सुख नहीं पाए, माँगे हाथ न आए।
जो सुख आए फिर न जाए, उसका करो विचार।

हरि भगत भी पागल देखे, गोविन्द के मतवाले।
पिये पिलाएँ प्रेम का प्याला, बैठे जगत विसारे।
मैं माँगू वो ही पागलपन, उतरे नहीं खुमार।

• • • • •

भजन - 379

ये मोहब्बत की बातें है ऊधो,
बंदगी मेरे वश की नहीं है,
यहाँ सिर दे के होते हैं सौदे,
आशिकी इतनी सस्ती नहीं है।

इश्क वालों ने कब वक्त देखा,
तेरी पूजा में पाबन्दियाँ हैं,
यहाँ दम-दम पे होती है पूजा,
सिर उठाने की फुरसत नहीं है।

आज जो दिल से जो मस्ती में डूबे,
होश कब हैं उन्हें जिंदगी में,
जो चढ़ती उतरती है मस्ती,
वो हकीकत में मस्ती नहीं है।

यहाँ जाम बंदे रोज पीना,
मस्तों का यहीं है कहना,
प्यार से जो एक बार पीले,
वो उमर भर उतरती नहीं है।

वो नजर क्या जमाने को देखे
जिसकी नजरों में मालिक समाया
जो नजर देख लेती है तुमको
वो नजर फिर तरसती नहीं है।

• • • • •

भजन - 380

ये महफिल प्रेमियों की है यहां बस दीवाने आते हैं
शमा रोशन जहां होती वहीं परवाने आते हैं

जगत में रहने वालों की गली में हम थे जा भटके
गमी की गांठ जब पड़ती उसे खुलवाने आते हैं

ये दुनिया दीन जन को चैन से सोने नहीं देती
यहाँ दुनिया भर के ठुकराये यहाँ अपनाये जाते हैं

रोशनी ही रही लेकिन दिखायी क्यों नहीं पड़ती
अहम् की है बंधी पट्टी उसे खुलवाने आते हैं

राह को मानना मंजिल कहां की बुद्धिमानी है
यही सन्देश है करुणेश का बतलाने आते हैं

अरे जो आत्मघाती है प्रेम की बात क्यों करते
स्वयं पर है कृपा जिनकी वही कुछ पाने आते हैं।

•••••

भजन - 381

यूं ही तो बीती जाये सारी रे उमरिया
कछु सोच विचार सतगुरू आते बार-२ नहीं जीवन में ...

सतगुरू मेरे भाग्य बदल गये
जब से मिला तेरा संग हो ऽ ऽ ऽ
छूट सके न कभी ये ऐसा
तूने चढ़ा दिया रंग हो ऽ ऽ ऽ
अच्छा किया तूने अपना बनाया
रह गई मैं तो दंग रे ... कुछ ...

जिनको तूने अपना समझा सब थे धोखेबाज वो
अब किसको तूं प्यार करेगा,
किससे हो नाराज हो ऽ ऽ ऽ
तुमको तेरी ममता ने लूटा,
कर दिया मोहताज हो ऽ ऽ ऽ
तेरा सब कुछ लुट गया बीच बजरिया ... कुछ

झूठी है सब दुनियादारी,
सब माया के खेल हो ऽ ऽ ऽ
खेल नहीं तेरा कोई जहां में तू सबसे बेमेल हो ऽ ऽ ऽ

ना कुछ लेना ना कुछ देना,
अब तेरी छूटी रेल हो ऽ ऽ ऽ
काहे को कर्मों की बांधी रे गठरिया... कुछ...

जिसने सच्चा सतगुरू पाया,
वो ही है धनवान हो ऽ ऽ ऽ
सच्चा सतगुरू कर देता है,
सबको आप समान हो ऽ ऽ ऽ
महिमा तेरी कहां तक गाऊँ,
तूं पूरण भगवान हो ऽ ऽ ऽ
सबसे तो ऊँची सतगुरू की अटरिया ...

• • • • •

भजन - 382

ये तन मन जीवन सुलग उठे, कोई ऐसी आग लगा दे।
दिन दूना विरह वेदना, पल भर चैन न आए रे।
ऐसी लौ हरि नाम की लागे, रह न जाए मेरा नाम।
मन वाणी से प्रभु पुकारूँ, तन से हो हरि भक्त का काम।
प्रभु का हो सो रह जाए, और मेरा सब जल जाए रे।

मुझे पर्वत बनना पसन्द नहीं, अपमान मान हर लो मेरा।
धरती की आंचल पर मेरी, राख बिखेरी जाय रे।
मैं प्रेम नगर का वासी हूँ, गुरू ज्ञान ध्यान हर लो मेरा।
जीवन पथ पर थका है राही, मार्ग चला नहीं जाता।
एक तरफ जग एक तरफ प्रभु, मुझसे चुना नहीं जाता।
हाथ पकड़ कोई मुझ अंधे को, प्रभु की ओर झुकाए रे।

जीवन के इस कठिन डगर में, तुझे पुकारूँ दीनानाथ–२
दीनानाथ–दीनानाथ मेरे दीनानाथ।
बड़े कठिन साधन से पाया, अब न छोड़ूँ तेरा हाथ।
चाहे दुनिया दो रंगी है, निर्दोष को दोष लगाये रे।

• • • • •

भजन - 383

यहाँ करने उद्धार भगवान आए हैं
हमें तारने को करूणा निधान आए हैं

सच्चा सौदा बेचते हैं लेने वाला कौन है
साथ अपने ये ज्ञान की दुकान लाए हैं

है व्यापार ये निराला सदा लाभ है मिलता
भरपूर प्रेम प्यार का सामान लाए हैं

बदले में किसी से भी कुछ नहीं माँगते
सदा बाँटते हैं ज्ञान की ये खान लाए हैं

ऐसी मुरली बजाई मन मस्त हो गया
बजे प्रेम का संगीत ऐसी तान लाए हैं

कैसे रहना खाना–पीना कैसे जीना चाहिए
सदा जागते रहो ये फरमान लाए हैं

यहाँ दुःखों का गमों का कोई काम ही नहीं
ऐसी होठों पे मधुर मुस्कान लाए हैं

तन मन सर्वस्व जो लुटाऐंगे यहाँ
वो ही पूरा भगवान पहचान पाए हैं

• • • • •

भजन - 384

ये रथ मेरा मैं राजा हूँ बड़ी शान से जीवन सैर करूँ

ये इन्द्रियाँ हैं घोड़े, गलत नहीं दौड़े
लगाम मेरी गुरू ने पकड़ी है–२
मैं मन बुद्धि का साक्षी हूँ,
बड़ी शान...

मैं राजा इस तन का, जीवन के इस चमन का
जहाँ तो सदा ही बहारे हैं–२
जहाँ जाऊँ खुशी पाऊँ
बड़ी शान...

• • • • •

भजन - 385

ये झूठे मोह के फन्दे, क्यों फंसता इसमें बन्दे
तू मान या न मान तेरा कोई नहीं

रंग रंगीले महल बनाकर, तू कहता घर मेरा
न घर तेरा न घर मेरा, चिड़िया रैन बसेरा
क्यों करता है व्यर्थ कल्पना,
कोई नहीं कि अपना ...

कितने देखे इस दुनिया में, लाखों ने ही धन जोड़ा
काल बुलावा जब आया तू रंगले-बंग ले छोड़ चला
दुनिया है इक रात का सपना, कोई नहीं ...

रिश्तेदारी सुन्दर नारी, कोई न चलेगी साथ रे
अन्त के बेले बिल्कुल खाली, होंगे तेरे हाथ रे
बात गुरू की याद रखना, कोई नहीं ...

• • • • •

र

भजन - 386

रब नहीं वसंदा दूर, अखियाँ खोल जरा
है नेड़े नहीं दूर, अखियाँ खोल जरा
ज्यूँ का त्यूँ भरपूर अखियाँ...

फूल वास जो दर्पण माँही, व्याप रहा सब घट-घट माहीं
मैं मेरी कर दूर, अखियाँ...

ज्यूँ पत्थर में आग समावे, बिन पुरूषार्थ नजर न आवे
ओ हर वेले भरपूर, अखियाँ...

मैं नू मार भगावे जेड़ा, साफ करे इस दिल का डेरा
ओ कढदे दिलों का गरूर, अखियाँ...

बिन सतगुरू मिले नहीं मार्ग, सतगुरू कह दे कोल या रब
सत्संग करो जरूर, अखियाँ...

सच्चा सतगुरू जब मिल जावे, इस घट विच निज घर दिखलाए
ओ प्रगट होवे जी नूर, अखियाँ...

बिन सत्संग न कोई पावे, सतगुरू बिन राह नजर न आवे
ऐ गल बड़ी मशहूर, अखियाँ खोल जरा

• • • • •

भजन - 387

राम नाम की नैया लेकर सतगुरू करे पुकार
आओ मेरी नैया में ले जाऊँगा भव पार

इस नइया में जो कोई चढ़ जाएगा
जन्म–जन्म का पाप सभी धुल जाएगा
कटे चौरासी के बन्धन और पड़े न जम की मार

पाप गाठरिया सीस धरी कैसे आऊँ मैं
अपने ही अवगुण से खुद शरमाऊँ मैं
नैया तेरी साँची भगवन, मेरे पाप हजार

जीवन अपना सौंप दो मेरे हाथों में
स्वास–स्वास को जोड़ दो मेरी यादों में
पाप पुण्य का बनकर आया मैं तेरा ठेकेदार

करके दया सतगुरू ने चुनरिया रंग डाली
जन्म–जन्म की मैली चादर धो डाली
दाग भरी थी मेरी चुनरिया कर दी लालों लाल

बड़े भाग्य से सतगुरू का ये ज्ञान मिला
मुझ प्रेमी को जीने का आधार मिला
लगी डूबने बीच भँवर में आ गया खेवनहार

• • • • •

भजन - 388

राम रस बरसे रे मनुवा, राम रस बरसे,
रे मन मूर्ख क्यों तरसे...

बूँद–बूँद में दया हरि की बरसे अम्बर से,
तू क्यों खड़ा उस ओट में पगले, भीगन के डर से।

काम क्रोध मद लोभ मोह का छत्र हटा सर से,
प्रेम नीर में भीग बाँवरे अन्दर बाहर से।

वृथा डोल रहा वन–वन में खोजत दर दर रे,
मन मन्दिर में राम बसत है, क्यों न चरण परसे।

राम रस बरसे रे मनुवा, राम रस बरसे।

• • • • •

भजन - 389

राम तजूं मैं गुरू को न बिसारूँ
गुरू के सम हरि को न निहारूँ

हरि न जन्म दियो जग माहिं
गुरू ने आवागमन छुड़ाई
हरि ने पाँच चोर दिए साथी
गुरू न दियो छुड़ाई उनाथी

हरि ने रोग भोग उलझायो
गुरू ने सब ही छुड़ायो
हरि ने कर्म मर्म भरमायो
गुरू ने आत्म रूप लखायो

हरि ने मोको आप छिपायो
गुरू दीपक ले आप दिखाओ
चरणदास पर तन मन वारूँ
गुरू न तजूं हरि को भज डालूँ

• • • • •

भजन - 390

राजी है हम उसी में जिसमें तेरी रजा है,
हर बात में है वाह–वाह हर बात में मजा है।

सुख दुःख तो क्या प्रभु ने कुछ भी नहीं बताया।
मिलती हमें हमारे कर्मों की ये सजा है...

जो कुछ मिला है जग में कुछ भी नहीं मिला है।
भगवान के सिवा तो सूनी हर इक फिजा है...

जो तू है सो ही मैं हूँ जो मैं हूँ सो ही तू है।
भौतिक उपाधियों का सब भेद अब तजा है...

मन्दिर है मन के अन्दर, मैं मूर्ति स्वयं हूँ।
निर्वाण के शिखर पर लहरा रही ध्वजा है...

मीनार रोशनी के भगवान के चरण हैं।
रहना चरण शरण में इतनी सी इल्तजा है...

• • • • •

भजन - 391

रमता राम रमो मोहे जिया,
ज्ञानी ने गुप्त खजाना पा लिया।

चतुष्टय साधन पलंग बिछाया
ब्रह्मज्ञान का तकिया लगाया
शांति का बिस्तर बिछा दिया

ऐसी गहरी नींदर आई
जगत मैल ना रहियो दिखाई
अद्वैत राम पति वर पा लिया

ज्यों सागर में बूँद समाई
संत राम में भेद न भाई
कर निर्णय मैंने आजमा लिया

ना कोई वैरी मित्र हमारो
जित वल देखूँ उत वल प्यारो
गुरू शब्दी मनको है अटका दिया

जाग्रत स्वप्न, सुषोपत उपाधि
हम तो अद्वैत अखंड अनादि
हम निश्चय को मैंने आजमा लिया

• • • • •

भजन - 392

रिमझिम बरसे अमृत धारा
मन पीवे गुरू शब्द विचारा

सब कुछ घर में बाहर नाहिं
बाहर टोले सो भरम भुलाहीं
गुरू प्रसादी जिन्हीं अंतर पाया
सौ अंतर बाहर सुहेला

आनंद विनोद रहे दिन राती
सदा सदा हरि केला
जन्म-जन्म का बिछिड़या मिलिया
साध कृपा ते सूखा हरिया
सुमति पाई नाम धियाई

जल तरंग ज्यों जल मांहि समाया
त्यों ज्योति संग ज्योति मिलाया
कहू नानक भरम करे इक वारा
फिर बहुर ना होवे चोला

• • • • •

भजन - 393

रहमतां करदा ए जी
झोलिया भरदा ऐ जी
पीरां दा पीर मेरा शाही फकीर
मेरा सद्गुरू प्यारा है

आन पड़े जो शरणी कर देंदा मालोमाल
तुसी लुट लो संगता लुट लो
मेरा सतगुरू दीन दयाल
भरे भण्डारे नी, कहंदे सारे नी

ऐ रब है सद्गुरू मेरा, ऐनूं समझे न कोई बन्दा
ओ मिनटां दे विच कटढा, चौरासी वाला फेरा
देर नहीं लांदा ए, निश्चय करान्दा ए।

मेरे सतगुरू जी दा द्वारा
सारी दुनिया कोलों न्यारा
सारे दुखां दी इको दवाई
ऐ दसदा जांदा प्यारा
प्रेम दी वर्षा कीती, ऐ मस्त बनांदा एजी

• • • • •

भजन - 394

रोते–रोते आये हमें हंसना सिखाया
दुख गम मुसीबतें से हमें है छुड़ाया–२

अंग संग ही ये राम है सतगुरू ने दिखला दिया
जीवन जीने का मजा पल भर में सिखला दिया
भटकन मन की मिटा दी हैं सभी
मन में भी खुशियां छाई हैं सभी
महिमा गुरू की निराली हर कोई गाए, रोते–२ ...

तीन लोक नव खण्ड में, गुरू से बड़ा ना कोय
कर्ता करे ना कर सके गुरू करे से होय
गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णु महेष
गुरू नाम से ही सन्तों कटे हैं कलेष
ब्रह्म क्या है माया क्या है गुरू ने बताया–२ ... रोते–२ ...

दिन ही चाहे रात हो खुशियां की बरसात हो
सबको जीवन ये मिलें ... नित्य नई सौगात हो ...
गुरू से मिले जो मिले उसे खुशियां
गुरू ही बदल देता आप दुनिया
गुरू ने ही देखो सन्तों अपना बनाया–२ ... रोते–२ ...

• • • • •

भजन - 395

रंग वाले देर क्या है मेरा चोला रंग दे
और सारे रंग धाके प्रेम रंग रंग दे
श्याम रंग रंग दे हरि नाम रंग रंग दे

मैं जिधर भी देखता हूँ रंग तेरा दीखता
मैं ही एक बेरंग हूँ तू मुझको भी रंग दे,
श्याम ...

कितने ही रंगों में मैंने आज तक रंगा इसे
पर वो सारे फीके निकले तू ही गूढ़ा रंग दे,
श्याम ...
मैं तो जानूंगा तभी तेरी रंग अंदाजियां
जितना धोऊँ उतना चमके ऐसा चोला रंग दे,
श्याम ...

• • • • •

ल

भजन - 396

लगन सतगुरू से लगा बैठे जो होगा देखा जाएगा।
उन्हें अपना बना बैठे जो होगा देखा जाएगा।

कभी दुनिया से डरते थे कि छुप–छुप प्यार करते थे,
कि अब पर्दा उठा बैठे, जो होगा...

किय कुर्बान अपना दिल प्रभु के कोमल वचनों में,
जन्म की बाजी लगा बैठे, जो होगा...

तुम्हारी बेबसी से दिल जो मेरा टूट जाएगा,
रहेंगे हम न इस तन में, जो होगा...

तेरी लगन लगा करके, अनेकों पापी तरते हैं,
, कदम आगे बढ़ा बैठे, जो होगा...

माया के जाल में फँसकर अनेकों जन्म बीते हैं,
कि अब बन्धन छुड़ा बैठे, जो होगा...

• • • • •

भजन - 397

लखाया गुरू ने मुझमें ही मेरा प्यारा राम।

ढूँढ फिरा प्रीतम प्यारे को नदी जंगल और बागों में
सरयू मान सरोवर में और गंगा जमुना काशी में
बड़े-बड़े झर निर्झर में और झार-झार झंकारों में
वन उपवन फूलों कलियों में, चंदा और सितारों में
नहीं पाया निज धाम, लखाया गुरू ने...

मंदिर-मंदिर मस्जिद-मस्जिद में जा-जा कर गान किया
वीणा के सब तारों में गद्गद होकर सहगान किया
ढूँढ़-ढूँढ़ जब ढूँढ़ थका तब संतों का सत्संग किया
बिना सतगुरू राम नहीं मिलता, संतों ने उपदेश दिया
तब आया विश्वास, लखाया...

संसार का सुख सब झूठा है, गुरूवर ने हमें सिखाया है
सोऽहम् की गरजना कर, सारा भव भेद मिटाया है
सब कर्मों का तू दृष्टा है, एक ही ज्ञान बताया है
माया का पर्दा दूर हटा, घट में ही राम लखाया है।
तब पाया विश्वास, लखाया...

• • • • •

भजन - 398

लीला लगी है राम भजन वाली, जय हो
लीला लगी है प्रेम भजन वाली, जय हो

माता कहंदी सुन मेरी मीरा ये क्यों चाली चाही
महल माड़ियाँ छोड़के, संतन दी कुटिया भाई
मीरा कहंदी सुन मेरी माता, ये कुटिया मैनूं भावे
इस कुटिया दे रहंदिया, मेरा श्याम सुंदर आवे

माता कहंदी सुन मेरी मीरा ये क्यों चाली चाही
सूट-साड़ियाँ छोड़के, नी अंग भभूती लाही
मीरा कहंदी सुन मेरी माता अंग भभूती चंगी
अंग भभूती लंदिया मेरा श्याम सुन्दर है संगी

माता कहंदी सुन मेरी मीरा ये क्यों चाली चाही
हीरा मोती छोड़ के गल तुलसी माला पाई
मीरा कहंदी सुन मेरी माता तुलसी माला प्यारी
तुलसी माला पांदिया मिल जाए गिरधारी

माता कहंदी सुन मेरी मीरा ये क्यों चाली चाही
अपना पति छोड़ के, मोहन नाल प्रीत लगाई
मीरा कहंदी सुन मेरी माता ये पति है झूठा
सच्चा पति मेरा श्याम सुन्दर, सच्चे रस्ते लावे

• • • • •

भजन - 399

लाखों बाग हैं देखे मैंने, ऐसा बाग कहीं न देखा
देख के दादा का ये बगीचा, मन कमल चुपचाप खिला

हर इक रंग के फूल हैं इसमें, खुशबू जिनकी प्यारी–प्यारी
हर इक मन में आत्म निश्चय, शोभा जिनकी देख रहा

हर इक दिल में प्रेम नम्रता, धीरज की लहरें देखी
हर इक दिल में ज्ञान की गंगा मैंने तो बहती देखी
हर जीवन का इक पहलू मैंने तो बदला देखा

इस द्वारे पर जो भी आए, कौवे से हंसा बन जाए
मोती चुग–चुग आनन्द पाए, जीवन में मुक्ति मिल जाए
चौरासी से वो बच जाए, ज्ञान की मन में ज्योति जला

दादा चाँद मिसल है इसमें, सतसंगी हैं बहुतारे
चाँद जो अपनी शीतलता को सृष्टि में है फैलाता
दादा ज्ञान की शीतलता को हर दिल में है बरसाता

• • • • •

भजन - 400

लूट ले जिसको जी चाहे जो, शोर मचाऊँ गली–गली
हरिनाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली–२

जिस–जिस ने ये हीरे लूटे वो तो मालामाल हुए
इस जग के जो बने पुजारी आखिर वो कंगाल हुए
धन दौलत और मायावालों तुम्हें जगाऊँ गली–गली

जब तक आशा है दुनिया की तब तक तो पहचान नहीं
रोम–रोम में राम न जाना है वो तो इन्सान नहीं
दादा भगवान का मैं ज्ञान सुनाऊँ गली–गली

दौलत के दीवानों सुन लो, एक दिन ऐसा आएगा
धन यौवन और रूप खजाना, यहीं धरा रह जाएगा
सुन्दर काया माटी होगी, चर्चा होगी गली–गली

• • • • •

भजन – 401

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल
लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल

खोया था मैं आने मद में निज विषय विकास सागर में,
गुरू ने जब ज्ञान सुनाया तब स्वयम् को ब्रह्म ही पाया।

गुरू ज्ञान दीप जो जलाया, मन अंधकार न आया,
तब गुरू की वाणी सुनकर, जन–जन संदेश सुनाया।

जब मेरे प्राण बेचारे, चौरासी लाख जूणी से हारे,
तब निराकार मेरे दादा, साकार रूप में पधारे।

.....

भजन – 402

लोभी तुम तो फँस गये माया जाल में।
और खो दिया, पाया था जो भी।।

राम नाम अनमोल खजाना जो तुमने था पाया।
माया के चक्कर में आकर अपना आप गँवाया।।

सच्चे धन को छोड़ दिया और झूठे को अपनाया।
माया से प्रीत करी और प्रभु का नाम भुलाया।।

धन दौलत के जोश में आके कर बैठे मनमानी।
सत्य वचन अनमोल रतन की तूने कदर न जानी।।

बीत गया जो भूल जा उसको अब तो सोच विचार।
सत्य वचन से सतगुरू तेरा करेगा बेड़ा पार।।

.....

व

भजन - 403

वचन गुरू के बोल मेरे मन यही तुझे काम आएगा।
प्रभु के ध्यान में डोल मेरे मन यही तुझे काम आएगा।।

काम तेरा बस खुद को पाना,
पहले अपनी खुदी को मिटाना,
है यही संतों के बोल मेरे मन यही तुझे काम आएगा।

मन में मैलों का है अंधियारा, ज्ञान का कैसे हो उजियारा,
मन गुरू से खोल मेरे मन यही तुझे काम आएगा।

त्याग अपने मन की खुशी को,
साथी बना ले अपना उसी को,
जीवन व्यर्थ न रोल मेरे मन यही तुझे काम आएगा।

दादा लक्ष्मी ऐसे हमारे, लाख चौरासी कटे हमारे,
है यह घड़ी भगवान मेरे मन यही तुझे काम आएगा।

• • • • •

भजन - 404

वाह–वाह तेरी कारीगरी भगवान–भगवान
नर तन का चोला सिला दिया
सुई धागा हाथ में कहीं नहीं...
पत्ते–पत्ते की कतरन न्यारी
तेरे हाथ में कतरनी कहीं नहीं...
भोजन दे जीव जन्तु को
तेरे लगे भंडारे कहीं नहीं...
फल सब्जी कई रस भरे
तेरे essence की बोतल कहीं नहीं...
मीठी वायु प्यारी लगे
तेरे लगे हैं पंखे कहीं नहीं...
बरसे जल इतना बरसे
आकाश में सागर कहीं नहीं...
सारे जग को रंगा है तूने
पेन्ट और ब्रश भी कहीं नहीं...
किया है रोशन इस दुनिया को
बिजली की वायर कहीं नहीं...
हर वक्त न्याय ही न्याय है
तेरी लगी कचहरी कहीं नहीं...
हम सबको बनाया सतगुरू ने
हथौड़ा औजार भी कहीं नहीं...

• • • • •

भजन – 405

वैसे तो नशे अनेक हैं, पर ये नशा कुछ और है,
साकी जो पिलाये इक बार जिये,
रहता है सदा खुमार में उसे।

जीवन में वही खुश रहता है,
वचनों को अमल में जो लाता है।

गुरू भक्त वही कहलाता है,
जो निष्काम हो कर दिखलाता है।
एक पल का अब तो भरोसा नहीं,
समय को न यूँ ही गँवाना है।।

इस राह में आने वाले को,
अपनी ही लगन की जरूरत है।
दुनिया की जिसको चाह नहीं,
राह में उसके रूकावट नहीं।
जीते जी यहाँ तो मरना है,
अपनी ही खुदी को मिटाना है।।

• • • • •

स

भजन – 406

वेदों में मीठे वाक्य हैं, सुन लो प्यार से – 2
दुई का नाश होता है, आतम विचार से – 2

मंजिल तो तेरी दूर है, जाना जरूर है – 2
तन–मन में शक्ति भर लें, आतम विचार से – 2

ब्रह्म विचार कीजिये, फिर जगत है कहाँ–2
जगत दिखायी देता हैं, भ्रम के आधार से – 2

सुरति माता की गोद में, जब खेलते थे हम – 2
माता प्यार करती है, अच्छे आचार से – 2

• • • • •

भजन - 407

वो जुबां कहाँ से लाऊँ जिससे करूँ मैं शुक्रिया।

कितने न बुरे थे हम तो, तूने फिर भी उठा लिया है,
कितना न कष्ट सहकर भी, मुझे अपना बना लिया है।

मेरे जनम-जनम के साथी, मैंने अब तो तुम्हें पहचाना है,
खुद कृष्ण बनकर तुमने मुझे अर्जुन बना दिया है।

बेगमपुर का बादशाह, तूने हमको बना दिया है,
करके आतम ज्ञान की वर्षा मुझे शेर बना दिया है।

मेरी नींद चुराने वाले मैं कैसे होश सँभालूँ,
दिल दिया जो मैंने तुमको, अब कैसे किसे बिठाऊँ।

मेरे जनम-मरण मिटाने वाले, अब कैसे तुझे भुला दूँ,
वो कलम नहीं है मिलती जिससे शुक्रिया लिख डालूँ।

• • • • •

श

भजन - 408

शान्ति सरोवर में नहाया करो
जरा शान्ति सरोवर में नहाया करो

शान्ति समान कोई तप भी नहीं है
चाहे सारी रात समाधि लगाया करो, जरा...

शान्ति समान कोई जप भी नहीं है
चाहे माला पे माला फिराया करो, जरा...

शान्ति समान कोई स्नान भी नहीं है
चाहे गंगा और जमुना में नहाया करो, जरा...

शान्ति समान कोई दान भी नहीं हैं
चाहे लाखों रूपैया उड़ाया करो, जरा...

शान्ति समान कोई पाठ भी नहीं है
चाहे चारों ही वेदों को गाया करो, जरा...

शान्ति समान कोई तीर्थ भी नहीं है
चाहे चारों ही धाम फिर आया करो, जरा...

कहे कबीर सुनो भाई साधो
हरि चरणों में चित को लगाया करो, जरा...

• • • • •

भजन – 409

श्याम तुम होगे शमा, काफूर हो जाऊँगा मैं।
मैं अगर माँगू तो माँगू, तुम न कुछ देना मुझे जी।
वरना प्रेमी नहीं मजदूर हो जाऊँगा।

मैं अगर चाहूँ तो चाहूँ तुम न मुझ को चाहना जी।
तुमने अगर चाहा तो, फिर मशहूर हो जाऊँगा मैं।

मैं अगर देखूँ तो देखूँ तुम न मुझकों देखना जी।
तुमने अगर देखा तो फिर मगरूर हो जाऊँगा मैं।

मैं अगर तड़फूँ तो तड़फूँ, आसूँ बरसाना न तुम जी।
वरना आँखों से तेरी फिर दूर हो जाऊँगा मैं।

• • • • •

स

भजन – 410

सतगुरू पूरे देव मिले, फिर दूजा देव मनावां क्यों,
आतम रस वाले मिल गए,
फिर दूजा खोजन जावां क्यों।

सतगुरू शब्द घट भीतर में,
सत्य शब्द प्रकाश हुआ।
मन मंदिर ज्योति विराज रही,
फिर दीपक और जलावां क्यों।

सतगुरू ने पूरण ज्ञान दिया,
भव तरने का सामान दिया।
फिर पोथी पुस्तकों में,
बे मतलब ध्यान लगावां क्यों।

सतगुरू मेरे मैं सतगुरू की,
वो और नहीं मैं और नहीं।
जब ये निश्चय जान लिया,
फिर और से प्रीत लगावां क्यों।

• • • • •

भजन - 411

सतगुरू तुझसे लगन मेरी लागी रहे
ब्रह्माकार वृत्ति मेरी जागती रहे

हो जाऊँ मैं तुझमें ऐसी मगन
ना डोलाए तेरी माया करूँ ऐसा यत्न
तेरे वचनों में सदा लिव लागी रहे
ब्रह्माकार वृत्ति मेरी...

सब कुछ करते भी मैं अकर्ता रहूँ
ध्यान तेरा प्रभु मैं धरता रहूँ
मन सदाई तेरा अनुरागी रहे
ब्रह्माकार वृतित्त मेसी...

जगत दूषण नहीं है भूषण मेरा
न कोई वैरी दिखे सब है साजन मेरा
ऐसी वृत्ति अखंड मेरी लागी रहे
ब्रह्माकार वृत्ति मेरी...

• • • • •

भजन - 412

सतगुरू बिन जो हरि मिल जाए ऽऽऽ
हरि मिलने पर भी मन का भेद भरम न जाए ऽऽऽ

वो तो है मायापति नटवर, माया में हर्षाये।
जीव जगत की रचना करके, सबको नाच नचाए।

सुख के हेतु सब भटक रहे हैं, भव बंधन उड़ जाए।
ज्ञान बिना आनन्द कहाँ है, गुरू बिन ज्ञान न पाए।

भाग्य बड़े जब हरि सतगुरू बन, जीवन में आए जाए।
जीव ब्रह्म की एकता करके, सत्य स्वरूप लिखाये।

जीवन मुक्त तभी हो प्राणी, जब सतगुरू अपनाए।
कहे प्रेमी गुरू की कृपा प्रथम हो, फिर हरि ध्यान लगाए।

• • • • •

भजन – 413

सतगुरू मिले मेरे सारे दुःख बिसरे
अन्तर के पट खुल गयो रे।

ज्ञान की ज्योति जल घट भीतर
कोटि करम सब जल गयो रे।

पांच चोर लुटे थे दिन राती
आस से आप ही टल गयो रे।

बिन दीपक भयों उजियारो
तिमिर न कहाँ जाने नस गयो रे।

त्रिवेणी से धार बहुत है
अष्ट कमल दल खिल गयो रे।

कोटि भानु मेरी भयों उजियारो
ओर ही रंग बदल गयो रे।

अड़सठ तीरथ हैं घट भीतर
आप से आप ही मिल गयो रे।

गगन मंडल से वर्षा होई
अमीय कुंड झलक गयो रे।

• • • • •

भजन – 414

सतगुरू पिया मेरी रंग दे चुनरिया

आप रंगो चाहे मोल मंगा दो
प्रेम नगर की लागी है बजरिया।

लाल न रंग दे हरी न रंग दे
ऐसी रंग रे जैसे स्वामी की पगड़िया।

ऐसी रंगों जो रंग ना छूटे
धोबी धोवे चाहें सारी उमरिया।

धर्मदास दोउ बिनह कर जोड़ी
ओढ़ के चुनरिया जैसे स्वामी की सेजरिया।

• • • • •

भजन - 415

सतगुरू प्यारे ने यही समझाया,
एक प्रभु है सब में समाया।

कोई नहीं ऊँचा जग में, कोई नहीं नीचा
संसार में है सबकी परीक्षा
आत्मा का रूप है ये, कोई न पराया।

जैसे कि कुम्हार गढ़े माटी के खिलौने
रंग दे वो नीले, पीले, साँवले सलौने।
माटी तो माटी रे भाई, तेरी मेरी काया।

प्राणी जो प्राणी को देखे, एक नजर से
नफरत रहे न, चारों ओर प्यार बरसे।
सब अपना आप ही है माया ने भुलाया।

घट–घट वासी होके बसे तन–मन में,
वो ही ब्राह्मण में है, वो ही हरिजन में,
भेद–भाव, ऊँचा–नीचा, गुरू ने मिटाया।

• • • • •

भजन - 416

सतगुरू से करो प्रीत पियारे, प्रीतम से करो प्रीत..
कोनो मिलाए गुरू के सिवा कोई पार न पाए,
सतगुरू बिना कोई राह न पाए...

सौदा लेकर बन तू व्यापारी,
नाम जपन की कर तू तैयारी।
मानुष जनम तोरे फिर नहीं आए रे...

कुटुम्ब कबीला काम न आए,
अंत समय कोई साथ न जाए।
फिर भी देखो सब आजमाये रे...

सँभल के प्यारे चल दुनिया में,
मोह माया में फँसना न प्यारे।
ज्ञान का रास्ता एक गुरू की बताए रे।

• • • • •

भजन - 417

सतगुरू की मोहब्बत ने हमको ये सिखाया है
जीने का मजा सचमुच प्रेमी ने ही पाया है।

दुनिया की निगाहों में चाहे वो दीवाना है
लेकिन प्रभु प्यारे का पूरा मस्ताना है
सियानों में वो सियाना है, चाहे होश गँवाया है।
जीने...

दुनिया के वो धोखे में हर्गिज नहीं फँसता है
दुनिया उस पर हँसती, वो दुनिया पर हँसता है।

अंधा बहरा गूँगा सब प्रेमी को कहते हैं
मस्त अपने आनन्छ में सदा प्रेमी रहते हैं।

• • • • •

भजन - 418

सतगुरू मिले तो मुझे मिल गई मुक्ति
ऐसी गुरू ने ही बनायी युक्ति...मुझे मिल गई।

ज्ञान का ऐसा रंग चढ़ा फीके सारे रंग पड़े
जिस के ऊपर और जगत का नहीं कोई भी रंग चढ़े
ज्ञान में रंग दी है सारी भक्ति...मुझे मिल...

दीन हुए बलहीन हुए थे सम्बन्यिों के बन्धन से
मिटी शिथिलता कर दिया निर्भय वाणी की गर्जना से
सिंह की भाँति मैंने पाई शक्ति...मुझे...

सत्य सरल सतगुरू की वाणी सुनकर संशय दूर हुए
मीठा प्रेम का प्याला पीकर प्रेम में हम भरपूर हुए
चढ़ी है प्रेम की अनोखी मस्ती...मुझे मिल गई

उदय हो गया ज्ञान सूर्य का उज्जवल दिव्य प्रकाश हुआ
मिट गया सब अज्ञान अब मिथ्या मोह सब नास हुआ
ज्ञान की ज्योति अब सदा जलती
मुझे मिल गई मुक्ति...सतगुरू मिले...

• • • • •

भजन - 419

सतगुरू–सतगुरू बोल के तो देख,
कितने निकट हैं परख के तो देख।
एक बार उनको पुकार के तो देख,
कितने निकट हैं परख के तो देख।।
जब तू चलता है साथ चलते,
जब तू बैठता है साथ बैठते हैं।
जब तू सोता सँभाल करते,
बैठो भजन में वो सामने रहते हैं।।
छोड़ दे झूठ कपट सब आज,
एक ही पकड़ ले सच्चाई की डोर।
झूठ की डोर बड़ी कमजोर,
सत् की डोर पकड़ के तो देख।।
सतगुरू बिन न आवे ज्ञान,
कौन बताए तेरा पथ अंजान।
सच की गली में न रहना आसान,
गुरू ने बताया वो करके तो देख।।
जगत का प्यार हटा मन से,
सतगुरू का प्यार बढ़ मन से।
साथ चलेंगे तेरे गुरू और ज्ञान,
नाम की कमाई करके तो देख।।

• • • • •

भजन - 420

सतसंग में है मजे–मजे
ते भी आना श्रद्धा से प्यारे, लोक लज्जा को छोड़ के।

सतसंग की है महिमा बड़ी, वेद वाक्य हैं बोलते।
जिन्होंने संग किया सतसंग से पार हुआ,
प्रेमियों के देखे मजे–२

सतसंग में है सतगुरू मिलता,
देखना तुम भी राम की रजा।
मौज मिलती है हरि भजन में, तू भी लेना मजे–२

प्यार–प्यार में ज्ञान तू लेना, अपने से तू वृत्ति जोड़ना।
समय बीतेगा पता न लगेगा, अब हैं तेरे लिए मजे–२

चित्त एकाग्र सतसंग में होगा,
सत् चित् आनन्द का अनुभव होगा।
छूट जायेगा जनम मरण तेरा, इस स्थिति में हैं मजे–२

• • • • •

भजन - 421

सतसंग में आने से ही मेरी दृष्टि बदल गई है
भगवान को सन्मुख पाकर मेरी सृष्टि बदल गई है...

था देह को अपना माना मिथ्या को सच्चा जाना
अब निज को है पहचाना, और दृष्टि बदल गई है.

संसार की वासनाओं में, इन व्यर्थ कल्पनाओं में
जग की सब तृष्णाओं में, संतुष्टि बदल गई है...

जग की ममता को छोड़ा, भगवान से नाता जोड़ा
कर्तापन का भ्रम तोड़ा, करमुष्टि बदल गई है...

भगवान का मिला सहारा विषयों का मिटा विष सारा
बरसाई अमृत धारा, और दृष्टि बदल गई है...

• • • • •

भजन - 422

सत ज्ञान की निर्मल गंगा में तू आकर रोज नहाया कर,
तेरे पाप सभी कट जायेंगे कुछ गोते रोज लगाया कर।

इस पतित पावनी गंगा में जिसने भी डुबकी मारी है
उसने अपने अन्तर मन की फिर सारी मैल उतारी है
सत ज्ञान के इस गंगा जल में जन्मों की प्यास बुझाया कर
तेरे पाप सभी कट जायेंगे...

इस ज्ञान की बहती गंगा में आकर जो नित्य नहाता है
सब पाप पंथ धुल जाते हैं वो भी निर्मल होता है
इस ज्ञान की निर्मल धारा में नित जीवन पट चमकाया कर
तेरे पाप सभी कट जायेंगे...

गंगा निकली गंगोत्री से सीमित धरती पर बिखरी है
जो दसों दिशाएं पावन करती,
भगवान के मुख से निकली है
भगवान शरण में आकर के नित अपना ज्ञान बढ़ाया कर
तेरे पाप सभी कट जायेंगे...

यहाँ ज्ञान की पावन गंगा का जिसने भी अमृत पान किया
उसने निज को है जान लिया परमपद को पही लिया
अज्ञान के अन्धेरे मिट जायेंगे अब ज्ञान के दीप जलाया कर
तेरे पाप सभी कट जायेंगे...

• • • • • •

भजन - 423

सच का सौदा करने वाले, सच को तू ही जानेगा।
मन को आत्मा की राह दिखादे, वरना मन नहीं मानेगा।

क्या जाने वो सच को जिसने गुरू को नहीं पहचाना है
पतंगा बनकर नहीं जला जो, शमा का मोल न पाया है
मन के कहने पर ही चलता, खुद को जान न पाया है
प्रभु को जानेगा वो ही जो अन्तर मुख हो जायेगा।
मन...

शमा जली है तेरे लिए अब, तुझ को कुछ नहीं करना है।
केवल अपना स्वरूप जान ले, तू न जन्मा न मरना है
श्रद्धालु और विश्वासी का, बेड़ा जग से तरना है।
साकार में कर प्रभु का दर्शन, तब निराकार जानेगा।
मन...

फिर पछताये क्या होगा जब, चिड़ियों ने चुग खेत लिया
रिश्तेदारी जग की यारी, सबको तूने देख लिया
निश्चय उसको होगा जिसने, मन सतगुरू को बेच दिया।
मतलब के हैं संगी साथी, गुरू शरण बच जायेगा।
मन...

• • • • •

भजन - 424

सच मुझको मिल गया है सतगुरू तेरी गली में
दादा तेरी गली में
मैं तो सिर्फ रहूँगी सतगुरू तेरी गली में
दादा तेरी गली में

ये प्रेम चीज क्या है मैंने नहीं था जाना
तेरा जो प्रेम पाया तब से है प्रेम जाना
हर पल रहे ये जीवन सतगुरू तेरी गली में...

दुनिया को आजमा के ये राज जानते हैं
दुनिया के नाते जो हैं जुड़ते ही टूटते हैं
दुनिया दुखों का घर है सुख है तेरी गली में...

एक ही आरजू है अब मेरे दिल की ये तो
सच के सिवाय न दूजा भाये मेरी नजर को
आखिर ये प्राण निकले सतगुरू तेरी गली में

• • • • •

भजन - 425

सच्चिदानंद है तू, ब्रह्मानंद है तू जीव माना,
बन बया देह में क्यूँ दीवाना।

अपने अज्ञान से भरमाया, शेर होकर के मैं–मैं मचाया,
मेरा घरबार है, मेरा परिवार है, ये खजाना,
सीपी में चाँदी देख लुभाना।

होके अविनाशी जनमा मरा है, रस्सी को सर्प जान डरा है
यही परम शूल है और यही शूल है जो डराना,
झूठ सपने को सच करके माना।

तेरी माया है तुझको भरमाती,
खेल रच–रचके तुझको रिझाती,
खेल है खेलता, दुःख नित्य झेलता, न अघाना,
चाहे मरूस्थल के जल में नहाना।

देह मानुष की हीरा सी पाई, करले अब तू कोई कमाई
शुद्ध दर्पण बना रूप लख अपना पुराना,
चाहे पूर्ण आनन्द को पाना।

• • • • •

भजन - 426

सब मतलब के हैं यार
करना न किसी से प्यार
मोह न करना, प्रेम बहाना,
बस करना सब का विचार
सब मतलब...

इच्छा का फल क्या है जाना,
मोह न करना, प्रेम बहाना
बस करना सब का विचार
सब मतलब...

सच के सोच में मन को है डाला
ज्ञान में मन को अमन कर
मोह न करना...

नाटक है ये सब संसारा
आत्मा एक है सबसे न्यारा
मोह न करना...

आत्म दृष्टा सदा सुखदायी
सच की नजर सतगुरू से पाई
मोह न करना...

खेल लिया, सुख दुःख न भासा
मैं मालिक और मैं ही दाता
मोह न करना...

• • • • •

भजन - 427

सखियाँ रोज पूछें, प्रभु कैसे मिले, साई...

अपनी कृपा बिना, सतसंग बिना।
ज्ञान मुरली बिना, बुद्धि कैसे खुले।।

आतम ज्ञान बिना, सतसंग बिना।
निष्काम बिना, करम कैसे छूटे।।

बुद्धि योग बिना, संकल्प शक्ति बिना।
नित ध्यान बिना, दर्शन कैसे मिले।।

क्रोध छोड़े बिना, सहनशीलता बिना।
मोह त्यागे बिना, एकता कैसे मिले।।

सच्चे प्रेम बिना, मीठी वाणी बिना।
सतसंग बिना, शान्ति कैसे मिले।।

द्वैत त्यागे बिना, सावधानी बिना।
आतम चिन्तन बिना, मन कैसे मरे।।

उठते ओम्-बिना, सोते ओम्-बिना।
नित् ओम-बिना, आनन्द कैसे मिले।।

• • • • • •

भजन - 428

सफल हुआ है उसी का जीवन
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं-२
उन्हीं को हुआ है दर्शन, जो...

न पाया तुझको अमीर बनके,
न पाया तुझको फकीर बनके,
उन्हीं की पूजा हुई है पूरण, जो...

होशियार बनके तुम्हीं को खोया,
अनजान बनकर दिन रात रोया
अपने को खोकर तुम्हीं को पाया, जो...

जहाँ भी जिसने तुझे पुकारा,
दिया है तूने उसे सहारा।
कटे हैं उनके दुःखों के बन्धन, जो...

• • • • •

भजन - 429

सहारों का सहारा है सहारा है हमारा
प्यारा सतगुरू ओ मेरा सतगुरू...
जीवन के इन तूफानों में
ये ही एक सहारा है
क्यूँ न करें हम पूजा इनकी
दूजा कौन सहारा है
इसने हमारा जीवन सँवारा, सहारा है हमारा...
इनका सहारा सच्चा है
इस जग का सहारा झूठा है
ये बनता है उनका जिनका
ये जग सारा झूठा है,
इसने हमारा जीवन सँवारा, सहारा है....
रूप बदल कर आया है ये
दुनिया वालों कदर करो
तोड़ के अपने दस्तूरों को
कदमों में इनके सीस धरो
इसने हमारा जीवन सँवारा–सँवारा सहारा है...

• • • • •

भजन - 430

साधो ये मुर्दों का गाँव
पीर मरे, पैगम्बर मरे,
मरे हैं जिन्दा जोगी
राज मरि है, प्रजा मरि है,
मरि है वैद्य अरोगी...
चन्दा मरि है, सूरज मरि है,
धरती आकाश...
चौदह भुवन के चौधरी मरि है,
इन्हों की क्या आश
नौ हों मरि है, दसि हूँ मरि है,
मरि है सुहज अठासी
तैंतीस कोटि देवता मरि हैं,
बड़े काल की भाँति
नाम अनाम अनन्त रहत हैं
दूजा तत्व न कोई
कहे कबीर सुनो भई साधो
भटक मरो मत करो...

• • • • •

भजन - 431

साधो सो सतगुरू मोहे भाये
सत्य नाम का भर-भर प्याला,
आप पीये और मोह पिलाए।

मेले जाई न महंत कहाए, पूजा भेंट न लेवे।
माया को सुख दुःख कर जाने, संग न सुपन चलाए।

परदा दूर करे आँखों का, ब्रह्म दरस दिखलाए।
जाके दरसन साहिब दरसे, अनहद शब्द सुनाए।

निशदिन सतसंगत में राचे, शब्द में सुरत समाए।
कहे कबीर ताको भय नाहीं, निर्भय पद दर्शाए।

.....

भजन - 432

साधो भाई सहज समाधि भली-भली
गुरू कृपा जो दिन से लगी, दिन-दिन अधिक चली।

जहाँ-जहाँ डोलूँ सो परिक्रमा, जो कुछ करूँ सो सेवा
जब सोऊँ तब करूँ दंडवत, पूजूँ और न देवा।

कहूँ सो नाम, सुनूँ सो श्रवण, खाऊँ पीऊँ सो पूजा
गृह उद्यान एक सम लेखूँ, भाव मिटाऊँ दूजा।

आँख न मूदूँ, कान न रूदूँ, काया कष्ट नहीं धारूँ
खुले नैन में हँस-हँस देखूँ, सुन्दर रूप निहारूँ।

शब्द निरन्तर से मन लागा, मलिन वासना त्यागी,
उठत-बैठत कबहूँ न छूटे, ऐसी ताड़ी लागी।

कहे कबीर ये अनमनि रहनी, सो परगट कर गाई
दुःख सुख से जो परे परमपद, ताही में रहयो समाई।

.....

भजन - 433

सतगुरू के चरणों में शीश जो झुकाओगे
दर से जो भी मांगोगे झोली भर के जाओगे

बिगड़ी ये बनाते हैं पार ये लगाते हैं
सर झुका के देखो तो खुद ही जान जाओगे

बड़े ही दयालु हैं दिल की बात सुनते हैं
श्रद्धा से पुकारोगे तो सामने ही पाओगे

नूरानी चेहरे की एक झलक ही काफी है
एक बार देखोगे तो देखते रह जाओगे

पास जो हमारे है उनकी ही तो रहमतें हैं
एहसान इतने हैं कि गिन भी नहीं पाओगे

बिगड़ी सँवर जाए जिंदगी सुधर जाए
झूठी खुशी भूलोगे तो सच्ची खुशी पाओगे

• • • • •

भजन - 434

साधु चुप का है संसारा
क्या कहूँ कुछ कह न सकत हूँ
अद्भुत है इसरारा, साधु...
धरती भी चुप है, गगन भी चुप है
चुप है जल परिवारा
पवन पावन सूरज चुप है
चुप है चंद्र और तारा...
ब्रह्मा भी चुप है विष्णु भी चुप है
चुप है शंकर प्यारा
अगम भी चुप है निगम भी चुप है
चुप है पुराण अठारा...
अंदर चुप है बाहर चुप है
चुप है ये संसारा
पहले चुप थी, पीछे भी चुप है
चुप है सिरजण हारा...
हम भी चुप है, तुम भी चुप हो
चुप है सकल संसारा
सर्वानंद चुप में चुप हो
चुप में कर दीदारा...

• • • • •

भजन - 435

साथ जिसके सतगुरू हैं वो कभी नहीं गिरते हैं।
जिन्दगी में वो हमेशा आगे बढ़ते हैं।

दुःख-सुख में जो समता है वो दुनिया से न डरता है।
जिन्दगी में वो सच को पाके रहता है।

खुशी माया की हर पल स्थिर नहीं रहती,
सच्ची खुमारी नाम की कभी नहीं उतरती है।
ये सच राज का ना समझे तो मुश्किल है।
साथ नहीं कोई आता है, साथ नहीं कोई जाता है,
फिर भी हमको क्यूं जहां वालों पे भरोसा है।
याद प्रभु की हर पल जो कोई करता है,
उसको फिर दुनिया का नहीं रंग ही चढ़ता है।
सभी रसों से उसको तो ये रस ही भाए,
श्वासों पे एतबार नहीं, वक्त हमें खोना नहीं,
इसी जन्म में ही प्रभु को पाके रहना है।

सच्चे गुरू की नजर जिस-जिस पर पड़ती है,
उसको फिर दुनिया की नहीं मस्ती चढ़ती है,
खुद को जाना है गुरू को पहचाना है,
अब दुनिया की चाह नहीं मुक्ति की परवाह नहीं।
मुक्ति तो यहाँ पर आके पानी भरती है।

• • • • •

भजन - 436

साँवरे से मिलने का, सतसंग ही बहाना है,
सब गम भूल गये, दिल बना दीवाना है।

कहाँ-कहाँ ढूँढ़ा तुझे, कहाँ कहाँ पाया तुझे,
भक्तों की महफिल में, मेरे राम का ठिकाना है।

गोकुल में ढूँढ़ा तुझे, मथुरा में ढूँढ़ा तुझे,
कण कण में रग रग में, मेरे राम का ठिकाना है।

राधा ने पाया तुझे, मीरा ने पाया तुझे,
मैंने तुझे पा ही लिया, मेरे दिल का ठिकाना है।

सतसंग में आ जाओ, भक्तों संग बैठ जाओ,
भक्तों के हृदय में, मेरे श्याम का ठिकाना है।

सतसंग गंगा किनारा है, बहती निर्मल धारा है,
दाता अब तेरे सिवाय, मेरा कोई न सहारा है।

जब से मदहोश हुए, तबसे बेहोश हुए,
जग वाले क्या जानें, हमें मिल गया ठिकाना है।

• • • • •

भजन - 437

सुमिरन करि ले मेरे मना,
तेरी बीती उमर हरि नाम बिना।। टेक।।

हस्ति दन्त बिनु,
पंछी पंख बिनु नारी पुरूष बिना।
वैश्या पुत्र पिता बिनु हीना,
वैसे प्राणी ज्ञान बिना।। १।।

देह नैन बिनु रैन चन्द बिनु
मन्दिर दीप बिना।
जैसे तरूवर फल बिन हीना,
वैसे प्राणी ज्ञान बिना।। २।।

कूप नीर बिनु धेनु क्षीर बिनु,
धरती मेह बिना।
जैसे पंडित वेद बिनु हीना,
वैसे प्राणी ज्ञान बिना।। ३।।

काम क्रोध और लोभ मोह सब,
तृष्ण त्यागै सन्त जना।
कहहिं कबीर एक गुरू के शरण बिनु,
कोई नहीं जग में अपना।। ४।।

• • • • •

भजन - 438

सुख सागर में आयके मत जाओ रे प्यासा प्यारे।
निज सुख निर्मल सोई पाये जो मन को मोड़े–मोड़े।

उठ जाग प्यारे कर आतम मेला SSSSSS
पी–पी प्यारे अमृत प्याला।

गफलत छोड कर संतन मेला SSSSSS
आया है जग में तू इक अकेला।

रोज बहुत है अमृत धारा SSSSSS
तो भी प्यासा सकल संसारा।

• • • • •

भजन - 439

स्वास स्वास मैं सिमरूं तुझको
बार बार बलि जाऊँ
तुम बिन मेरो कोई न भगवन
जिसको मैं अपनाऊँ...

ऊठत बैठत तुम्हें आराधूँ
आठ पहर गुण गाऊँ
ओम्-ओम् की मधुर ध्वनि में
अन्दर में खो जाऊँ...

जो पहराओ सो ही पहरूँ
जित राखो तित राहूँ
कर्ता धर्ता तुम्हीं को जानूँ
तेरा दीया खाऊँ, स्वास...

तुम ठाकुर तुम साहिब मेरो
तुम्हरे हुकम बजाऊँ
हे भगवन मैं तेरो तेरो
चरण शरण सुख पाऊँ ...

• • • • •

भजन - 440

संत जगत में आते हैं, जग तारन के लिए,
आधि व्याधि उपाधि अविद्या टारन के लिए।

सूरत की इक मूरत बन कर, संत जगत में आते हैं,
सेवा कर निष्काम भाव से, चार पदार्थ पाते हैं।
रावण रूपी मन की ममता को मारन के लिए...

संत की महिमा वेद न जाने, गुरू ग्रन्थ बतलाते हैं,
नारद भी वीणा को लेकर, गीत उसी के गाते हैं।
धर्मरूपी रथ लेकर आये, तारन के लिए...

प्रेम किया प्रहलाद प्रभु से, भव सागर से पार हुआ,
नरसिंह रूप धरे नारायण, सतयुग में अवतार हुआ।
राम गुरू में भेद न जानो, तारन के लिए...

• • • • •

भजन - 441

संसार के जीवों में आशा न रखा करना,
जब कोई न हो अपना हरि ओम् जपा करना।

जीवन के समुन्दर में तूफान भी आते हैं,
जो उनके सहारे हैं वो ही तो बच जाते हैं,
भगवान् भी कहते हैं जीवों पे दया करना।

दावा न जमा लेना, यह देश है बेगाना,
इस घर में तुझे प्राणी वापस नहीं आना,
भगवान् भी कहते हैं अपने पे कृपा करना।

ए भक्त तू दुःख से न डर, तुझ से प्रभु दूर नहीं,
भक्तों का दुःखी होना दाता को मंजूर नहीं,
वो आप ही आयेंगे तुम याद किया करना।

• • • • •

भजन - 442

सबसे सुन्दर सबसे प्यारा है तेरा दरबार
बना रहे यूं हमसे प्रीतम
सदा-सदा तेरा प्यार
तेरा दरबार न छूटे प्यार की तार न टूटे

तुझसे नेहा लगाके पाए सुख हमने सारे
पिछले जन्म कर्मो के जागे भाग्य हमारे
कहां मिलेगा ऐसा सच्चा बिन स्वार्थ का प्यार
तुम हो दीन दयाल रहमत तेरी क्या कहना
तुमने सिखाया जीना सच की राह पे चलना
बिना तुम्हारे सपने में भी जीना है बेकार
तेरे श्री चरणों में बहती प्रेम की धारा
इनमें हैं सब तीर्थ ये तीर्थ राज हमारा
यहाँ झुकाकर सर को हमने पाया शान्ति भण्डारा
प्रेमी हैं हम तेरे सब कुछ हम तुझपे वारे
तुम हो संग सदा ही तुम भगवान हमारे
ये जीवन है नाम से तेरे कर दे जीवन उद्धार

• • • • •

भजन - 443

सुन रे बन्दे तू क्यों सोचे,
सोचने वाले ने सोच ही लिया है,
लिखने वाले ने लिख ही लिया है।
चुप करने से, चुप है मुश्किल,
चुप में रहने से, चुप न रहे मन,
चाहो करो तुम हजार यत्न रे।
वो ही बनती है, जो राम बनाये,
चलना ही होगा, जैसे राम चलाए,
राजी रहो तुम रजा पे मन रे।
सन्त सच्चे यही सबक सिखाते,
सीधी साधी राह दिखाते,
फिर कभी तूने न लिया वचन रे।
इक दिन तुमको चलना ही होगा,
आखिर यह जग छोड़ना ही होगा,
फिर क्यों न जपो तुम राम नाम रे।
प्रेमी की इस अरज को सुनना
अपना आकर तू दरस दिखाना,
कब आकर दोगे दर्शन रे।

• • • • •

भजन - 444

सतगुरू तेरे हो गये हम
प्यार में तेरे खो गये हम
जिंदगी थी जो अब तक उदास
आ गया मुस्कराना

हम थे भटके राही पा गये मंजिल को
डूब जाते जग में पा गये साहिल को
आपके वचनों में, हम पा गये ठिकाना

ढो रहे थे अब तक भार इस जीवन का
मिल गया है अब तो द्वार सतगुरू जी का
बदल दिया है जीवन गुरू आपका शुक्राना

जीते जी मर कर के दुनिया में रहना सिखाया
सच की राह बताकर प्रभु से हमको मिलाया
भूलकर भी अब तो गुरू को ना भूलना

• • • • •

भजन - 445

सतगुरू तू बेमिसाल है तेरी क्या मिसाल दूँ
तेरा ख्याल दिल से कैसे निकाल दूँ

तेरी नजर ने कर दिया दीवाना इस कदर हो ऽऽ
जी चाहता है खुद को कदमों में डाल दूँ सतगुरू...

तेरा जलाल देखकर आता है ये ख्याल
हर शै को तेरे नूर के सांचे में डाल दूँ सतगुरू...

तेरे बिना जहान में आता न कुछ नजर
तू ही बता दे मैं तेरी किससे मिसाल दूँ सतगुरू...

तेरे जलाल से होती है रहमते सदा
आ जाये अगर मौत भी हंसकर मैं टाल दूँ

• • • • •

भजन -446

सतगुरू प्यारे के प्यार का कोई मोल ना
सतगुरू प्यारे के वचनों को तू बोलना

सतगुरू को पाया तो जाना, ये जीवन प्यार भरा है
सतगुरू के प्यार ने मेरे जीवन में रंग भरा है
सत्संग संयम को जीवन में न छोड़ना...

हर चीज है तेरी खातिर सतगुरु ने यही बताया
आसक्त न होकर रहना सतगुरू ने यही बताया
सतगुरू वचनों से माही मन को मोड़ना...

माया के प्यार ने तुझको तुझसे ही दूर भगाया
सतगुरू के प्यार ने तुझको मेरा सच्चा रूप दिखाया
दुनिया के प्यार में सतगुरू को न भूलना...

दो दिन का जीवन तेरा तू इसमें हँस ले गा ले
क्या सोच रहा तू पगले सच जीवन में अपना ले
इक दिन ये जीवन है तुझको छोड़ना...

• • • • •

भजन - 447

सतगुरू के चरणों में आ, आ बन्दे चरणों में आ
सतगुरू जैसा दर नहीं, गुरू चरणों जैसा घर नहीं
मन को गुरू वचनों में लगा, आ बन्दे...

जिसका थाम लिया सतगुरू ने हाथ
पाई है उसने तो हर सौगात–२
गुरू आसरा लेता है जो बन्दा सुखी होता है वो–२
सच है झूठी खबर नहीं, गुरू चरणों जैसा घर नहीं...

इस जीवन का सतगुरू है आधार, करता जा बन्दे सतगुरू से प्यार
मिथ्या ये कुल संसार है सच्चा गुरू का द्वार है
पूछ ले तू जाकर कहीं, गुरू चरणों जैसा घर नहीं...

सतगुरू देते हैं हमको ब्रह्मज्ञान, पाले आकर तू भी ऐ नादान
अंग संग तेरे भरपूर है फिर क्यों इसी से दूर है
बन प्रेमी ज्ञानी नहीं, गुरू चरणों जैसा घर नहीं...

• • • • •

भजन - 448

सोया मनवा जाग जरा परदेस में रह कर दुःख न उठा
जीव भाव से उठ आत्मा में जाग अपने स्वरूप में वापस आ...

आखिर देश बेगाना है, दावा नहीं जमा लेना
तोड़ के पिंजड़ा पंछी को इक दिन तो है उड़ जाना
कर सजदा तू सोच है क्या, समय है कम और काम बड़ा
सोया...

माना माया जाल में, पंख तेरे जम गये तो क्या
विवेक रूपी चोंच से जाल काट आत्मा में उड़ जा
ज्ञान वैराग के पंख है साथ, उड़ने में तू देर न लगा
सोया...

पता नहीं देह का जब औरों से क्या मतलब है
प्रेम नशे में चूर हुआ खुदी गई तो खुदा गया
खुदी में है दुःख ही दुःख जीते जी मरने में मजा
सोया...

• • • • •

ह

भजन - 449

हम तो तेरे दीवाने हैं,
हम ज्ञान ध्यान को क्या जाने।
हम तो तेरे मस्ताने हैं,
हम जेर जबर को क्या जाने।।

ये रंग जो तेरी माया का,
भूले जीवों को सताता है।
हम रंगे हुए तेरे रंग में हैं,
माया के रंग को क्या जाने।।

हम आनन्द रस के भोगी हैं,
नहीं जन्म मरण के रोगी हैं।
हम निर्मल निश्चय योगी हैं,
कलयुग सतयुग को क्या जाने।।

हम खुद मस्ती में रहते हैं,
नहीं ऊँच नीच में बहते हैं।
जो बन आए वो सहते हैं,
ये दुनिया हम को क्या जाने।।

जो देह दृष्टि में रहते हैं,
वो तीन गुणों को कहते हैं।
जो माया के रूप में बहते हैं,
वो निज आनन्द को क्या जाने।।

हम ने निज सरूप को जाना है,
माया का पता क्या पाना है।
वहाँ अहं ब्रह्म का ताना है,
वो काम क्रोध को क्या जाने।।

• • • • •

भजन - 450

है धन्य जगत में वो प्रेमी जिसने प्रभु को पाया है
प्रीतम की प्रीति के पीछे जग सारे को बिसराया है...

दुनिया के मान बड़ाई की परवाह न करते हैं प्रेमी
दिल जान की बाजी लगाकर के
सतगुरू को अपना बनाया है...

रहती है लगन सदा दिल में वो कब रीझेंगे नाथ मेरे
हो मगन सदा इस धुन में ही सारा संसार भुलाया है...

दिल के तख्ते को साफ किया जो जन्म से थे काले
श्रद्धा विश्वास अटल रखकर
घट में ही दर्शन पाया है...

रग–रग में इश्क की आग लगी
सुख चैन भुलाये हैं सारे
गुरू वचनों पर हो के सदके मैंने मंजिल को पाया है...
है धन्य जगत में ...

• • • • •

भजन - 451

हमारे गुरू मिले ब्रह्मज्ञानी, पाई अमर निशानी।

काग पलट गुरू हंसा कीनी, दीनी नाम निशानी।
हंसा पहुँचे सुख सागर में, मुक्ति भरे जहाँ पानी।।

जलमाहीं कुम्भ, कुम्भमाही जल है, बाहर भीतर पानी।
विकस्यो कुम्भ जल माहि समायो यह गत बिरले जानी।।

है अथाह था संतन में, दरिया लहर समानी।
धीवर जाल डाल क्या करसी,
जब मीन पिघल भई पानी।।

अनुभव का ज्ञान, उज्जवलता की वाणी है,
ये अकथ कहानी।
कहत कबीर गूंगे की सेना, जिन जानी तिन मानी।।

• • • • •

भजन - 452

है प्रेम जगत में सार और कोई सार नहीं
तू कर ले प्रभु से प्यार और कोई प्यार नहीं...
है प्रेम जगत में सार...

कहा घनश्याम ने ऊधव को वृंदावन जरा तनिक जाना
वहां की गोपियों को ज्ञान का कुछ तत्व समझाना
विरह की वेदना में वे सदा बेचैन रहती हैं
तड़प कर आहें भर-भर और रो-रो कर यूं कहती हैं, क्या
है प्रेम जगत में सार...

कहा ऊधव ने बढ़कर मैं अभी जाता हूँ वृंदावन
जरा देखूँ कि कैसा है कठिन अनुराग का बंधन
हैं वो कैसी गोपियां जो ज्ञान बल को कम बताती हैं
निरर्थक लोक लीला का सदा गुण गान गाती हैं
है प्रेम जगत में सार...

चला मथुरा से कुछ दूर वृंदावन निकट आया
वहीं से प्रेम ने अपना अनोखा रंग दिखलाया
उलझ कर वस्त्र कांटों में लगे ऊधव को समझाने
तुम्हारा ज्ञान परदा फाड़ देंगे प्रेम दीवाने
है प्रेम जगत में सार...

वृक्ष झुक झुक कर यूं कहते थे इधर आओ इधर आओ
पपीहा कह रहा था पी कहां है ये तो बतलाओ
नदी यमुना की धारा शब्द हरि हरि का सुनाती थी
भंवर गुंजार से भी ये मधुर आवाज आती थी
है प्रेम जगत में सार...

गरज पहुँचा जहां था गोपियों का जिस तरह मण्डल
वहां थी शांत पृथ्वी वायु धीमी ओम् था निर्मल
सहस्त्र गोपियों के मध्य थी राधिक रानी
सभी के मुख से रहकर निकलती थी यही वाणी
है प्रेम जगत में सार...

कहा ऊधव ने हंसकर मैं अभी मथुरा से आया हूँ
सुनाता हूँ संदेशा श्याम का जो साथ लाया हूँ
जब कि आत्म सत्ता ही अलख निर्गुण कहलाती है
तो फिर क्यों मोहवश होकर, वृथा ही गान गाती है
है प्रेम जगत में सार...

कहा राधा ने हंसकर तुम संदेशा खूब लाए हो
मगर ये याद रखना प्रेम की नगरी में आए हो
संभालो योग की पूंजी न हाथों से निकल जाए
कहीं विरह की अग्नि में ज्ञान की पोथी न जल जाये
है प्रेम जगत में सार...

हो अद्वैत के कायल तो फिर क्यों द्वैत लेते हो
अरे खुद ब्रह्म होकर ब्रह्म का उपदेश देते हो
अगर निर्गुण हैं तुम हम तो कौन लेता है खबर किसकी
अलख है हम तुम तो कौन लखता है खबर किसकी
है प्रेम जगत में सार...

अभी तुम खुद नहीं समझे कि किसको योग कहते हैं
सुनो इस तौर योगी द्वैत में अडोल रहते हैं
ऊधर राधा बनी मोहन कन्हैया की जुदाई में
ऊधर मोहन बनी राधा वियोगिन की जुदाई में
है प्रेम जगत में सार...

सुनी जब अद्वैत की बातें खुली ऊधव की तब आँखें
पड़ी थी ज्ञान-मद की धूल जिसमें वो धुली आँखें
हुआ रोमांच तन में 'बिन्दु' आँखों से निकल आया
पड़ श्री राधका पग पर कहा गुरू मंत्र यह पाया
है प्रेम जगत में सार...

• • • • •

भजन - 453

है खुदा का करम आज इन्सान हम
हरकते हम अगर जानवर सी करे तो
फिर खुदा क्या करे गुरू/हरि क्या करे...
हम को मालिक ने प्यारा समां दे दिया
और हमारे लिए आज इन्सान बना
ये समय, तो मिला इक समझ के लिए
वक्त को यूं गंवाकर अगर चल दिये तो
फिर समां क्या करे...
मीठे बोलों से दुनिया को आवाज दो
ना बुरा कुछ कहो न बुरा कुछ सुनो
ये जुबां तो मिली बोल मीठे कहें
इस जुबां से किसी की जो निंदा करे तो
फिर जुबां क्या करे फिर हरि क्या करे...
हर चमकती हुई चीज सोना नहीं
ऐसे धोखे में जीवन को खोना नहीं
मेहरबां से तो आंखों की जोति मिली
हम निगाह को अगर यूं फेर लें तो
फिर निगाह क्या करें... हरि/गुरू...

• • • • •

भजन - 454

हजार शुक्राने हैं गुरू के जिसने जीना सिखा दिया है
मिलन गुरू का जब से हुआ है ये दिल गुरू का हो चुका

नजर गुरू की जिस पर हो जाये
बंदे से वो तो खुदा हो जाए
ये सर हमेशा झुका रहेगा
गुरू से सब कुछ ही मिल चुका है
हजार शुक्राने...

गुरू के जीवन को आगे रख के
हम अपना जीवन सफल बनायें
खुद अपने जीवन को देख कर के
गुरू के ज्ञान पर यकीन हुआ है
हजार शुक्राने हैं...

माया को जब कोई माया ही समझे
उसी का जीवन सफल हो जाये
हर स्वांस अपना ये सच में जाये
अब तो दिल की यही रजा है
हजार शुक्राने हैं गुरू के...

• • • • •

भजन - 455

हो जा खुशी से अपने भगवान के हवाले।
मर्जी पे छोड़ उसकी, जैसे भी वो संभाले।।

दुःख सुख मिलन जुदाई, करमों के फल हैं तेरे,
निष्काम कर्म करके, जीवन सफल बना ले।
हो जा खुशी से...

क्यों वासना के पीछे, अपने को तू गिराए,
पापों के कारवां से, दामन को तू बचा ले।
हो जा खुशी से...

ममता के बन्धनों में करता क्यों हाय-हाय,
कोई नहीं है तेरा, चाहे तू आजमा ले।
हो जा खुशी से...

कब से भटक रहा है, अंधकार में मुसाफिर,
कर ले तू ज्योति दर्शन, परमात्मा को पा ले।
हो जा खुशी से...

• • • • •

भजन - 456

हर क्षण तेरा दीदार मिले, इस पार मिले,
उस पार मिल ह्रदय में बारंबार मिले।

हे नाथ तुम्हारी कृपा से, ये प्रेम लगन लागी मन में,
पिपासा तेरे दर्शन की, सतकर्मों से जागी है मन में।
बलिहारी उन चरणों की जो सतगुरू बन इक बार मिले।।

तेरे ज्ञान की ज्योति लेकर के तेरे इक राह पे मैं चलता हूँ,
कोई लेले नाम या ना लेले, मैं अपने आप ही बढ़ता हूँ।
मैं साज हूँ तेरे साजों का, तेरे स्वर में मेरे साज मिले।।

दुनिया की अजब ये मस्ती है जग माया में मतवाली है,
मैं नाम तुम्हारा गाता हूँ, ये देती मुझको गाली है।
ये भी तेरी लीला है, अपमान के रूप में प्यार मिले।।

जब सब कुछ मालिक तेरा है, अपमान मान भी है तेरा,
मैं प्रेम से सब स्वीकार करूँ, हे दाता जब तू है मेरा।
तेरे रजा से मैं राजी रहूँ, चाहे जीत मिले या हार मिले।।

जब से पायी है तेरी शरण, सब रंजो गम मेरे दूर हुए,
ये सत् चित् आनन्द दर्शन कर, ये नैन मेरे इक नूर हुए।
कोई गैर नहीं सब तू ही है तू ही बन कर संसार मिले।।

• • • • •

भजन - 457

है कृपा तेरी मेरे सतगुरू
तूने जीवन मेरा बना दिया
मैं भटक रहा था जहान में
तूने ज्ञान अमृत पिला दिया...
तेरी वाणी में है वो असर
जिसे सुन के खिलता है हर बशर
हर बशर के दिल में ज्ञान का
दीपक है तूने जला दिया...है...

मैंने ढूँढ़ा तुझ को जहान में
पर पता तेरा मुझे ना मिला
जब पता तेरा मुझ मिल गया
तो अपना पता ही भुला दिया...
तेरे दर्श की लगी प्यास है
तेरे दर पे आऊँ ये आस है
इसी आस ने मेरे ह्रदय में
उमंगों का दीपक जला दिया...
है कृपा तेरी...

• • • • •

भजन - 458

हम लाए हैं ब्रह्माकार वृत्ति गुरूद्वार से।
इस वृत्ति को रखना मेरे मनवा सँभाल के।।

देखना ये वृत्ति ब्रह्म से पलटा नहीं खाए,
दे छोड़ अभी रस विषय–जहर न खाए।
शम, दम, दया, विवेक को रखना संभाल के।।

न समझ इसे वृत्ति ये तो है महान धन,
मिल जाए इसी से ही तुझे पूरण परमानन्द।
मैत्री करूणा मुदिता संग करना विहार रे।।

माना कि सच्चिदानन्द स्वरूप है तेरा,
पाए बिना इसी के तो कटेगा नहीं फेरा।
अब आ गई है मंजिल जरा हो जा हुशियार रे।

• • • • •

भजन - 459

हरदम है तैयार तू पाप कमाने के लिए।
कुछ तो समय निकाल हरि गुण गाने के लिए।।

गर्भ वास में कोल किया था, नाम जपूँगा मैं तेरा,
इस झूठी दुनिया में आकर, नाम भूल गया मैं तेरा।
दादा भगवान आते हैं समझाने के लिये, कुछ तो समय...

जब तक तेल दीये में बाती जगमग–जगमग हो रहा,
जल गया तेल निपट गयी बाती ले चल ले चल हो रहा।
चार जने मिल आते हैं ले जाने के लिये, कुछ तो समय...

हाड़ जले जैसे सूखी लकड़ी, केश जले जैसे घास रे,
कंचन जैसी काया जल गयी, कोई न आया साथ रे।
अपने पराये रोते हैं दिखलाने के लिये, कुछ तो समय...

कर बन्दे तू नेक कमाई, साथ तेरे जो जायेगी,
बिना गुरू के कोई न तेरा, मतलब के हैं सब साथी।
सन्त जग में आते हैं जग तारण के लिये, कुछ तो....

• • • • •

भजन - 460

हम अपनी झाँकी देख चुके,
फिद दूसरी झाँकी क्या देखें।
जब अमर निशानी आ चमकी,
फिर फानी दुनिया क्या देखें।
सड़कों पे रूले, महलों में पले,
पर चाहें यहाँ कुछ मिले न मिले।
दीदार जो शहनशाह का हुआ,
तस्वीर गुलामों की क्या देखें।।
जब समझ गये फिर उलझे क्यों,
जो खोया था सो पा ही लिया।
जब दिल की गली में रौनक है,
बाजार में जाकर क्या देखें।।
हसरत भरे लोगों की खुशी,
पल-पल में रंग बदलती हैं।
हम आतम रस में चूर हुए,
फिर रूप बनावटी क्या देखें।।
इन्सान सभी की आँखों में,
अपनी ही सूरत दिखती है।
मतलब को हम सब एक ही हैं,
फिर भेद की दृष्टि क्या देखें।।

• • • • •

भजन - 461

हर वक्त हँसी हर वक्त खुशी,
हर वक्त अमीरी है बाबा।
जब आशिक मस्त फकीर बना,
फिर क्या दिलगीरी है बाबा।।
दिन को सूरज की महफिल है,
रात को तारों की बारात है बाबा।
हर रोज मेरे लिए होली है,
हर रात मेरी दीवाली है।।
हर रोज मेरे लिए शादी है,
हर रोज मुबारकवाली है।
हर रोज मेरी गुलजारी है,
ये ज्ञान की इक फुलवारी है।।
हम आशिक उसी सनम के हैं,
जो दिलवर सबसे आला है।
दिल उसका ही दीवाना है,
मन उसका ही मस्ताना है।।
धरती मेरा ये बिस्तर है,
आसमान मेरे लिए चादर है।
हर रोज मेरी आजादी है,
हर रोज सुनहरी रात है बाबा।।

• • • • • •

भजन - 462

हर प्रेम नगर में रहते हैं,
जो बन आए सो सहते हैं।
और मुख से कुछ नहीं कहते हैं,
यहाँ शादी गमी की रीत नहीं।।
यह देश ही एक निराला है,
नहीं कंठी है नहीं माला है।
सब घरों का एक ही ताला है,
कोई मन्दिर और मस्जिद नहीं।।
यहाँ शहनशाह का वासा है,
पग–पग पर खेल तमाशा है।
निकले सब कर्मों का फांसा है,
कोई हार नहीं कोई जीत नहीं।।
यहाँ मन को मार भगाया है,
नहीं दुनिया है नहीं काया है।
अपना ही आप समाया है,
कोई मीत नहीं अमीत नहीं।।
जब जीव ईश का भेद मिटा,
दुनिया के झगड़े खत्म हुए।
तब औरों से कोई प्रीत नहीं,
तेरा मेरा की रीत नहीं।।

• • • • • •

भजन - 463

हम अपनी धुन में गाते हैं, मैं ही तुम हो तुम ही मैं हूँ
ये खुद की बात बताते हैं, मैं ही तुम...

घट के पट बंद रहे जब तक,
तब तक हम भूले भटके थे।
मिट गया अंधेरा तब समझे...

काशी प्रयाग मथुरा भटके,
जंगल–जंगल ढूँढ़ा डट के।
जब सतगुरू का आदेश हुआ...

साकार सगुण जाने कोई,
निराकार निर्गुण माने कोई।
हम को इससे क्या मतलब है...

अलगर्ज हूँ कोई गर्ज नहीं,
ये मर्ज़ तो आखिर खत्म हुआ।
सतगुरू ये दवा बतलाते हैं...

• • • • •

भजन - 464

"परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।"
(गीता ४/८)

हर युग में तू प्रगट हुआ है, लेकर एक अवतार।
इस युग में आया लेकर तू, सतगुरू का अवतार।।

देह किया धारण तूने, कष्ट भी कितने उठाए।
हँस के प्रेम की बोली से, दुःख सब के ही मिटाए।
आया तू फिर से भगवन, करने सबका उद्धार।।
इस युग में आया लेकर तू।। १।।

जो भी निकले गुरूमुख से, तेरा ही वचन है महान।
वो ही सत्य है वो ही अमर है, वो ही है तेरा ज्ञान।
गुरूवाणी में सुनते जाएँ, तुझको बारम्बार।।
इस युग में आया लेकर तू ।। २।।

• • • • •

भजन - 465

हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें
दूसरों की जय के पहले, खुद की जय करें

भेदभाव अपने दिल से साफ कर सकें
दोस्तों से भूल हो तो माफ कर सकें
झूठ से बचे रहें, सच का दम भरें...

मुश्किलें पड़ें तो हमपे इतना कर्म कर
साथ देना धर्म का चलें तो धर्म पर
खुद पे हौसला रहे, बदी से हम डरें...

• • • • •

भजन - 466

हरि से लागा रहो रे भाई, तोरी बनत बनत बन जाई
एक बात मोहे लागे अचम्मा खोज खबर नहीं पाई
तोरी...

देह गई आत्मा बिराजी इसको क्या कहिये रे भाई
तोरी...
स्याही गई सफेदी आई नितवल देखूँ रे भाई
तोरी...
ध्रुव प्रहलाद नाम ते तर गये तर गये सदना कसाई
तोरी...
सेवा श्रद्धा और बन्दगी सहज मिले रघुराई
तोरी...

. . . . .

भजन - 467

हर एक राही को सत्संग की जरूरत है
वचनों को मानते ही जीवन ही बदलती है

जो तुझको करना है, वो आज ही तू कर ले
क्यों कल पे रखता है, कल किसने देखी है
हर एक पल खुद को सावधान रहना–२
वचनों को...

जिस आनन्द के लिए, हर कोई भटकता है
अपने उसी आनन्द का सतगुरू से है पता मिलता
सतगुरू की महिमा को कोई गा नहीं सकता
वचनों को...

इस सच को पाने से नई जिन्दगी मिलती है
जीने और मरने से, मुक्ति ही मिलती है
अपने इस आनन्द को, इस जीवन में पाना है
वचनों को...

. . . . .

भजन - 468

हस्ति भाँति प्रिय में लौट आइए
नाम रूप भुला के आनंद पाइए
नाम रूप से जग है भ्रमित हो रहा
ये ही तो सर्व दुःखों का मूल है
अपने को सबने शरीर माना है
ये ही उनकी सबसे बड़ी भूल है
देह को भुला के आत्मा में आइए
नाम रूप...
ये शरीर तो मिथ्या नाशवंत है
एक दिन इसका अंत होयेगा
नाम रूप यहीं रह जाएगा
साथ में कुछ भी नहीं जाएगा
ब्रह्मज्ञान से अपने को अमर बनाइए
नाम रूप...
आत्मा अमर अविनाशी है
होता नहीं कभी इसका नाश है
ये सदा है और रहेगी सदा
सर्व में जो उसी का ही निवास है
आत्मा की अमरता की जान जाइये
नाम रूप भुला के...

• • • • •

भजन - 469

हरि ओम्, हरि ओम्, हरि ओम् कहिए,
जाहि विधि–राखे राम, ताहि विधि रहिए।
मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में
तू अकेला नहीं प्यारे, राम तेरे साथ में
विधि का विधान जान, हानि–लाभ सहिये
जाहि विधि...
किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा
होगा प्यारे वो ही जो श्री राम जी को भायेगा
फल, आशा, त्याग, शुभकर्म करते रहिए
जाहि विधि...
जीवन की डोर सौंप, हाथ दीनानाथ के
महलों में राखे चाहे झोपड़ी में वास दे
धन्यवाद निर्विवाद, राम राम कहिए
जाहि विधि...
आशा एक राम जी की, दूजी आशा छोड़ दे
नाता इक राम जी से, दूजा नाता तोड़ दे
साधू संग, अंग संग, राम राम पाईये
काम रस त्याग प्यारे, राम रस चखिये
जाहि विधि...

• • • • •

भजन - 470

हे गुरू, हे दयाल
मेरे साहिब आप हैं
आप माने या न मानें
मेरे खातिब आप हैं, हे गुरू..

श्वांस लेती हूँ तो, यूँ महसूस होता है मुझे
जैसे मेरे दिल की हर धड़कन में शामिल आप हैं
हे गुरू...

गम नहीं जो लाख तूफानों से टकराना पड़े
मैं वो कश्ती हूँ कि, जिस कश्ती के साहिल आप हैं
हे गुरू...

जन्म नहीं, मरण नहीं, मैं तो आनन्द रूप हूँ
सच का यह रूप तूने दिखलाया, तू तो बेमिसाल आप है
हे गुरू...

• • • • •

भजन - 471

हमारा ऐसा है भगवान
एकदम बनाए आप समान
अजीब अर्थ गीता का है ये
योग कृष्ण से लगती गते
विदुर जैसा है ये विद्वान। एकदम...
कृष्ण योगेश्वर ने गीता बोली
अर्जुन को दी मीठी लोरी
गोपियों को किया पूरा मस्तान। एकदम...
ऐसी इसने चाबी फिराई
विसर गई सब तेरी मेरी
मिट गया इस उस का भाव। एकदम...
मगज की इसने खिड़की खोली
भूल गई सब द्वैत की बोली
मनोहर मुरली से मिला है ज्ञानी। एकदम...
साक्षी होके रहो बीच संसार
शिक्षा उसकी कभी न भुलाओ
मालिक जहां का अपने को जान। एकदम...

• • • • •

भजन - 472

हुकुमे अन्दर सब कोई बाहर हुकुम न कोई।
नानक हुकुमे जे बुझे हौमै कहे न कोई।।

हुकुम से रोता है कोई, हुकुम से गाए गीत।
हुकुम से रूठा है कोई, हुकुम से होय प्रीत।।

हुकुम से बिगड़ा है कोई, हुकुम से हुआ है मीत।
हुकुम से होवे हार और हुकुम से होवे जीत।।

हुकुम से सोया है कोई, हुकुम से जागा कोई।
हुकुम से मुरझाया कोई हुकुम से खिलता कोई।।

हुकुम से होता है सभी, हुकुम बिना न होय।
हुकुम पहचाना है तभी, सुख दुःख भास न होय।।

हुकुम से सतगुरू मिलया, हुकुम से सतगुरू ज्ञान।
हुकुम से सतगुरू बोलया, हुकुम ही हुकुम पहचान।।

• • • • •

भजन - 473

है जिसमें घड़ी तेरी घड़ी ठीक घड़ी है,
घड़ियाँ है बहुत पर वो घड़ी एक घड़ी है।

उसने तो घड़ी काम के खातिर थी बनाई,
तुमने घड़ी टेबल पे कलाई पे लगाई,
टिक टिक करके देती है यह रोज दुहाई,
क्यों मस्त है घड़ियों में घड़ी अपनी भुलाई,
सिर पर जो खड़ी देख वो कैसी घड़ी है।

घड़ियाँ बिगड़ती हैं, सँवरती है जहां में,
कायम यह हमेशा कहाँ रहती जहां में,
तू लाख बना ले सोने, लोहे, काँ की घड़ियाँ,
उस जैसी घड़ी एक न बनती है जहाँ में।

सैकंड से मिनट से एक घंटा बनाया,
दिन साल बीत गए यूं ही वक्त गँवाया,
विज्ञान चलाया कहाँ ज्योतिष चलाई,
उस असली घड़ी का असल भेद न पाया,
रूकती न घड़ी भर वो कहीं ऐसी घड़ी है।

• • • • •

भजन - 474

हर हाल में दादा का जो शुक्र मनाते हैं
उनके घर खुशियों की होती बरसाते हैं

है याद जिन्हें दादा, हर दात मिले उनको
बिन मांगे खुशियों की सौगात मिले उनको
सुख पाकर भी सुख में नहीं मन भरमाते हैं
उनके घर खुशियों की होती बरसाते हैं...

ज्यादा में शुकर कीजे, थोड़े में सबर कीजे
ये शिक्षा जो माने वो ही सुख पाते हैं
उनके घर खुशियों की होती बरसाते हैं...

हर सुख देने वाले दातार को न भूले
सत्संग की खुशियों के झूले में वो झूले
आदेश ये सतगुरू का जो मन में बसाते हैं
उनके घर खुशियों की होती बरसाते हैं

• • • • •

ज्ञ

भजन - 475

ज्ञा[illegible] गुरू का हृदय से न भूलो, ये भुलाने [illegible]बिल नहीं है।
बड़ी मुश्किल से नर तन मिला है, ये गँ[illegible] काबिल नहीं है।
चोला अनमोल तुझको मिला है
जिसमें जीवन का फूल खिला है।
श्वांस गिन–गिन के तुझको मिला,
है ये गँवाने के काबिल नहीं है।
बात मानो तो बिल्कुल सही है, आत्मा में ही शांति सच्ची है।
जिसको आत्मा का बोध नहीं है, बुद्धिमानों के काबिल नहीं है।
जिसने हीरा जन्म ऐसा पाकर, खोज अपनी न की मन लगाकर।
भिक्षु सन्यासी बन मन ना जीता, संत कहाने के [illegible] नहीं है।
जिसने नर तन को पाकर कुछ ना
अपना जीवन व्यर्थ गँवा ही दिया।
जिस मुख से नाम न उचरे मुख दिखाने के काबिल नहीं है,
खोज अपनी न की मन लगाकर।
जि[illegible]र तन को पाकर कुछ न किया,
अपना जीवन व्यर्थ गँवा ही दिया।
इस दुनिया में कोई नहीं जो सच्चा प्रेम सिखाये,
संत कहाने के काबिल नहीं है।

• • • • •

भजन – 476

ज्ञान मिले गुरू के मुख से, गुरू मिले सत्संग से
सत्संग मिले प्रेम लगन से, कोई जाने ना, रे ज्ञान...
मन से बुद्धि परे है, बुद्धि से आत्मा–२
तेरी हर श्वांस में, रमता परमात्मा–रमता परमात्मा
ओ मनवा रे...
ऐसे मन मुक्ति दे क्यों, ब्रह्मा जाने ना, रे ज्ञान...
सागर के तट पे खड़ा है, पानी तू पाए ना–२
मुक्ति की राह खड़ा है, मंजिल तू पाए ना–२
ओ मनवा रे... मुक्ति की राह...
ऐसे अचरज जीवन को, क्यों तू जाने न, रे ज्ञान...
तेरे हर धड़कन कहती, श्वासों की कीमत कर–२
जीवन पूंजी को खाए, माया की दीमक–२
ओ मनवा रे... जीवन की पूँजी
बिना गुरू इसकी कीमत, कोई जाने, ना रे ज्ञान...
अनजाने लोगों से क्यों, तेरी ये प्रीत है–२
तेरे ही दिल में बैठा, तेरा वो मीत है–२
ओ मनवा रे...तेरे ही दिल...
मिथ्या और सच को पगले, तू क्यों जाने न, रे ज्ञान...
आनन्द और शान्ति मिलती, सत्संग में आने से–२
ओ मनवा रे... मुक्ति का द्वार...
सतगुरू तो रोज बुलाए, तू क्यों आए न, रे ज्ञान...

• • • • •